RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2017-2019
Despatch Date - 02 August 2019

▸▸ अंक-2 (मासिक) ▸▸ वर्ष - 15 ▸▸ अगस्त 2019 ▸▸ मूल्य 20/-

अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

आज संवारें, कल बचाएँ

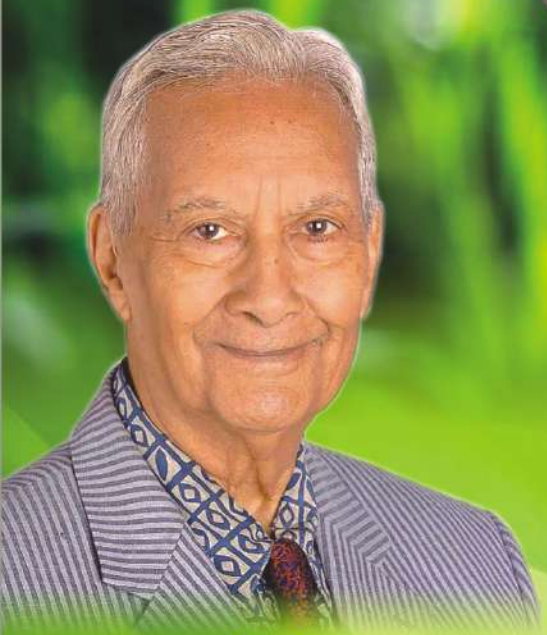

स्मृति शेष :
बिड़ला घराने के पितामह
बी.के.बाबू

समिधा
"एक शक्ति यज्ञ"
उज्जवल भविष्य के लिए

महिला संगठन ने
शक्ति यज्ञ में दी 'समिधा'

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-2 अगस्त 2019 वर्ष-15

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

अतिथि सम्पादक
मधु ललित बाहेती, कोटा

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300
Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

महाभारत में पर्यावरण

महाभारत में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए न केवल पंच महाभूतों की पवित्रता कायम रखने के निर्देश हैं बल्कि धरती के पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण को भी महत्वपूर्ण बताया गया है।

रामायण में अरण्यकांड की तरह महाभारत में एक पूरा वन पर्व ही रखा गया है। जो वन संस्कृति का परिचायक है। महाकाव्य में कदलीवन, काम्यकवन, द्वैतवन, खाण्डववन जैसे अनेक वनों के नाम हैं और अनेक महत्वपूर्ण प्रसंग वन अंचल में ही घटित हुए हैं। वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, त्वक्सार तथा तृण के रूप में स्थावर भूत वृक्षों की छह जातियों का भी वर्णन है।

इनमें ऋषि-मुनियों के तपस्थल और आवास हैं। अतः ये वन शांत, सुंदर तथा प्रकृति के धन से मालामाल और निहाल हैं। अनेक राजा भी अपने गृहस्थाश्रम के कर्तव्यों से मुक्त होकर यथासमय वानप्रस्थी होकर वन की ओर उन्मुख होना अपना धर्म समझते हैं। कथा में देवापि से लेकर धृतराष्ट्र तक के वन गमन की कथाएं इसकी प्रमाण हैं। इसी कारण महाकाव्य की रचना के सिद्धांतों के अनुरूप महर्षि वेदव्यास ने अनेक स्थानों पर वन की शोभा के नयनाभिराम चित्रण किए हैं।

ये सारे वर्णन पर्यावरण के प्रति चेतना और जागरूकता के ही प्रतीक हैं। इसलिए कि महाभारतकार एक वृक्ष तक को अपने पुत्र के समान मानते हैं। यही कारण है कि जीवन में अनुशासन का पाठ पढ़ाने वाले महाभारत के सबसे कीमती पर्व अनुशासन पर्व में जगह-जगह वृक्ष के रोपण और पौधों की दान और उनकी वृद्धि के लिए जलाशयों के निर्माण को सर्वोत्तम दान निरूपित किया गया है।

महाभारत कहता है-

पुष्पिताः फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान्।
वृक्षदं पुत्रवद् वृक्षास्तारयन्ति परत्र तु।।

अर्थात फूले-फले वृक्ष इस जगत में मनुष्यों को तृप्त करते हैं। जो वृक्ष का दान करता है, उसे ये वृक्ष पुत्र की भांति परलोक में भी तार देते हैं।

और सबसे बड़ी बात यह कि पेड़ों से भरे वन तभी संभव है जब धरती पर भरपूर जल हो। इसीलिए महाभारत में जलाशयों, प्याऊ आदि के निर्माण और जलदान को सर्वोत्तम दान कहा गया है।

- डॉ. विवेक चौरसिया, उज्जैन

सम्पादकीय

हर घर में आए 'बसंत'

यह अंक पर्यावरण को समर्पित है और दुःख की खबर यह भी कि बिड़ला घराने के पितामह श्रद्धेय बसंतकुमार बिड़ला अब सशरीर हमारे बीच नहीं रहे। अजीब लगता है कि मैं यह दो बात एक साथ, एक से जोड़कर क्यों कह रहा हूं? वह इसलिए कि स्व. बसंतकुमार बिड़ला का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था कि हर कोई चाहेगा, उनके घर भी बसंत आए। बस यहीं से वह पर्यावरणीय बसंत जो हमारे जीवन को प्रफुल्लित कर देता है और वह बसंत जो पीढ़ियों को दैदिप्यमान कर देता है, दोनों का संयोग हमारे जीवन से जुड़ जाता है। पहले हम प्रकृति के बसंत की बात करते हैं। इसकी शुरुआत ही बीज से होती है। बीज मिट्टी में आता है, तो अंकुरित होता है। उसे सही देखभाल मिल जाए तो पौधा और फिर पेड़ बन कर वह न केवल प्रकृति का शृंगार करता है बल्कि मानवीय जीवन का आधार बन जाता है। उसका यौवन ही बसंत का आगाज है। यदि हमें प्रकृति के बंसत की चाह है तो पौधों को पुष्पित -पल्लवित करने का माद्दा अपने भीतर पैदा करना होगा। बस यहीं से पर्यावरण संरक्षण की शुरुआत होती है। इसकी सामूहिक सफलता यदि देखना हो तो उज्जैन की पुण्य सलिला शिप्रा के किनारे आना होगा। यहां समाज, प्रशासन और पर्यावरण मित्रों ने मिलकर किनारों पर सवा लाख पौधे रोपकर उनकी सुरक्षा और परवरिश में भागीदारी कर चमत्कार कर दिखाया है। आज शिप्रा के सूखे किनारों पर हरियाली महोत्सव मना रही है। माहेश्वरी समाज भी अपने शहरों में कोई ऐसा निर्जन स्थान चुने और उसे हरियाली से शृंगारित करने का संकल्प ले तो वहां जो बसंत खिलेगा, वह समाज के उस हर मन को आनंदित करेगा, जिसने भागीदारी निभाई है। पर्यावरण पर आधारित इस अंक में आप इस मुद्दे से जुड़ी पठनीय और ज्ञानवर्द्धक सामग्री पाएंगे।

दूसरी ओर उद्योगपति श्री बसंतकुमार बिड़ला का शारीरिक अवसान भौतिक जगत के लिए जरूर क्षति है। लेकिन वे अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के रूप में सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेंगे। उन्होंने अपने जीवन में 'स्वनाम-धन्य' को चरितार्थ किया। उन्होंने नाम को सार्थक करते हुए मेहनत और लगन को आधार बना कर 'स्वजीवन' ही नहीं अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बसंत जैसा उल्लास स्थायी बनाने की प्रेरणा दी है। बिड़ला जी के व्यक्तित्व और कृतित्त्व से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस अंक में हमने उनके व्यक्तित्व को सहेजने की कोशिश भर की है। यदि हमें अपने घर में ऐसा 'बसंत' चाहिए तो निश्चित तौर से अपनी नई पीढ़ी में ऐसे संस्कारों का बीजारोपण करना होगा, उन्हें अंकुरित होने से लेकर पेड़ बनाने तक की जिम्मेदारी निभानी होगी। स्व. बिड़ला साहब को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

इसी कड़ी में पद्मश्री बंशीलाल राठी हमारे ऐसे प्रेरणा स्त्रोत हैं, जो जीवन के ८६ बसंत पूरे कर आज भी बड़ी शिद्दत और ताकत से समाज की सेवा में जुटे हैं। समाज को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित कराने में खास भूमिका निभाने वाले राठी साहब को जन्मदिन पर श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार भी शुभकामनाएं देकर उनकी लंबी उम्र की प्रार्थना करता है।

बसंत यानी उल्लास के वह पल जो सफलता का उत्कर्ष हैं। ऐसा ही बसंत महिलाओं और युवाओं के जीवन में आए इसके लिए महिला संगठन ने दिल्ली में 'समिधा' के माध्यम से प्रयास किया है। नए स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए यह आयोजन सराहनीय रहा। यह अंक आपके हाथों में है। युवा वर्ग को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उनकी रुचि अनुरूप व भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे कार्यक्रमों का आयोजन हुआ वह भी सराहनीय है। निश्चित रूप से आप हमें बताएंगे कि हम आपकी अपक्षाओं पर कितने खरे उतरे। जय महेश

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

कोटा निवासी श्रीमती मधु-ललित बाहेती माहेश्वरी समाज में समाजसेवा के क्षेत्र में एक अत्यंत समर्पित व जाना माना नाम हैं। श्रीमती बाहेती का जन्म 14 अक्टूबर 1958 को सिरपुर कागजनगर (आ.प्र.) में चीफ इलेक्ट्रिकल इंजीनियर स्व. श्री सी.एम. तोतला के यहाँ हुआ था। आपने वर्ष 1978 में एम.ए. इतिहास की परीक्षा मैरिट में स्थान के साथ उत्तीर्ण की। फिर इसी वर्ष 1 दिसम्बर 1978 को कोटा के व्यवसायी ललित बाहेती के साथ परिणय सूत्र में बंध गई। आपके परिवार में यूएसए के एचएसबीसी बैंक में सीनियर वाईस प्रेसीडेंट एम.बी.ए. पुत्र मनीष तथा गुड़गांव में असिस्टेंट मैनेजर सीए पुत्री ईशा बाहेती शामिल हैं। पुत्र-पुत्री के जन्म व उनके लालन-पालन की समस्त जिम्मेदारी वहन करते हुए आपने वर्ष 1993 में डीसीए (डिप्लोमा इन कम्प्यूटर अवैयरनेस) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। श्रीमती बाहेती 30 वर्षों से महिला संगठन से सम्बद्ध हैं। इसमें स्थानीय महिला संगठन अध्यक्ष रहीं और अब परामर्शदाता हैं। अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन से भी कार्य समिति सदस्य के रूप में सम्बद्ध हैं। स्वयंसेवी संस्था इनर व्हील क्लब की दो बार वर्ष 2006 तथा 2018 में अध्यक्ष रहीं एवं क्रमशः 'डायमंड प्रेसिडेंट' व 'स्टार प्रेसिडेंट' खिताब से सम्मानित हुईं। इन्हीं दो वर्षों में राज्य सरकार द्वारा भी आपको स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दो बार सम्मानित किया गया। वर्ष 2019 में संस्था वर्ल्ड पीएचडी द्वारा 8 मार्च को ''वुमन ऑफ डिग्निटी इंटरनेशनल अवार्ड'' तथा 11 जून को आईएमसीसी द्वारा 'वुमन ऑफ अर्थ' अवॉर्ड से सम्मानित की गई। साहित्य के क्षेत्र में लेखन व पठन तथा गायन में विशेष रुचि रही। महिला संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों की आपने एंकरिंग भी की। क्लब की पत्रिका 'सोवेनियर' की आप सम्पादक भी रही।वर्तमान में आप आकाशवाणी कोटा में वार्ताकार हैं एवं माहेश्वरी समाज की पत्रिका 'संवाद' का संपादन कर रही है।

महिलाएं करें पर्यावरण सुरक्षा की पहल

विज्ञान की उन्नति के साथ ही हम कह सकते हैं कि हमारा जीवन आसान व सुखी हो गया। लेकिन हकीकत देखें तो हम भयानक प्राकृतिक आपदा के मुहाने पर आ पहुंचे हैं। कारण है, वैज्ञानिक उन्नति के साथ पर्यावरण के साथ खिलवाड़। हमने हरे-भरे वनों को तहस-नहस कर सीमेंट कांक्रीट के जंगल खड़े कर लिये। आवागमन के लिये पहाड़ों में छेद कर कई सुरंगें बना डाली, जिसका नतीजा कुछ वर्ष पूर्व केदारनाथ में आयी भारी विपदा के रूप में सामने आया था। वैसे ही हमने धरती माता की छाती को पानी के लिये इतना छलनी किया कि भूगर्भ का जल रसातल में जा पहुंचा। जिस देश में पग-पग पानी था, वहाँ आज वर्षा विपदा बन चुकी है। कहीं सुखा पड़ा रहता है तो कहीं भारी वर्षा अपना तांडव मचाती है।

यदि हम समय पर नहीं जागे तो पर्यावरण के साथ हमारा यह खिलवाड़ सम्पूर्ण सृष्टि के नष्ट होने का कारण बन सकता है। वैसे तो विकास में प्रकृति के साथ होने वाले खिलवाड़ पर लगाम कसनी होगी लेकिन तत्काल हर व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले दो उपाय अवश्य हैं और वे हैं, पौधा रोपण तथा जल संरक्षण। पौधारोपण भी कई संस्थाऐं करती हैं, लेकिन रोपे गये पौधों में से कितने वृक्ष बन पाते हैं, ये किसी से छुपा नहीं है। जब तक हम रोपे गये पौधे की संपूर्ण देखरेख की जिम्मेदारी नहीं लेंगे कुछ नहीं होने वाला। यही स्थिति जल संरक्षण में है। जल की लगातार कमी होती जा रही है, लेकिन हम उसे संरक्षित करने की जगह उपलब्ध होने पर अनावश्यक रूप से बहा देते हैं।

सभी के प्रयास इन मामलों में अभी तक तो असफल हो चुके हैं। मेरे विचार में ऐसी स्थिति में महिलाओं को आगे आना होगा। महिला सर्जक और पोषक है, इसलिए प्रकृति को समझने की उसमें आंतरिक समझ है जो उसके दैनिक संकल्पों में भी दिखाई देती है जो तुलसी को जल चढ़ाएं बिना स्वयं जल नहीं पीती, जो बड़-पीपल के साथ अपने जीवन की आशाओं और संकल्पों को जोड़ देती है, गंगा को मां का स्थान देकर पूजती है, सूर्य को जल चढ़ाती है और चंद्रमा की आरती उतारती है। इन सबका मतलब है, प्रकृति को भगवान के समान ऊँचे स्थान पर स्थापित करना और यही भाव आज के पर्यावरण, प्रकृति के संरक्षण को हमारा कर्तव्य ही नहीं, धर्म बना देता है। पृथ्वी को वसुंधरा कहा गया है, यहीं पर प्राणियों और पौधों के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध है। आधुनिक विकास और अंधाधुंध औद्योगिकरण से पर्यावरण दूषित हो गया है, जिससे मानव और प्रकृति के बीच का संबंध बिगड़ गया है। विश्व की हर संस्कृति में महिला को प्रकृति की स्वाभाविक संरक्षक माना गया है। अतः सूर्य को जल चढ़ाने वाली और चंद्रमा की आरती उतारने वाली महिला से ही आशा है कि वह पर्यावरण सुरक्षा की पहल करे। याद रखें अब बिना किसी लालच के प्रदूषित पर्यावरण की क्षति पूर्ति करना हमारा सबसे बड़ा आध्यात्मिक कार्य, भक्ति और धर्म है।

''हरियाली मिट गई अगर तो खुशहाली मिट जाएगी।
घर-घर पर बीमारी बन कर बदहाली छा जाएगी।।
प्राण वायु का संकट होगा, जल जहरीला हो जायेगा,
बोलो तब धरती पर जीवन कैसे संभव हो पायेगा?

***मधु बाहेती** (कोटा)*
अतिथि सम्पादक

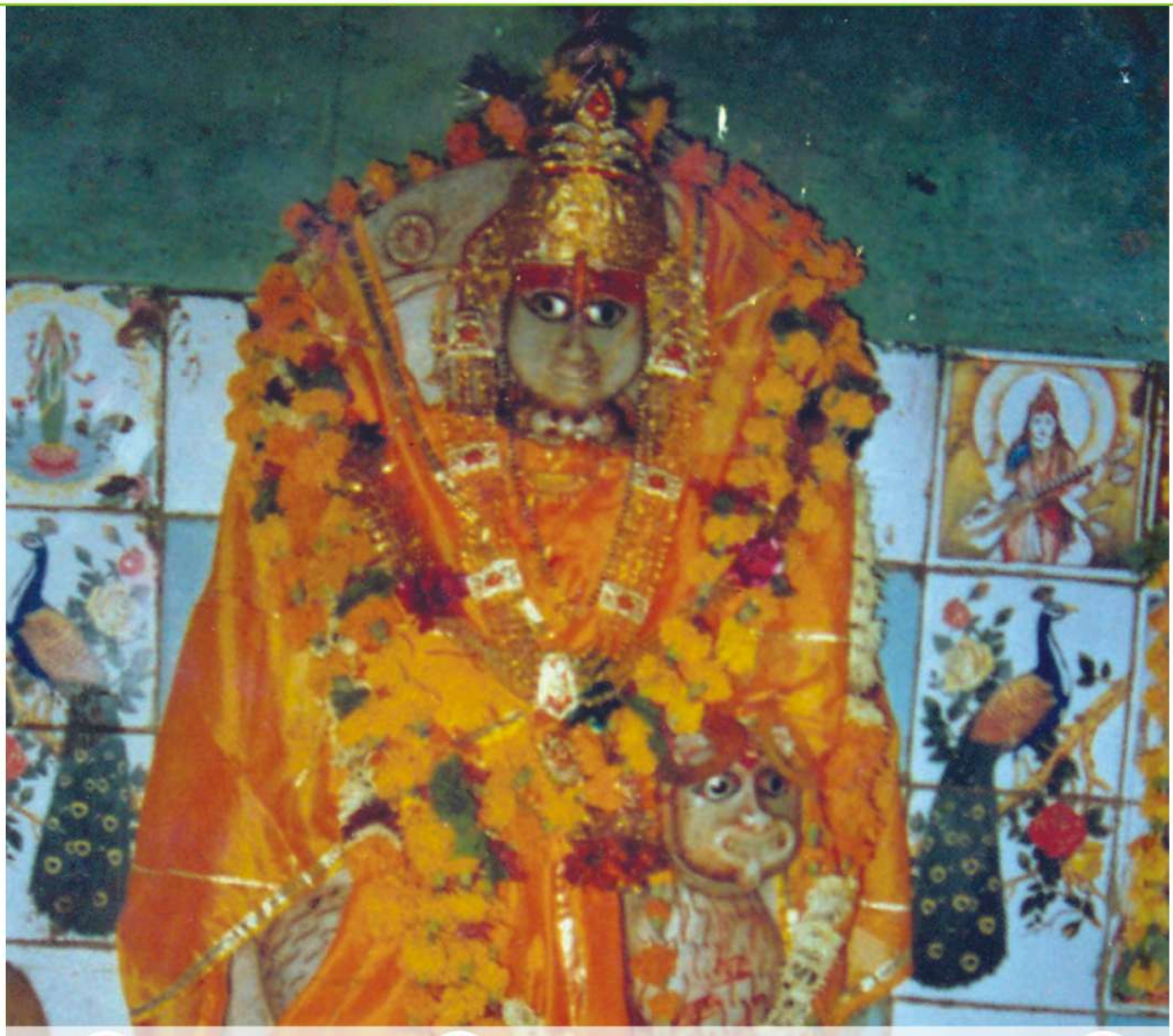

श्री ब्रह्माणी मुन्दल माताजी

टीम SMT

ब्रह्माणी मुन्दल माताजी, माहेश्वरी जाति की मूंदड़ा खांप की कुलदेवी हैं। अपने विशिष्ट चमत्कारों के कारण क्षेत्र में प्रसिद्ध तो हैं ही साथ ही जाट समाज भी कुलदेवी के रूप में पूजता है।

माताजी का प्राचीन मंदिर राजस्थान के नागौर जिले के ग्राम मुंदियाड़ में स्थित है। लाल वस्त्र धारण करने वाली स्वर्ण सिंहासन पर विराजित माताजी का यह मोहनी रूप है। यहाँ नारीयल, मेवा, लापसी, चाँवल तथा चूरमें का भोग लगता है। ऐसी मान्यता है कि भक्तिभाव पूर्वक पूजा करने से माताजी इच्छित फल प्रदान करती है। पूजन नियमित रूप से सुबह-शाम होती है। इस स्थल पर एक प्राचीन तालाब है, वहाँ लगे शिलालेख के अनुसार यह 6500 वर्ष पुराना है।

विशेष आयोजन- भादवा सुदी अष्टमी- कीर्तन व जागरण
भादवा सुदी नवमी- महाप्रसादी व गजानन्दजी का भव्य मेला

कैसे पहुँचें- श्री ब्रह्माणी मुन्दल माताजी मंदिर नागौर से 25 कि.मी. दूर मुंदियाड ग्राम में स्थित है। जोधपुर-नागौर मार्ग पर नागौर से 8 कि.मी. पूर्व चिमरानी गाँव से पारासरा व बलायागाँव होते हुए सड़क मार्ग है। इसी मार्ग पर नागौर से 25 कि.मी. पूर्व भाखरोद गाँव से भी सिलगाँव होते हुए मार्ग है। नागौर से समय-समय पर बस उपलब्ध। किराये की जीप भी यहाँ से उपलब्ध हो जाती हैं।

कहाँ ठहरें - समीप गणेश मंदिर है। इस मंदिर में यात्रियों के ठहरने के लिये 6 कमरों की निःशुल्क व्यवस्था है।

महिला संगठन ने 'शक्ति यज्ञ' में दी 'समिधा'

दिल्ली प्रदेश के संयोजन में आयोजित हुई अभा माहेश्वरी महिला संगठन की त्रिदिवसीय बैठक व यूथ फेस्टिवल

नईदिल्ली. अभा माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गत 26 से 28 जुलाई तक नईदिल्ली में अपनी तृतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक एवं यूथ फेस्टिवल 'समिधा' का आयोजन किया गया। 'युवा शक्ति का आह्वान-करें राष्ट्र का नवनिर्माण' की थीम पर इसका आयोजन दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के संयोजन में तेरापंथ भवन, छतरपुर नईदिल्ली में हुआ। संगठन का आगामी कार्यक्रम 'संगम' सोमनाथ में आयोजित होगा।

समारोह का शुभारंभ गत 26 जुलाई को शाम 5 बजे दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में प्रधान अतिथि के रूप में महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी, अभा माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी, भीलवाड़ा (राजस्थान) के सांसद सुभाष बहेड़िया तथा भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू, विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक किरण माहेश्वरी तथा महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक सोमानी उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ख्यात उद्योगपति गोपाल तापड़िया तथा सम्माननीय अतिथि के रूप में महिला संगठन की राष्ट्रीय महामंत्री आशा माहेश्वरी, पूर्व अध्यक्ष सुशीला काबरा, महिला संगठन की राष्ट्रीय प्रभारी प्रमुख शोभा सादानी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कांता गगरानी तथा सहसचिव शर्मिला राठी उपस्थित थीं। स्वागत अध्यक्ष अभामा महासभा के पूर्व सहमंत्री राजकुमार टावरी थे। कार्यक्रम की व्यवस्था दिल्ली प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष किरण लढ़ा तथा महामंत्री श्यामा भांगड़िया के नेतृत्व में प्रदेश टीम ने संभाली। अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला आमंत्रित थे, लेकिन वे किसी व्यस्तता के कारण उपस्थित नहीं हो सके।

समाज तब समर्थ व शक्तिशाली होगा, जब उसकी युवा शक्ति समर्थ व संस्कारवान हो। इसी लक्ष्य में अभा माहेश्वरी महिला संगठन ने युवाओं के सर्वांगीण विकास के शक्ति यज्ञ में इस आयोजन के माध्यम से 'समिधा' दी। यदि इसने उन्हें उनकी रुचि के साथ संस्कारों का पाठ पढ़ाया तो प्रथम बार अपने ही प्रयासों से नवयुवतियों के स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर उनके विकास में 'समिधा' देने की भी नई शुरुआत भी की गई।

नृत्य व गीत-संगीत से शुरुआत

शुभारंभ के पश्चात पांचों अंचलों द्वारा संदेश गान की रंगारंग प्रस्तुति दी गई। इसके पश्चात मेजबान दिल्ली प्रदेश द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। दिल्ली प्रदेश की ओर से अतिथियों का स्वागत किया गया। उपस्थित अतिथिगणों ने अपने मार्गदर्शन उद्बोधन दिए। रात 8 बजे नृत्य प्रतियोगिता नुपूर की झंकार का आयोजन हुआ। इसमें विभिन्न अंचलों द्वारा विभिन्न विधाओं में अपने नृत्य की प्रस्तुति दी गई। इसमें प्रथम पश्चिमांचल, द्वितीय उत्तरांचल तथा तृतीय मध्यांचल रहा। प्रतियोगिता संयोजक सुकीर्ति समिति प्रभारी सोनाली मूंदड़ा थीं।

प्रथम सत्र में निम्बार्काचार्य के आशीवर्चन

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का आयोजन इसी दिन प्रातः 9.30 बजे प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। शुभारंभ एवं मंगलाचरण जगतगुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्याम शरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा किया गया। आशीर्वचन में आपने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न नारी ही सर्वगुण संपन्न है। आने वाली पीढ़ी को नारी का सम्मान करना सिखाएं तो विवाह विच्छेद व बलात्कार जैसी घटनाएं नहीं होंगी। इस अवसर पर पद्मश्री रामेश्वरलाल काबरा एवं मां रतनीदेवी काबरा का अभिनंदन किया गया। सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित साहित्यकार, कवि, शिक्षाविद् रामनिवास जाजू, राजकुमार करवा व राजेंद्र सोनी ने भी विचार रखे। शाम के सत्र में 'सर्जन-सीड कैपिटल पिचिंग का उद्घाटन किया गया। इसमें स्वावलंबी महिलाओं की प्रोजेक्ट रिपोर्ट देखकर मार्गदर्शन व ऋण सुविधा दी जाएगी। इसी अवसर पर विषय पंचतत्त्व पर प्रतियोगिता 'वॉल आर्ट' का आयोजन तथा स्मारिका प्रतिबिंब का विमोचन भी हुआ। इस स्मारिका की मुख्य संपादक सरोज दम्मानी तथा सहसंपादक वंदना माहेश्वरी, स्वाति मूंदड़ा एवं प्रभा जाजू हैं।

स्टार्टअप को प्रोत्साहन की शुरुआत

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन ने अपने इस आयोजन के माध्यम से समाज की नवयुवतियों के "स्टार्टअप" को सहयोग देने की नई शुरुआत की गई। संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती गगडानी ने बताया कि संगठन इसकी लगभग 2 माह से तैयारी कर रहा था। इसके लिये संगठन ने अपने स्तर पर ही प्रयास कर 9 लाख रुपये की राशि एकत्र की और स्टार्टअप प्रोजेक्ट आमंत्रित किये गये। इसमें कुल 12 प्रोजेक्ट आये। इनमें से 6 का इस आयोजन में प्रस्तुति के लिये चयन हुआ। इनका चयन फाईव पैसा डॉट कॉम के सीईओ प्रकाश गगरानी, गैलेक्सी इम्पेक्ट के डायरेक्टर अंकित डागा, स्टार्टअप डायरेक्टर गिरिश सोडानी तथा फायनेंस कम्पनी के डायरेक्टर अनिरुद्ध दम्मानी की 4 सदस्यीय चयन समिति ने किया। प्रथम दिवस को ही मंच पर इन चयनित स्टार्टअप की प्रस्तुति हुई। इनमें से 4 का सहयोग हेतु चयन हुआ। यहां चयन समिति में प्रकर्ष गगरानी किन्हीं कारणवश उपस्थित नहीं हो सके। इस अवसर पर प्रातः 10 से 6 बजे तक इन चयनितों को स्टार्टअप प्रारंभ करने के लिये मार्गदर्शन दिया गया। निर्णायकों द्वारा ही स्टार्टअप की सहयोग राशि का इनमें आवश्यकतानुसार वितरण किया गया। श्रीमती गगडानी ने बताया कि यह तो शुरुआत है, कई आर्थिक सहयोगी इस योजना से जुड़ रहे हैं और संगठन द्वारा स्टार्टअप को सतत सहयोग दिया जायेगा।

फन स्ट्रीट से अगले दिन की शुरुआत

अगले दिन की 27 जुलाई को कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 7 से 9 बजे तक स्टेपल वेंचर के गिरीश सोढ़ानी के सहयोग से आयोजित फन स्ट्रीट से हुई। इसमें महिलाओं ने भूले बिसरे खेलों का आनंद लिया। कार्यक्रम का प्रथम सत्र प्रातः 10 बजे से प्रारंभ हुआ और इसका समापन 1 बजे हुआ। प्रधान अतिथि के रूप में वि.आ.रा. कार्यसमिति सदस्य गीता तोतला तथा समाजसेविका साधना सोमानी एवं सम्मानीय अतिथि के रूप में महिला संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूंदड़ा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरला काबरा तथा राष्ट्रीय सहसचिव मंजू कोठारी उपस्थित थीं। इसमें प्रातः 10 से 11 बजे तक महिला ट्रस्ट की बैठक का आयोजन हुआ। इसके पश्चात प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक व विभिन्न प्रदेशों की रिपोर्टिंग का आयोजन हुआ। प्रातः 11 से 2 बजे तक युवतियों को निखारने के लिए वर्कशॉप का आयोजन हुआ। इसमें वेलनेस कोच अंजलि कोठारी, इमेज कंसल्टेंट सुश्री समीर गुप्ता, डायटिशियन डॉ. तपस्या मूंदड़ा तथा मनोविशेषज्ञ डॉ. तुलिका तलवार ने मार्गदर्शन दिया।

संस्कृति को समर्पित द्वितीय व तृतीय सत्र

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में दोपहर 3 से 5 बजे तक नाट्य स्पर्धा कही-अनकही का आयोजन हुआ। इसमें मुंशी प्रेमचंद के ''जिंदगी एक नाटक'' तथा रवींद्रनाथ टैगोर के 4 नाटकों आदि प्रसिद्ध नाटकों का मंचन हुआ। प्रथम दक्षिणांचल, द्वितीय मध्यांचल व तृतीय उत्तरांचल रहा। प्रधान अतिथि वि.आ.रा. कार्यसमिति सदस्य लता मोहता तथा सम्मानीय अतिथि रा. उपाध्यक्ष महिला संगठन शैला कलंत्री व राष्ट्रीय सहसचिव मंगल मर्दा थीं। कार्यक्रम के तृतीय सत्र में केंद्र की महिला बाल विकास व वस्त्र मंत्री स्मृति ईरानी अतिविशिष्ठ अतिथि थीं। प्रधान अतिथि राष्ट्रीय समिति संयोजिका प्रमिला चोला व दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष आशा रांदड़ तथा सम्मानीय अतिथि महिला संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विमला साबू, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ज्योति राठी व राष्ट्रीय सहसचिव प्रकाश मूंदड़ा थीं। इसमें राष्ट्रीय समिति प्रभारी गिरीजा सारडा के संयोजन में सायं 7 बजे से सुश्रीता नारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का आयोजन 10 राउंड में हुआ।

पुरस्कार वितरण के साथ समापन

अंतिम दिवस 28 जुलाई को सुकीर्ति समिति के संयोजन में प्रातः 7 से 8 बजे तक डॉ. गोविंद के मार्गदर्शन में बालीबुड व कत्थक योगा का आयोजन हुआ। समापन पर युवा पीढ़ी को अपने लोक संगीत में रुचि जागृत करने हेतु सभी अंचलों की टीमों द्वारा लोक संगीत गायन जैसे महाराष्ट्र की लवणी, उत्तर भारत की कजरी, पश्चिम बंगाल का रवींद्र संगीत, राजस्थान के कल्याण धनी, डिग्गीपुरी का राजा आदि की प्रस्तुति दी गई। दूसरे राउंड में बॉलीबुड के गोल्डन युग की सुप्रसिद्ध गायिकाओं के गीतों का फ्यूजन प्रस्तुत किया गया। इसमें प्रथम स्थान पूर्वांचल, द्वितीय पश्चिमांचल व तृतीय मध्यांचल रहे। इसके पश्चात प्रातः 8 से 9 बजे तक त्वरित बुद्धि की प्रतियोगिता ट्रेजर हंट आयोजित हुई। इसमें प्रथम दक्षिणांचल व द्वितीय पश्चिमांचल रहा। इस आयोजन का समापन सत्र इसी दिन प्रातः 10 बजे हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व सांसद मनोज तिवारी उपस्थित थे। विशेष सहयोगी एवं मुख्य अतिथि के रूप में अभा माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष राजकुमार काल्या व महामंत्री प्रवीण सोमानी उपस्थित थे। सम्मानीय अतिथि महिला संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोरमा लड्ढा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ममता मोदानी व सहसचिव फूलकंवर मूंदड़ा थीं। इस अवसर पर महिलाओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रातः 10.30 से दोपहर 12.30 बजे तक गायन स्पर्धा (सुर और साज) का आयोजन हुआ। दोपहर 1 बजे से आयोजित समापन समारोह में विभिन्न स्पर्धाओं के पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस आयोजन के विशेष सहयोगी अशोक झंवर, नंदकिशोर बाहेती, राजकुमार करवा, गोविंद मूंदड़ा तथा रमेश लड्ढा थे।

समितियों ने संभाली व्यवस्था

इस आयोजन की व्यवस्थाओं के लिए विभिन्न समितियां गठित की गई थीं, जिन्होंने अपनी जिम्मेदारी बखूबी संभाली। इसमें यातायात व्यवस्था श्याम चांडक, नवीन सारड़ा, वित्त समिति व्यवस्था में राधा चांडक, आशा रांदड़, ममता बागड़ी, रजिस्ट्रेशन व्यवस्था-दक्षिणी क्षेत्र वीणा काबरा,

गरिमा जाजू, दीपा मूंदड़ा, निकिता जाजू, आवास व्यवस्था पूर्वी क्षेत्र में वंदना समदानी, रीटा सोनी, नीरू लाहोटी, ममता बागड़ी, भोजन व्यवस्था उत्तरी क्षेत्र व द्वारका क्षेत्र में राधा दम्मानी, सुमन राठी, उर्मिला होलानी, मीनू कोकटा, ममता सारड़ा, शोभा मंत्री, प्रीति कल्याणी, प्रतिभा तोषनीवाल, सभागार व्यवस्था उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र अंजू बियानी, रेखा कालानी, वीना करनानी, आरती तापड़िया, संतोष फलोड़, मंच व्यवस्था पश्चिमी क्षेत्र में सरोज दम्मानी, संगीता कासट, लक्ष्मी बाहेती, संतोष तोषनीवाल, विद्या काबरा, आराधना लाहोटी, सांस्कृतिक समिति मधु मूंदड़ा, राजश्री मोहता, पंकज लोहिया, उर्वशी साबू, इंदू लड्ढा, सुनीता लड्ढा, सुधा करनानी, स्टॉल मेला व्यवस्था-नोएडा क्षेत्र में सरिता सोनी, संगीता चांडक, संगीता तोतला, प्रभा राठी आदि को जिम्मेदारी दी गई।

दिल्ली प्रदेश ने की सफल मेजबानी

इस कार्यक्रम के आयोजन की जिम्मेदारी दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने अध्यक्ष किरण लढ़ा, महामंत्री श्यामा भांगड़िया तथा कोषाध्यक्ष राधा चांडक के नेतृत्व में ली थी। कार्यक्रम संरक्षक प्रतिभा जाजू थीं। संरक्षक मंडल में राष्ट्रीय सहसचिव उत्तरांचल शर्मिला राठी, संस्थापक अध्यक्ष विनीता बियानी तथा राष्ट्रीय प्रभारी सुलेखा समिति मंजू मानधना शामिल थीं। संगठन की परामर्श समिति सदस्याओं सहित संगठन मंत्री - सुनीता मूंदड़ा, समस्त उपाध्यक्ष- आशा रांदड़, कविता समदानी, पुनम तोषनीवाल, सुधा डागा, सहसचिव- इन्दु लड्ढा, वीणा काबरा, अंजू सोमानी, सुनीता झंवर, प्रचार-प्रसार मंत्री - उमा सोनी, प्रकल्प प्रमुख - राजश्री मोहता, सांस्कृतिक मंत्री- मधु मूंदड़ा एवं विभिन्न समितियों की प्रभारी व समस्त क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने कार्यकर्ताओं के साथ इस आयोजन में समर्पित भाव से योगदान देकर इसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया।

ये रहे विशेष सहयोगी

समाज के सहयोगी बंधुओं के बिना कार्यक्रम सफलता के सोपान नहीं चढ़ता। इस कार्यक्रम की सफलता में राधाकिशन सोमानी, रामचंद्र राठी, अशोक झंवर, नंदकिशोर बाहेती, राजकुमार करवा, गोविंद मूंधड़ा, प्रदीप करनानी, कमल लखोटिया, किशोर बाहेती, रमेश लड्ढा, राधेश्याम भांगड़िया, हेमराज जागेटिया, किशोर बाहेती, शंकर मूंधड़ा, सोहनलाल चांडक, मदन मूथा, कमल नयन मालू, शैलेश, मयंक, महेंद्र लढ़ा, राम राठी, ओम तापड़िया, नवीन सारडा, श्याम चांडक, आनंद जाजू, कैलाश सारडा, घनश्याम सोनी, सुनील कोगटा, रमेश दम्मानी, भगवती मंत्री, विजय सोनी, नटवर बजाज, राजेश लड्ढा, अशोक करनानी आदि का विशेष सहयोग रहा।

एक शक्ति यज्ञ था 'समिधा'-गगडानी

महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी ने इस आयोजन के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समिधा एक शक्ति यज्ञ सुश्रीता नारी निर्माण में एक विशिष्ट आहुति है। सभी अंचलों से आई 200 से अधिक नारियों को वर्कशॉप आयोजित कर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सर्वगुण संपन्न बनाना इस यज्ञ का मूल उद्देश्य है। संस्कृति के संक्रमण काल में युवाओं को आधुनिकता के साथ-साथ परंपराओं, प्रथाओं एवं अपनी संस्कृति से परिचित कराना इस शक्ति यज्ञ का मुख्य अनुष्ठान है। जब हम आकर्षक ढंग से आज की पीढ़ी के सामने अपनी महान परंपरा रखेंगे, तभी वह उसे समझ पाएगी। इसके माध्यम से हमने युवा वर्ग को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया। सर्वप्रथम बार स्टार्टअप को अपने ही कोष से सीड मनी का सहयोग देकर हमने युवाओं के आर्थिक विकास में योगदान की नई शुरुआत भी की है।

श्री माहेश्वरी टाईम्स के महेश नवमी विशेषांक का विमोचन

समाज के मेधावी विद्यार्थियों का किया सम्मान, पौधारोपण कर दिया हरियाली का संदेश

भीलवाड़ा. आजाद नगर स्थित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल में श्री माहेश्वरी टाईम्स के महेश नवमी विशेषांक का विमोचन किया गया। हरियाली का संदेश देते हुए स्कूल परिसर में अशोक के पौधे भी अतिथियों द्वारा लगाए गए। इस अवसर पर समाज के मेधावी विद्यार्थियों को माल्यार्पण कर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महासभा के उपसभापति देवकरण गग्गर, उद्योगपति आरएल नौलखा, महेश सेवा समिति अध्यक्ष राधेश्याम चेचानी, जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू, नगर सभा अध्यक्ष केदारमल जागेटिया, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष ममता मोदानी, महिला जिलाध्यक्ष अनिला अजमेरा मंचासीन थे। श्री गग्गर ने कहा कि श्री माहेश्वरी टाईम्स पत्रिका समाज की उच्च स्तरीय पत्रिका है। इससे समाज को सीख लेनी चाहिए, जिसने समाज के श्रेष्ठ मेधावियों को प्रोत्साहित कर सम्मानित किया है व देशभर के 400 से ज्यादा मेधावियों को आगे लाने का प्रयास किया है। इस पत्रिका की वजह से अन्य पत्रिकाओ ने अपनी क्वालिटी व पठनीय सामग्री में सुधार किया है। प्रमुख उद्योगपति आरएल नौलखा ने कहा कि समाज के युवा सभी क्षेत्र में पहचान बनाने के बाद प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में भी ज्यादा से ज्यादा भाग लें।

सभी मेधावियों का किया सम्मान

श्री माहेश्वरी टाईम्स के भीलवाड़ा प्रतिनिधि शंकर सोनी ने बताया कि मेधावियों पीएचडी, आईआईटी, सेकंडरी व सीनियर सेकंडरी में श्रेष्ठ परिणाम वालों को सम्मानित किया गया। सम्मानित प्रतिभाओं में उच्च शिक्षा हेतु पूनम माहेश्वरी, श्रुति मोदी, प्रतीक सोमानी, अक्षिता माहेश्वरी, अनीशा झंवर, शिवम समदानी, दिशांत माहेश्वरी, पल्लवी कचोलिया, तन्मय जागेटिया, ट्विंकल समदानी, काजोल तोतला, रूपम माहेश्वरी, सुरुचि माहेश्वरी, शुभम माहेश्वरी, प्रशांत जागेटिया, राघव कोगटा, सत्यम मुछाल, जतिन पोरवाल आदि, सीनियर सेकंडरी की प्रतिभाओं में आदित्य माहेश्वरी, श्रुति गग्गर, विभु आगीवाल, मानवी गंडोडिया, निमित्त पोरवाल, आयुष गट्टानी, मानसी माहेश्वरी, रियांशी माहेश्वरी, प्रियल अजमेरा, सक्षम सोनी, मिहिका हेड़ा आदि को व सेकंडरी बोर्ड की प्रतिभाओं में नंदिनी समदानी, अदिति लड्ढा, संजीव माहेश्वरी, अथर्व काष्ठ, तनुश्री लड्ढा, मानस माहेश्वरी, श्रुति मंडोवरा, केशव समदानी, पलक पोरवाल, जानवी डाड, राधिका दरगड, सावन कालिया, शुभी जागेटिया, अस्तित्व अजमेरा, मंथन काबरा, सुजल माहेश्वरी, यश अजमेरा, आंचल तोषनीवाल, ऋषि ईनाणी, ईधिका जागेटिया को अतिथियों ने सम्मानित किया।

ये थे कार्यक्रम में उपस्थित

महेश नवमी विशेषांक का अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। भीलवाड़ा के 18 दिवसीय महेश नवमी महोत्सव कार्यक्रमों का इसमें विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। कार्यक्रम का संचालन जगदीशप्रसाद कोगटा ने किया। देवेंद्र सोमानी, सुरेश कचोलिया, रमेश राठी, राजेंद्र कचोलिया, कैलाशचंद्र मूंदड़ा, सीमा कोगटा, ललिता राठी, संध्या आगीवाल, सुशील मरोठिया, महावीर समदानी, सत्यनारायण मूंदड़ा, फतेहलाल जैथलिया, शंभूप्रसाद काबरा, रामगोपाल राठी, संजय जागेटिया, प्रहलादराय लड्ढा, कैलाश दरगड़, रूपलाल लाहोटी, प्रमोद डाड, शिव मूंदड़ा, संजय गग्गर, शिवप्रसाद काबरा, सत्यनारायण काबरा, रामकिशन सोनी, सत्यनारायण सोमानी, महेश राठी, राजेंद्र पोरवाल, प्रह्लाद नुवाल, रामनारायण बिड़ला, रवि बाहेती सहित अनेक समाजजन मौजूद थे। कार्यक्रम के समापन पर श्री सोनी द्वारा अथितियों का, महेश सेवा समिति का, सहयोगकर्ताओं, प्रतिभाओं व विज्ञापनदाताओं का आभार प्रकट किया गया।

आरोपों के बीच समाज संगठन के चुनाव संपन्न

भीलवाड़ा. जिले के मंगरोप कस्बे में महेश नवमी 11 जून को समाजजनों ने मिलकर समाज के अध्यक्ष व कार्यकारिणी के साथ महिला संगठन का निर्विरोध चुनाव कराया। जिसमें निर्मल सोमानी अध्यक्ष, राजेंद्र डाड उपाध्यक्ष, सुंदरलाल सोमानी कोषाध्यक्ष, राघव सोमानी मंत्री, व्यवस्थापक कमलनयन सोमानी, तथा महिला मंडल की कार्यकारिणी में स्नेहलता देवी काबरा अध्यक्ष, सुमनदेवी सोमानी उपाध्यक्ष, प्रेमदेवी सोमानी कोषाध्यक्ष, शारदा देवी सोमानी मंत्री, उर्मिला देवी डाड को सचिव बनाया गया। अध्यक्ष भेरूलाल सोमानी ने आरोप लगाया कि उनकी जानकारी के बिना समाज के चुनाव करवाए गए जिसकी सूचना नहीं दी गई और न ही इस चुनाव में तहसील व जिले के प्रतिनिधि उपस्थित थे। समाज के सदस्यो की संख्या भी पूर्ण नही थी। बिना वोटर लिस्ट के हुए चुनाव जिसमें अध्यक्ष प्रत्याशी का नाम भी जिले की वोटर लिस्ट (इक्को सर्वे) में नही है। चुनाव को लेकर अध्यक्ष भेरुलाल सोमानी ने जिला सभा को भी लिखित में शिकायत दी है। साथ ही इस कार्यकारिणी में व्यवस्थापक बने कमलनयन सोमानी व उपाध्यक्ष राजेन्द्र डाड का कहना है कि 3 साल से अधिक होने के उपरांत भी समय पर चुनाव नहीं कराए गए।इसके लिए काफी बार उनको कहा गया।साथ ही तहसील अध्यक्ष को भी चुनाव करवाने के लिए कहा है तहसील अध्यक्ष ने कहा कि अपने स्तर पर चुनाव करवा लो। चुनाव की सूचना अध्यक्ष महोदय को दी गयी परंतु अपने पैर में तकलीफ होने का कारण बताकर मना कर दिया जबकि उसी दिन भीलवाड़ा रामेश्वरम में पूरी कार्यकारिणी के साथ महाप्रसाद में मौजूद थे। अपने कार्यकाल में अध्यक्ष की सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी नहीं होने व इनके भीलवाड़ा रहने से समाज का भी विकास नही हुआ। साथ ही हम सभी गाँव का अध्यक्ष व कार्यकारिणी चाहते थे।

ईको सर्वे में शामिल परिवार ही करेंगे मतदान

भीलवाड़ा. जिला माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में तहसील माहेश्वरी सभा भीलवाड़ा ग्रामीण द्वारा कारोई के माहेश्वरी भवन में आयोजित जिला सभा की कार्यसमिति व जिला कार्यकारी मंडल की बैठक जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। मंत्री देवेंद्र सोमानी ने बताया कि बैठक में मंचासीन अतिथि देवकरण गग्गड़, उपसभापति महासभा, एसएन मोदानी कार्यसमिति सदस्य महासभा, कैलाश कोठारी प्रदेशाध्यक्ष, ममता मोदानी उपसभापति अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन, राधेश्याम सोमानी पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं केंद्रीय चुनाव समिति सदस्य दीनदयाल मारू, जिलाध्यक्ष राधेश्याम चेचाणी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर बाबूलाल काबरा का भवन निर्माण में आर्थिक सहयोग, सुश्री आकांक्षा सोमानी का प्रथम बार में सीए उत्तीर्ण होने तथा रमेश बहेड़िया का आरएएस परीक्षा में चयन होने पर सम्मान किया गया। इस अवसर पर ईको सर्वे में शामिल परिवारों के नाम भी मतदाता सूची में शामिल करने का निर्णय लिया गया। जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू ने महासभा की विभिन्न योजनाओं को संगठन तक पहुंचाने की जानकारी दी। नगर अध्यक्ष राधेश्याम मालीवाल ने सभी का आभार प्रकट किया।

भवन की द्वितीय मंजिल लोकार्पित

भीलवाड़ा. अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामदयालजी महाराज की विशिष्ट उपस्थिति में संजय कॉलोनी माहेश्वरी समाज संस्थान के माहेश्वरी भवन की द्वितीय मंजिल का लोकार्पण किया गया। मंत्री कैलाशचंद्र मूंदड़ा ने बताया कि द्वितीय मंजिल के निर्माण में 83 लाख रुपए व्यय हुए हैं। पूरे भवन के निर्माण में 2.25 करोड़ रुपए की लागत आई है। साथ ही उन्होंने वर्षभर का प्रतिवेदन भी पढ़कर सुनाया। अध्यक्ष प्रहलादकुमार नुवाल ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में देवकरण गग्गड़, राजकुमार काल्या, कैलाशचंद्र कोटारी, दीनदयाल मारू, केदार जागेटिया, राधेश्याम चेचाणी, ओमप्रकाश नराणीवाल, लक्ष्मीनारायण डाड व शंभूलाल झंवर मौजूद थे। समारोह का संचालन बीएल माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज का आयोजन किया गया। इसी भवन के निर्माण में उद्योगपति रतनलाल नौलखा ने लिफ्ट में आर्थिक सहयोग किया। भवन में विभिन्न कमरों के निर्माण में आर्थिक सहयोग व देखरेख में शंभूलाल झंवर, राधेश्याम तोषनीवाल, मुकेश भराड़िया, सत्यनारायण लढ़ा, दिनेश मूंदड़ा, लादूलाल आगीवाल, गोविंद कालिया, अनिल बिड़ला, कैलाश मूंदड़ा आदि ने सहयोग दिया। सभी सहयोगियों का इस अवसर पर अभिनंदन किया गया।

युवा संगठन के चुनाव संपन्न

भीलवाड़ा. जिले के शाहपुरा कस्बे में माहेश्वरी युवा संगठन के चुनाव माहेश्वरी पंचायत भवन में चुनाव अधिकारी चांदमल मूंदड़ा की देखरेख में संपन्न हुए। चुनाव प्रभारी चांदमल मूंदड़ा ने बताया कि कुल 165 मतों में से 126 मत डाले गए। 4-4 मत निरस्त हुए। अध्यक्ष पद के लिए 122 मतों में से अंकित चेचाणी को 68, राकेश बिड़ला को 54 मत मिले। मंत्री पद के अमित तोषनीवाल को 78 तथा शोभित झंवर को 44 मत मिले। इस तरह चेचाणी 14 मतों से विजय होने पर अध्यक्ष चुने गए व तोषनीवाल 34 मतों से मंत्री चुने गए।

वैश्य महासम्मेलन की बैठक संपन्न

धार. मध्यप्रदेश वैश्य महासम्मेलन की 23वीं प्रदेश कार्यसमिति की बैठक 13 व 14 जुलाई को ग्वालियर में संपन्न हुई। इस बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष एवं पूर्व गृहमंत्री उमाशंकर गुप्ता थे। साथ ही धार संभाग प्रभारी व प्रदेश महामंत्री महेशचंद्र माहेश्वरी तथा प्रदेश उपाध्यक्ष अनंत अग्रवाल भी मंचासीन थे। धार संभाग की प्रगति रिपोर्ट श्री माहेश्वरी ने प्रस्तुत की व कई मुद्दों पर चर्चा हुई। प्रदेशाध्यक्ष ने धार संभाग के अलीराजपुर के ऐतिहासिक जिला सम्मेलन व रैली का भी अपने उद्बोधन में जिक्र किया व सभी पदाधिकारियों को सफल आयोजन की बधाई दी। धार जिला से महिला संगठन उपाध्यक्ष सुनीता माहेश्वरी भी शामिल हुईं।

विद्यार्थियों को भेंट की स्टेशनरी

नागदा. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा 25 निर्धन बच्चों को टिफिन, कम्पास एवं 5-5 कॉपियों का सेट प्रदान किया गया। अध्यक्ष प्रीति मालपानी, सचिव सीमा लड्ढा, सांस्कृतिक सचिव ऋषिता खटोड़, जिला सचिव हेमा मोहता, पूर्व अध्यक्ष सीमा मालपानी, चंद्रिका मोहता, सरिता मोहता, बबली मोहता, नीता राठी, रितूशा सोडानी, मनिता काबरा, शीला गट्टानी, पायल सराफ, प्रियंका राठी, रश्मि मालपानी, वंदना मोहता, चंदा बांगड़, सपना मालपानी, श्रुति मोहता, शीला मोहता आदि ने विशेष सहयोग किया। कार्यक्रम में ज्योति गगरानी, अंजू आगीवाल आदि विशेष रूप से मौजूद थीं। जानकारी प्रियेश मोहता ने दी।

विद्यार्थियों को स्टेशनरी का वितरण

मांडल (भीलवाड़ा). स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय मांडल में गरीब विद्यार्थियों को स्कूल ड्रेस, लंच बॉक्स व कॉपियां वितरित की गईं। मंत्री सुधा बिड़ला ने बताया कि इसमें अध्यक्ष आशा पटवारी के नेतृत्व में सभी सदस्याओं ने योगदान दिया।

जाजू ने किए गोडावण के लिए प्रयास

भीलवाड़ा. राजस्थान का राज्यपक्षी का दर्जा प्राप्त गोडावण की संख्या में इजाफा होने के संकेत मिले हैं। पिछले दिनों डेजर्ट नेशनल पार्क जैसलमेर में आबुधाबी व देहरादून के भारतीय वन्यजीव संस्थान के विशेषज्ञों की देखरेख में 6 अंडे मिलना व 2 चूजे प्राप्त होना लुप्त होती गोडावण प्रजाति की वंशवृद्धि के संकेत हैं। पीपुल फॉर एनीमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने आरोप लगाते हुए कहा कि वन्यजीव विभाग की घोर लापरवाही के चलते राज्यपक्षी गोडावण की संख्या 5000 से घटकर 50 से भी कम रह गई है। श्री जाजू ने यह भी कहा कि गोडावण की 100 से कम संख्या होने से उसके राज्यपक्षी का दर्जा छीन सकता है। श्री जाजू ने कहा कि उनकी मांग पर 2013 में गेहलोत सरकार ने प्रोजेक्ट गोडावण की तैयारी कर बजट भी आवंटित किया था, परंतु अधिकारियों की उदासीनता से कार्य आगे नहीं बढ़ा। गोडावण वन्यजीव संरक्षण कानून की प्रथम अनुसूची में शामिल है। गोडावण के शिकार पर 7 वर्ष की सजा व 5 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान है।

नवाल अध्यक्ष एवं आर्य मंत्री बने

ब्यावर. स्थानीय आर्य समाज की साधारण सभा गत दिनों आर्य समाज मंदिर में संपन्न हुई। इसमें वर्ष 2019-21 के लिए पदाधिकारियों के चुनाव अधिकारी डॉ. लालचंद हेड़ा की देखरेख में विधिवत संपन्न हुए। डॉ. हेड़ा ने बताया कि इसमें सर्वसम्मति से प्रधान ओमप्रकाश नवाल, मंत्री भूदेव आर्य तथा कोषाध्यक्ष पद पर बृजेश मालू को चुना गया। इसी प्रकार सर्वसम्मति से शेष पदों पर कार्यकारिणी पदाधिकारी चुने गए।

इन्दौर में होगा परिचय सम्मेलन का आयोजन अक्टूबर में

इंदौर। श्री महेश सामाजिक एवं पारमार्थिक संस्था इंदौर द्वारा 11-12-13 अक्टूबर 2019 को अखिल भारतीय माहेश्वरी विवाह योग्य युवक-युवती एवं विशिष्ट प्रत्याशियों का परिचय सम्मेलन दस्तुर गार्डन रिंगरोड इंदौर पर आयोजित किया जा रहा है। संस्था अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र राठी ने बताया कि सम्मेलन में महासभा के सभापति श्याम सोनी के साथ ही महासभा के कई गणमान्य सदस्य मार्गदर्शन के लिये सहभागिता करेंगे। उल्लेखनीय है कि संस्था के माध्यम से ही पिछले वर्ष 2018 में पहली बार दस्तूर गार्डन में तीन दिवसीय परिचय सम्मेलन आयोजित हुआ था। संस्था के परिचय सम्मेलन संयोजक रामस्वरूप धूत व प्रकाश अजमेरा ने बताया कि सम्मेलन पूर्णरूप से हाइटेक रहेगा व प्रत्याशी व माता-पिता (अभिभावक) को प्रथक आवास व्यवस्था के साथ तीन दिन का भोजन, नाश्ता व हाइ-टी रजिस्ट्रेशन में शामिल होंगे। रजिस्ट्रेशन शुल्क मात्र 1500/- रुपये व आवास शुल्क 1000/- (तीन दिन) का रखा गया है। परिचय सम्मेलन की सभी समितियाँ अपने कार्यों को मूर्तरूप दे रही हैं। प्रचार प्रभारी अजय सारड़ा ने बताया कि करीबन तीन टीम बाहर भ्रमण कर बायोडेटा एकत्रित करेंगी व पूरे भारत में फार्म मिलने के केंद्र बनाये गये हैं। फार्म ऑन लाईन भी उपलब्ध होंगे जिसे भरा जा सकता है। संस्था की वेब साइड www.shrimaheshsamajiksanstha.com पर भी फार्म लोड किया जा सकेगा। संस्थापक अध्यक्ष डॉ. रवींद्र राठी व संस्था अध्यक्ष गोपाल मानधन्या ने समाजजनों से इस अवसर का लाभ लेने की अपील की है।

पौधारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

गुना. स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा बजरंगगढ़ जाकर विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए। इसमें आम, जामुन, नीम के पौधे शामिल थे। तुलसी के कई पौधे गांव वालों में वितरित भी किए गए। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष नीलम लड्ढा, सचिव ममता भट्टर, पद्मा लाहोटी, श्यामा लाहोटी, प्रेमलता खवानी, रीता लड्ढा, उपमा राठी आदि मौजूद थीं।

पर्यावरण सुरक्षा मंत्र, धरती का ये सच्चा तंत्र।
पर्यावरण स्वच्छ बनाना, चारों तरफ पेड लगाना।

विकास परिषद ने मनाया स्थापना दिवस

ब्यावर. भारत विकास परिषद का 56वां स्थापना दिवस भाविप ब्यावर शाखा द्वारा हर्षोल्लास व सेवा के विभिन्न कार्य कर मनाया गया। सचिव प्रशांत पाबूवाल ने बताया कि सर्वप्रथम राजकीय अमृतकौर चिकित्सालय रक्त कोष विभाग में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। प्रकल्प प्रभारी नरेश मित्तल ने बताया कि डॉ. चंदवीर सिंह, संरक्षक लक्ष्मणदास गुरनामी व अध्यक्ष राजेंद्र काबरा ने माल्यार्पण किया। स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में 11 यूनिट रक्तदान हुआ।

पौधे के संग सेल्फी प्रतियोगिता

उज्जैन. माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा पर्यावरण को हरा-भरा रखने के लिए अनोखा कार्यक्रम रखा गया। इसमें सभी सदस्यों को 1-1 पौधा दिया गया। ये पौधा अपने घर के गमले क्यारी में लगाकर सेल्फी लेने की प्रतियोगिता रखी गई। उन्हें बताया गया कि 6 महीने बाद जब आप इसकी साज-संभाल कर बड़ा करेंगी तब फिर सेल्फी डालने पर अच्छे पौधे की सेल्फी पर अनेकों पुरस्कार प्राप्त होंगे। उन पौधों को अन्यत्र खुले बगीचे में लगाया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक दीपाली सोमानी, कीर्ति बियाणी, माधुरी राठी, शिल्पा जावंधिया, फाल्गुनी बियाणीव सहयोगी उषा सोडानी, कृष्णा जाजू, पुष्पा कोठारी थीं।

पौधों का किया रोपण

नागपुर. पर्यावरण के महत्व को समझते हुए गोपाल राठी परिवार ने अपने झंझापुर के खेत में 111 पौधों का रोपण करके उनके पालन का भी संकल्प लिया। उपरोक्त पौधे सामाजिक वनीकरण से पूर्ण भुगतान करके प्राप्त किए गए हैं। एचके फार्म, नेत्र मित्र परिवार के अजय राठी ने जिले के सभी लोगों से अपील की है कि अपने आसपास खाली जगह, खेतों की जमीन, धूरों पर अपने जीवनकाल में 11 पौधे अवश्य लगाएं और उनकी देखरेख कर पेड़ जरूर बनाएं।

जय महेश

संस्था पंजीयन क्र. 03/27/01/21409/19

श्री महेश सामाजिक पारमार्थिक संस्था, इन्दौर

नोद क्र.

मुख्य कार्यालय : श्री माहेश्वरी बोरवेल, 13, रत्नदीप टॉवर, नवलखा बस स्टेण्ड, इन्दौर

मो. : 94250 52183, 98272 34033, 94250 57957, 98260 13164

अ. भा. माहेश्वरी विवाह योग्य युवक-युवती एवं विशिष्ट प्रत्याशी परिचय सम्मेलन दि. 11,12,13 अक्टीबर 2019

सम्मेलन स्थल : दस्तूर गार्डन, फूटी कोठी चौराहा, रिंग रोड़, स्कीम नं. 71, इन्दौर

E-mail : shrimaheshsamajiksanstha@gmail.com Website : www.shrimaheshsamajiksanstha.com

Bank Name & A/c. No. : HDFC Bank, Gumashta Nagar Branch, Indore A/c. No. 50100276343950 IFSC Code : HDFC0009412

अ. भा. माहेश्वरी महासभा के सभापति आदरणीय श्यामसुंदरजी सोनी के सानिध्य में महासभा के गणमान्य सदस्य मार्गदर्शन के लिए सम्मेलन स्थल उपस्थित रहेगें।

प्रत्याशी के दो साफ-सुथर कलर फोटो चाहिए

एक फोटो चिपकायें व दूसरे फोटो को फॉर्म के साथ में पिन से लगायें।

कार्यक्रम का शुभारंभ
दि. 11 / 10 / 19 को प्रात: 9:30 बजे से

युवक ☐ युवती ☐ विशिष्ट युवक ☐ युवती ☐

रसीद क्रमांक ..... दिनांक ..... नगद रु. ..... ड्राफ्ट क्र. .....

प्रत्याशी की सांख _____ प्रत्याशी का नाम _____

पिताजी का नाम _____ मामा की सांख _____

जन्म दिनांक D D M M Y Y Y Y जन्म समय ..... जन्म स्थान ..... जिला .....

आयु ☐☐ ऊँचाई ☐☐ वजन ☐☐ रंग _____ रुचि _____

शिक्षा एवं योग्यता _____ अन्य उपलब्धी _____

प्रत्याशी का व्यवसाय / सर्विस _____ पद _____ वार्षिक आय _____

कार्यालय / प्रतिष्ठान का पूरा पता _____

पिता का व्यवसाय _____ वार्षिक आय _____

माताजी का नाम _____ व्यवसाय _____

निवास का पता _____ व्हाट्सअप नं _____

फोन नंबर - एस.टी.डी. कोड _____ निवास _____ व्हाट्सअप नं अभिभावक/पिता _____

ई-मेल _____ व्हाट्सअप नं प्रत्याशी _____

सम्पर्क सूत्र (इन्दौर में) _____ मो. नं. _____

अन्य सम्पर्क सूत्र _____ स्थान _____

प्रत्याशी के ननिहाल का नाम व सम्पर्क _____ मो. नं. _____

पत्रिका मांगलिक है ☐ पत्रिका मांगलिक नहीं है ☐ पत्रिका मिलाना है ☐ पत्रिका नहीं मिलाना है ☐

पारिवारिक जानकारी : भाई - विवाहित ☐ अविवाहित ☐ बहन - विवाहित ☐ अविवाहित ☐

परिवार - संयुक्त ☐ एकल ☐ निवास - स्वयं का ☐ किराये का ☐

विशिष्ट प्रत्याशी - विधवा ☐ विधुर ☐ दिव्यांग ☐ तलाकशुदा ☐ विवाह तारीख..... विभक्त तारीख .....

पंजीयन शुल्क रु. 1500 **आवास पहले आवें पहले पावें (प्रति यूनिट) रु. 1000**

नोट : उपरोक्त जानकारी सत्यप्रतीत करता हूँ / करती हूँ। पीछे दिये हुए सभी नियम एवं सूचनाओं के पालन का मैं वचन देता हूँ / देती हूँ।
पंजीयन के पश्चात् प्रत्याशी व अभिभावक का चाय- नाश्ता, भोजन एवं हाई टी नि:शुल्क रहेगी।

Bank Name & A/c. No. : HDFC Bank, Gumashta Nagar Branch, Indore
A/c. No. 50100276343950 IFSC Code : HDFC0009412

Bank Name & A/c. No. : Union Bank of India, Siyaganj Branch, Indore
A/c. No. 326201010038918 IFSC Code : UBIN0532622

तुलसी के पौधों का किया वितरण

भीलवाड़ा. गत 21 जुलाई को पंचेश्वर महादेव मंदिर में तुलसी पौधा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। माहेश्वरी सेवा समिति अध्यक्ष रामकिशन सोनी, युवा अध्यक्ष अश्विन तोतला, दिनेश हेड़ा, सचिव अशोक बसेर व योगेश हेड़ा ने पंचेश्वर महादेव मंदिर में तुलसी का पौधा लगाकर शुभारंभ किया। भगवती गदिया, लक्ष्मीलाल काकानी, चंद्रशेखर मंधना, मुकेश नुवाल, बालमुकुंद सोमानी, सुरेंद्र मालपानी, हरीश रांदड़, गिरधरलाल काबरा, सत्यनारायण कास्ट, विजय बाहेती, अंकित सोमानी, हंसमुख हेड़ा, दीपेश तोतला सहित कई गणमान्यजनों द्वारा 101 तुलसी के पौधे वितरित किए गए।

पानी के लिए 'जल कल' अभियान

नागपुर. पानी की वास्तविक अहमित को वही समझता है जिसे उसकी खोज के लिए यहां-वहां भटकना पड़ता है। अतः जल के संरक्षण व उसे बचाने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा जल-कल अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत हाफ गिलास पानी उपक्रम में 'जितनी प्यास, उतना पानी' का कट आउट हर चौराहे पर लगाने में नागपुर जिला समिति अध्यक्ष सुषमा बंग, नागपुर महिला समिति की अध्यक्ष विद्या लद्दड, विविधा कुकिंग क्लासेस की संचालिका पूनम राठी, सविता मूंदड़ा, उर्मिला चांडक, ज्योति हेड़ा, अमिता गांधी, आशा दुजारी, जया मोकाती, लक्ष्मी राठी आदि उपस्थित थीं।

पुण्य स्मृति में लगाए 100 पौधे

बरमंडल. माहेश्वरी परिवार के महेश माहेश्वरी ने अपने ग्राम से कुछ किमी दूर ग्राम पदमपुरा में चल रहे वसुंधरा हरियाली महोत्सव से प्रेरित होकर बरमंडल गौशाला में अपने पिता की स्मृति में 100 फलदार एवं छायादार पौधे रोपे। पौधे रोपने के साथ ही इन्होंने इनको पेड़ बनाने की जिम्मेदारी भी ली। रोज गौशाला में पौधों की देखभाल करने के लिए भले ही समय न हो लेकिन गौशाला को पौधो के लिए पानी, खाद आदि देने के लिये रोज लगने वाला खर्च वे दे रहे हैं। साथ ही सप्ताह मे एक या दो दिन स्वयं परिवार के साथ जाकर पौधों को पानी भी देते हैं। इस कार्य की लोगों ने प्रशंसा की कि यदि ऐसे लोग पर्यावरण की चिंता कर आगे आएं तो फिर से यह धरती लहलहा उठे और पर्यावरण का संरक्षण होकर हम आपने आने वाली पीढ़ी को एक अच्छा जीवन दे पाएंगे।

पश्चिमी मप्र प्रादेशिक सभा की बैठक संपन्न

कन्नौद (जिला देवास). पश्चिमी मप्र माहेश्वरी सभा की चतुर्थ कार्यकारी मंडल की बैठक देवास जिला माहेश्वरी सभा के आयोजकत्व तथा श्री माहेश्वरी समाज कन्नौद के आतिथ्य में गत 26 मई को श्री माहेश्वरी भवन कन्नौद में संपन्न हुई। पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष राजेंद्र ईनाणी ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर मप्र से माहेश्वरी समाज के एकमात्र विधायक माधव मारू (अनिरुद्ध मारू) विधायक मनासा का सम्मान किया गया। उक्त अवसर पर समाजसेवी राधेश्याम साबू इंदौर एवं उनके समस्त साथीगण का भी उनके द्वारा इंदौर शहर में किए जा रहे चिकित्सकीय सेवा कार्यों के लिए सम्मान किया गया। बैठक में अभा माहेश्रवी महासभा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रकाश बाहेती, कार्यसमिति सदस्य अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा महेश तोतला, पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्रवी महिला सभा की अध्यक्ष अरुणा बाहेती एवं पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन की अध्यक्ष पीरूष राठी आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस बैठक में सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण तथा संविधान निर्वाचन आदि मुद्दों पर विशेष रूप से चर्चा हुई। पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष अरुणा बाहेती ने माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा संपन्न किए गए कार्यों के बारे में जानकारी दी गई। बैठक का संचालन पश्चिम मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के मानद मंत्री पुष्प माहेश्वरी द्वारा किया गया। आभार संभागीय संयुक्त मंत्री चंद्रप्रकाश लड्ढा ने व्यक्त किया।

डॉ. गट्टाणी को भारत गौरव सम्मान

नौखा. ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाउस ऑफ कॉमंर्स के सभागार में लेखक, मुद्राविद व व्यवसायी डॉ. ओमप्रकाश गट्टाणी को भारत गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। डॉ. गट्टाणी को विशिष्ट भारतीय के रूप में उत्कृष्ट कार्यों एवं मानवसेवा करने के लिए सम्मान दिया गया। ब्रिटिश पालिर्यामेंट, वेस्टमीनिटर के हाउस ऑफ कॉमंस में आयोजित एक भव्य सम्मान समारोह में डॉ. गट्टाणी को भारत गौरव सम्मान ब्रिटेन की मंत्री वेरोनेश वर्मा, सांसद वीरेंद्र शर्मा, हुक्मचंद्र गनेशिया, सुरेश मिश्र, सुप्रसिद्ध कवि शैलेश लोढा व अन्य गणमान्य अतिथियों ने प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि डॉ. गट्टाणी 30 वर्षों से समाजसेवा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं एवं भारतीय मुद्राओं के अध्ययन और हिंदू भाषा के संरक्षक के रूप में जाने जाते हैं।

जाजू लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

इंदौर. कोल्ड चेन इंडस्ट्री एसोसिएशन मप्र के संस्थापक अध्यक्ष बनवारीलाल जाजू को राष्ट्रीय कोल्ड चेन सेमिनार-2019 आगरा में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से नवाजा गया। उल्लेखनीय है कि वे देश के कोल्ड स्टोरेज उद्योग के विकास के लिए समर्पित भाव से 1969 से 2019 तक 50 वर्षों के दीर्घ काल तक सबको संगठित करके प्रेरणास्त्रोत बने रहे। वर्तमान में श्री जाजू 95 वर्ष की आयु में आज भी मार्गदर्शन देने के लिए तत्पर रहते हैं। इंदौर में उक्त अवार्ड श्री जाजू को एसोसिएशन अध्यक्ष हसमुख जैन गांधी, सचिव बाबूलाल चौधरी, सहकारी समन्वयक राधेश्याम पाटीदार व हरीश माहेश्वरी ने प्रदान किया। श्री जाजू ने प्रारंभ से लेकर 40 वर्षों तक एसोसिएशन को नेतृत्व प्रदान किया।

शिर्डी यात्रा का किया आयोजन

अमरावती. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा शिर्डी मंदिर की दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। विजया राठी ने बताया कि इसमें संगीता टवाणी, गायत्री सोमानी, सीमा लड्ढा, नीता काबरा, डॉ. संगीता राठी, कांता राठी, सरिता राठी, सुनीता राठी आदि सहित 30 महिलाएं उपस्थित थीं।

आगूचा में मना महेश नवमी पर्व

आगूचा. नवमी महोत्सव के उपलक्ष में भगवान महेश के चित्र के समक्ष समाज के वरिष्ठजनों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद बच्चों, महिलाओं, युवक-युवतियों व बुजुर्गों के लिए कई तरह के खेलों का आयोजन किया गया। तहसील उपाध्यक्ष सत्यनारायण सोमाणी ने धार्मिक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किया व विजेताओं को पुरस्कार दिए। अन्य सभी खेलों के विजेताओं को स्वर्गीय शिवदयाल महादेवप्रसाद सोनी की स्मृति में पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन समाज के सुरेंद्र माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम के बाद भगवान महेश की शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात महेश भगवान की महाआरती की गई।

सागर उपराष्ट्रपति के हाथों सम्मानित

आमेट. बौद्धिक प्रतिभा के धनी सागर माहेश्वरी को डॉ. एमसीआर एचआरडी इंस्टिट्यूट ऑफ तेलंगाना, हैदराबाद में आयोजित समारोह में उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडु द्वारा सम्मानित किया गया। इंडियन इंजीनियरिंग सर्विस 2016 बैच में चयनित सागर सहायक निदेशक के पद पर रक्षा मंत्रालय के जयपुर बैस में पदस्थापित थे। वर्तमान में वे दक्षिण भारत में विभागीय ट्रेनिंग ले रहे हैं। इस दौरान आयोजित एक परीक्षा में सर्वाधिक अंक लाने पर सागर को डायरेक्टर जनरल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

मध्य राजस्थान प्रादेशिक सभा की बैठक संपन्न

सरवाड़. मध्य राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के कार्यकारी मंडल व विशेष आमंत्रित सदस्यों की द्वितीय सभा माहेश्वरी भवन सरवाड़ में प्रदेशाध्यक्ष केसरीचंद तापड़िया की अध्यक्षता एवं क्षेत्रीय सभा सरवाड़ के आतिथ्य में आयोजित हुई। अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस कार्यकाल में प्रदेश द्वारा आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र से पूरे प्रदेश से लगभग 100 बंधुओं को 1 करोड़ रुपए का ऋण दिलवाकर उनके व्यवसाय में सहयोग प्रदान किया गया। महेश सेवा निधि के माध्यम से सेठ सूरजमल तापड़िया ट्रस्ट द्वारा 117 लाभार्थियों को 3 किश्तों में 21 लाख से अधिक राशि का सहयोग प्रदान किया गया। ट्रस्ट द्वारा निशक्तजनों को सहयोग निरंतर जारी रहेगा। सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण के फॉर्म व इस काम को त्वरित गति से पूर्ण करने हेतु विजय तेला को संयोजक नियुक्त किया गया। अन्य योजनाओं की भी समीक्षा हुई। प्रदेश कोषाध्यक्ष गुमानमल झंवर द्वारा अंकेक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। आगामी चुनाव हेतु सर्वसम्मति से 5 सदस्यों की चुनाव समिति का गठन किया गया।

पर्यावरण बनेगा शुद्ध, प्रकृति होगी तभी विशुद्ध।
पर्यावरण संस्कृति अंग, चढ़े न कभी प्रदूषण रंग।

युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह

गुवाहाटी. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन की कार्यसमिति बैठक एवं प्रतिभावान छात्र अभिषेक सोनी की पुण्य स्मृति में युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह गुवाहाटी में राजकुमार काल्या की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इसी अवसर पर आयोजित बैठक में निर्णय लिया गया कि संपूर्ण भारतवर्ष के माहेश्वरी समाज के परिवारों में शुभ, मांगलिक व अन्य अवसर पर आयोजित स्नेहभोज में व्यंजनों की अधिकतम संख्या 21 रहे। इसे हेतु युवा संगठन द्वारा प्रयास किया जाएगा तथा समाज की घटती हुई जनसंख्या पर चिंतन करते हुए युवाओं का इस ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया जाने का भी निर्णय लिया गया। युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह में कक्षा 10वीं एवं 12वीं के वाणिज्य, कला एवं विज्ञान विषय के देशभर के टॉप 10 विद्यार्थियों को महेश सोनी की गरिमामय उपस्थिति तथा राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण सोमानी, संदीप करनानी, दीपक चांडक, संदीप राठी, देवेश मूंदड़ा की विशेष उपस्थिति में पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। उक्त जानकारी अध्यक्षीय कार्यालय मंत्री शिवकुमार कासट ने दी।

नेत्रदान पर लघु नाटिका

रतलाम. अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन अन्तर्गत मप्र मारवाड़ी महिला संगठन की जोन बैठक उज्जैन में संपन्न हुई। इसमें महिलाओं ने नेत्रदान पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। इस नाटिका को सभी ने सराहा। इस दौरान मधुकांता सोमानी, चंदा भंसाली, पुष्पा राठी, सूरज डागा, सुलोचना लढ़ा, मंगला असावा, मंजू भंसाली आदि सदस्याएं मौजूद थीं।

ताक धिना-धिन का आयोजन

जयपुर. श्री महेश सेवा संघ द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ताक धिना-धिन का आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम में गत 15 जून को आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम हेतु प्रतिभागियों को 3 वर्गों 8-13 वर्ष, 14-24 वर्ष एवं 25 वर्ष में बांटकर डांस की विधाओं में 15 दिन तक नृत्य प्रशिक्षण शिविर चारों जोनों में लगाकर पारंगत किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि अंजू-सुरेश काबरा, अर्पणा-अनिल मालपानी, स्नेहा-नितिन बाहेती, मीनू-नवीन सारडा, सोनू-घनश्याम (जिम्मी) बिड़ला, प्रदीप-संदीप कचौलिया तथा कार्यक्रम संयोजक विकास अजमेरा मंचासीन थे। श्री महेश सेवा संघ अध्यक्ष सुनील मालपानी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन दिया। स्वागत भाषण सचिव भगवान लड्ढा ने दिया। कार्यक्रम सायं 7 बजे से शुरू हुआ। इस दौरान प्रतिभागी बच्चों, युवाओं एवं महिलाओं ने मंच पर अपनी प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। कार्यक्रम संयोजक विकास अजमेरा ने बताया कि 260 प्रतिभागियों ने हिस्सा लेकर विभिन्न विधाओं में डांस को बारीकी से प्रस्तुत किया।

शैक्षणिक सामग्री का किया वितरण

पुणे. प्रतिवर्षानुसार इस साल भी सांगवी परिसर महेश मंडल (पुणे) और महेश प्रोफेशनल फोरम पिंपरी चिंचवड की ओर से सांगवी (पुणे) स्थित मराठी प्राथमिक शाला और स्वर्गीय यशवंतराव धोंडिबा टन्नू विद्यालय के 230 से अधिक विद्यार्थियों में शैक्षणिक सामग्री का वितरण किया गया। इनका वितरण श्रीनिवास करवा के हाथों किया गया। शैक्षणिक सामग्री में कम्पास, नोटबुक, पेंसिल, स्केच पेन आदि शामिल थे। महेश मंडळ के अध्यक्ष सतीश लोहिया, महेश प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष अभिषेक सदाणी, मुख्यध्यापिका कल्पना सोनवणे, सत्यनारायण बांगड, सचिन मंत्री, प्रसन्न राठी, मनोज मालपाणी, संपत सोमाणी, गजानंद बिहाणी, गणेश चरखा आदि मौजूद थे।

युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह

गुवाहाटी. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन की कार्यसमिति बैठक एवं प्रतिभावान छात्र अभिषेक सोनी की पुण्य स्मृति में युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह गुवाहाटी में राजकुमार काल्या की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इसी अवसर पर आयोजित बैठक में निर्णय लिया गया कि संपूर्ण भारतवर्ष के माहेश्वरी समाज के परिवारों में शुभ, मांगलिक व अन्य अवसर पर आयोजित स्नेहभोज में व्यंजनों की अधिकतम संख्या 21 रहे। इसे हेतु युवा संगठन द्वारा प्रयास किया जाएगा तथा समाज की घटती हुई जनसंख्या पर चिंतन करते हुए युवाओं का इस ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया जाने का भी निर्णय लिया गया। युवा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह में कक्षा 10वीं एवं 12वीं के वाणिज्य, कला एवं विज्ञान विषय के देशभर के टॉप 10 विद्यार्थियों को महेश सोनी की गरिमामय उपस्थिति तथा राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण सोमानी, संदीप करनानी, दीपक चांडक, संदीप राठी, देवेश मूंदड़ा की विशेष उपस्थिति में पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। उक्त जानकारी अध्यक्षीय कार्यालय मंत्री शिवकुमार कासट ने दी।

नेत्रदान पर लघु नाटिका

रतलाम. अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन अन्तर्गत मप्र मारवाड़ी महिला संगठन की जोन बैठक उज्जैन में संपन्न हुई। इसमें महिलाओं ने नेत्रदान पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। इस नाटिका को सभी ने सराहा। इस दौरान मधुकांता सोमानी, चंदा भंसाली, पुष्पा राठी, सूरज डागा, सुलोचना लढ़ा, मंगला असावा, मंजू भंसाली आदि सदस्याएं मौजूद थीं।

ताक धिना-धिन का आयोजन

जयपुर. श्री महेश सेवा संघ द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ताक धिना-धिन का आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम में गत 15 जून को आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम हेतु प्रतिभागियों को 3 वर्गों 8-13 वर्ष, 14-24 वर्ष एवं 25 वर्ष में बांटकर डांस की विधाओं में 15 दिन तक नृत्य प्रशिक्षण शिविर चारों जोनों में लगाकर पारंगत किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि अंजू-सुरेश काबरा, अर्पणा-अनिल मालपानी, स्नेहा-नितिन बाहेती, मीनू-नवीन सारडा, सोनू-घनश्याम (जिम्मी) बिड़ला, प्रदीप-संदीप कचौलिया तथा कार्यक्रम संयोजक विकास अजमेरा मंचासीन थे। श्री महेश सेवा संघ अध्यक्ष सुनील मालपानी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन दिया। स्वागत भाषण सचिव भगवान लड्ढा ने दिया। कार्यक्रम सायं 7 बजे से शुरू हुआ। इस दौरान प्रतिभागी बच्चों, युवाओं एवं महिलाओं ने मंच पर अपनी प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। कार्यक्रम संयोजक विकास अजमेरा ने बताया कि 260 प्रतिभागियों ने हिस्सा लेकर विभिन्न विधाओं में डांस को बारीकी से प्रस्तुत किया।

शैक्षणिक सामग्री का किया वितरण

पुणे. प्रतिवर्षानुसार इस साल भी सांगवी परिसर महेश मंडल (पुणे) और महेश प्रोफेशनल फोरम पिंपरी चिंचवड की ओर से सांगवी (पुणे) स्थित मराठी प्राथमिक शाला और स्वर्गीय यशवंतराव धोंडिबा टन्नू विद्यालय के 230 से अधिक विद्यार्थियों में शैक्षणिक सामग्री का वितरण किया गया। इनका वितरण श्रीनिवास करवा के हाथों किया गया। शैक्षणिक सामग्री में कम्पास, नोटबुक, पेंसिल, स्केच पेन आदि शामिल थे। महेश मंडळ के अध्यक्ष सतीश लोहिया, महेश प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष अभिषेक सदाणी, मुख्यध्यापिका कल्पना सोनवणे, सत्यनारायण बांगड, सचिन मंत्री, प्रसन्न राठी, मनोज मालपाणी, संपत सोमाणी, गजानंद बिहाणी, गणेश चरखा आदि मौजूद थे।

सौहार्द क्रेडिट को-ऑपरेटिव को 15 लाख की आय

बैंगलुरु. श्री माहेश्वरी सौहार्द क्रेडिट को-ऑपरेटिव लिमिटेड की गत 21 जुलाई को 140 शेयरधारकों की उपस्थिति में स्थानीय माहेश्वरी भवन के सभागार में तृतीय वार्षिक साधारण आमसभा आयोजित हुई। शुभारंभ अध्यक्ष नंदकिशोर मालू, माहेश्वरी सभा अध्यक्ष बसंतकुमार सारडा, संस्था उपाध्यक्ष सुरेशकुमार लखोटिया, निदेशक मंडल के चंद्रप्रकाश मालपानी, महेश रांदड़, ओमप्रकाश मंत्री, ओमप्रकाश लड्ढा आदि ने किया। श्री लखोटिया ने दिवंगत शेयरधारक नंदलाल लखोटिया एवं रामदेव लड्ढा को सभी शेयरधारकों के साथ खड़े होकर एक मिनट की मौन श्रद्धांजलि दी। अध्यक्ष श्री मालू ने सभी उपस्थित शेयरधारकों का स्वागत किया। बैठक में जानकारी दी गई कि वित्तीय वर्ष 2018-19 में संस्था को 15 लाख की आय हुई। वर्ष 2019-20 के लिए सोसाइटी द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया गया। इसमें शेयर कैपिटल 350 लाख, डिपोजिट 750 लाख एवं एडवांससेज 900 लाख का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस लक्ष्य की प्राप्ति पर सोसाइटी को कम से कम 30 लाख की कुल आमदनी होने की आशा की है।

सामूहिक रुद्राभिषेक का आयोजन

हावड़ा. श्रावण मास के पुण्य अवसर पर स्थानीय माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी महिला संगठन व युवा मंच हावड़ा की ओर से सामूहिक महारुद्राभिषेक का आयोजन श्रीराम वाटिका में किया गया। इसमें 174 जोड़ों ने भाग लिया। संतश्री दक्षिणामूर्ति पीठाधीश्वर 1008 स्वामी श्री पुण्याननंदजी गिरी महाराज आशीर्वादाता के रूप में उपस्थित थे। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने इस धार्मिक मंच से समाज को संबोधित किया। आचार्य पंडित चिरंजीभाई ने महादेव का मंत्रोच्चार के साथ बिल्वपत्र, कमल पुष्प, गंगाजल व दूध से मुख्य यजमान अनीता-अनिल लाखोटिया, पवन झंवर, निर्मल राठी, रमेश पेड़ीवाल, बसंत पेड़ीवाल सहित 174 जोड़ों से सहपरिवार भगवान शिव का रुद्राभिषेक करवाया। पूजन के उपरांत महाप्रसाद का आयोजन किया गया। आयोजन में संरक्षक ओमप्रकाश मल्ल, नंदकिशोर लखोटिया, अध्यक्ष श्यामसुंदर राठी, गायत्री जाजू, नारायणप्रसाद चांडक, संयोजक गोकुल मंत्री, सुषमा राठी, सीए भावेश बाहेती, सुरेश-कविता सारड़ा, जितेंद्र चांडक, मंत्री अशोक भट्टड़, सरोज राठी, रोहित राठी आदि की मुख्य भूमिका रही।

जाजू व बिरला को आमंत्रण

नईदिल्ली. भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू व लोकसभा अध्यक्ष ओमकृष्ण बिड़ला से नईदिल्ली में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या से मुलाकात कर उन्हें बैंगलुरु में आयोजित कौन बनेगा सुपरस्टार कार्यक्रम में आमंत्रित किया। इसके साथ ही युवा संगठन द्वारा आयोजित की जा रही गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि लोहार्गल धाम माहेश्वरी भवन में भोजनशाला भी शुरू हो चुकी है।

आयकर दिवस पर माहेश्वरी सम्मानित

धार. आयकर विभाग के 159 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर पूरे भारत में आयकर दिवस मनाया गया। इसी श्रृंखला में गत दिवस 24 जुलाई को धार में भी रंगारंग कार्यक्रम कांति पैलेस में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयकर अधिकारी अरुण शर्मा एवं जीएसटी अधिकारी संध्या पुराणिक द्वारा वरिष्ठ कर सलाहाकार महेशचंद्र माहेश्वरी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री माहेश्वरी ने आयकर दिवस की सभी को बधाई दी व आयकर अधिकारी एवं जीएसटी अधिकारी का आभार माना। जानकारी वैभव अग्रवाल ने दी।

रामानुजकोट में बना ब्रह्मोत्सव

इंदौर. मल्हारंगज स्थित रामानुजकोट मंदिर में ब्रह्मोत्सव 25 जून से 4 जुलाई तक मनाया गया। इस दौरान सुबह मंदिर से रथ यात्रा निकाली गई। उत्सव का यह 132वां वर्ष है। स्वामीजी प्रतिवादी भयंकर श्री रंगाचारीजी एवं विजयचार्य स्वामीजी के द्वारा यह उत्सव संपन्न करवाया गया। कार्यक्रम में बालकृष्ण झंवर, संपतकुमार साबू, ओमप्रकाश बोहरा, गोविंद पटवा, राधेश्याम मंडोवरा, कृष्णदास साबू सहित अन्य भक्त मौजूद थे।

संगम उद्योग समूह द्वारा 1 लाख पौधों व 5 लाख ट्री गार्ड का वितरण

पर्यावरण संरक्षण में समूह गत कई वर्षों से दे रहा है सतत योगदान

भीलवाड़ा. पर्यावरण सुधार व शहर को हरा-भरा बनाने के लिए संगम उद्योग समूह की ओर से एक लाख पौधे व 5 हजार ट्री गार्ड के निःशुल्क वितरण का शुभारंभ समुह के चेयरमैन रामपाल सोनी ने डॉ. चेतना कुमावत सहित अन्य अनेक लोगों को ट्री गार्ड व पौधे देकर किया।

श्री सोनी ने आह्वान किया कि पर्यावरण सरंक्षण के इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में आमजन शहर को हरा भरा बनाने में योगदान दें। श्री सोनी ने बताया कि 352 लोगों व विद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों के लिए 3450 पौधों का वितरण हुआ। नितिन स्पिनर्स के चेयरमैन आरएल नौलखा ने कहा कि भीलवाड़ा जिले को हरा-भरा बनाने के लिए सभी उद्योगपति मिलकर प्रयास करें तो पर्यावरण की रक्षा व प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्रबंध निदेशक एसएन मोदानी व वीके सोडानी ने बताया कि सुबह 8 से 10 बजे तक ट्री गार्ड के लिए शास्त्रीनगर स्थित सोनी हाउस से आवेदन पत्र लिया जा सकता है तथा आवेदन पत्र को भरकर साथ बिजली अथवा पानी का बिल लगाकर दिया जाने पर आवेदककर्ता को दूरभाष पर सूचित कर ट्री गार्ड उपलब्ध कराए जाएंगे। कार्यक्रम प्रभारी बाबूलाल जाजू ने बताया कि 24 जुलाई तक प्रातः 8 से 10 बजे तक गुमानसिंह पीपाडा, विद्यासागर सुराणा, मुकेश अजमेरा, जमनालाल जोशी, सुरेश सुराणा से नीम, करंज, शीशम, अमलतास, अशोक, अर्जुन, बरगद, तुलसी, मीठा नीम, कनेर, चांदनी, गुलाब, मोगरा, टीकोमा, अमरूद, नींबू, अनार व अनेक प्रजातियों के पौधे कपड़े का थैला साथ लाने वाले को मिल सकेंगे। पौध वितरण कार्यक्रम में उपवन संरक्षक ज्ञानचंद, पूर्व विधायक विवेक धाकड़, उद्योगपति पीएम बेसवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डाड, पूर्व न्यास अध्यक्ष कैलाश व्यास, महेंद्र ओस्तवाल, डीपी मंगल, श्यामसुंदर मुखीजा, पूर्व जिला प्रमुख कन्हैयालाल धाकड़, सभापति ललिता समदानी, ममता मोदानी, देवकरण गग्गड़, दीनदयाल मारू, राधेश्याम चेचाणी सहित अनेक समाज सेवी व उद्योगपति मौजूद थे। जिला कलेक्टर राजेंद्र भट्ट ने भी संग्रम ग्रुप के इस प्रयास की प्रशंसा की।

भगवान शिव का किया रुद्राभिषेक

रायपुर. माहेश्वरी महिला समिति गोपाल मंदिर रायपुर द्वारा सावन के पवित्र माह में भगवान शिव का रुद्राभिषेक गोपाल मंदिर में गत 22 जुलाई को किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मध्यांचल ज्योति राठी, पूर्व अध्यक्ष सुनीता लड्ढा व मधुलिका नथानी विशेष रूप से मौजूद थीं। अध्यक्ष संगीता चांडक, सचिव प्रगति कोठारी, भावना मर्दा, शशि सारडा, नंदा भट्टर, नीता लाखोटिया, रमा मल, नीता बजाज, शशि बंग, शशि मोहता, कल्पना राठी आदि सभी कार्यकारिणी सदस्याएं मौजूद थीं।

युवा संगठन करेगा 'कौन बनेगा सुपर स्टार' का आयोजन

बैंगलुरु. समाज हित में अभा माहेश्वरी युवा संगठन निरंतर युवाओं व समाजबंधुओं की आशाओं, अपेक्षाओं और उनके सपनों को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा, रोजगार, व्यापार, व्यवसाय, विवाह, खेल, कला, साहित्य, सांस्कृतिक विकास एवं जनकल्याण से संबंधित कार्ययोजनाओं को क्रियान्वित करता आ रहा है। इसी क्रम में सांस्कृतिक क्षेत्र की उभरती हुईं युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर अवसर प्रदान करते हुए अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा कर्नाटक गोवा प्रांतीय माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व एवं माहेश्वरी युवा संघ, बैंगलुरु के आतिथ्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'एवनप्लास्ट कौन बनेगा सुपरस्टार' 9-10-11 अगस्त तक बैंगलुरु में आयोजित किया जा रहा है। इसमें संपूर्ण भारतवर्ष व नेपाल से 1000 से अधिक युवा भाग लेंगे। इसमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम में एकल व समूह नृत्य, गायन, वाद्ययंत्र (टैलेंट), मिस्टर एंड मिसेज माहेश्वरी (व्यक्तित्व विकास) प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। इसी के साथ खेल, कला, साहित्य, सांस्कृतिक तथा शिक्षा से जुड़ी विशेष दिव्यांग प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या व महामंत्री प्रवीण सोमानी ने बताया कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'एवनप्लास्ट कौन बनेगा सुपरस्टार' के विजेताओं को अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा समाज के सहयोग से गठित ट्रस्ट 'श्री बसंतीलाल मनोरमादेवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा आर्थिक सहयोग एवं संसाधन उपलब्ध कराकर उभरती हुई युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता दिलाने का प्रयास किया जाएगा। इस बैंगलुरु सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थिति हेतु केबीसी 2019 एप को गुगल प्ले स्टोर/एप्पल एप स्टोर से डाउनलोड कर अपनी जानकारी रजिस्टर्ड करें। अधिक जानकारी के लिए राजकुमार काल्या (राष्ट्रीय अध्यक्ष), प्रवीण सोमानी (राष्ट्रीय महामंत्री), संदीप करनानी (राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री), नवल मालू (संयोजक), अमित माहेश्वरी (सहसंयोजक), निर्मल तापड़िया (स्वागत अध्यक्ष), अरविंद लोया (स्वागत मंत्री), आनंद कासट (प्रदेशाध्यक्ष) सचिन राठी (प्रदेश सचिव) रविकांत राठी (सांस्कृतिक मंत्री) आदि से संपर्क किया जा सकता है।

विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

अमरावती. गणेशदास राठी छात्रालय समिति के अध्यक्ष वसंत मालपानी की उपस्थिति में अमरावती होंडा टू व्हीलर के अधिकृत विक्रेता रेलवे स्टेशन के सामने स्थित जेपीएस होंडा में दसवीं के उत्तीर्ण विद्यार्थियों के सत्कार समारोह का आयोजन प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में गणेशदास राठी छात्रालय समिति के अध्यक्ष वसंत मालपानी एवं श्री साईंबाबा विद्यालय के मुख्याध्यापिका जयश्री शिरभाते मैडम तथा जेपीएस होंडा के संचालक जुगलकिशोर गट्टाणी उपस्थिति थे। अतिथियों का सत्कार गट्टाणी परिवार द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में श्री साईंबाबा विद्यालय, गणेशदास राठी विद्यालय, नारायणदास विद्यालय, तखतमल हाईस्कूल, हॉलीक्रॉस विद्यालय, ज्ञान माता विद्यालय, गोल्डन किड्स विद्यालय आदि के विद्यार्थियों का पुष्प एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। साथ ही विद्यार्थियों के माता-पिता का सम्मान भी किया गया। उल्लेखनीय है कि जेपीएस होंडा द्वारा दसवीं के उत्तीर्ण बच्चों के लिए सेल्स एवं सर्विस की विशेष योजना और साथ ही श्रीराम सिटी यूनियन फाइनेंस की ओर से 3 हजार रुपए की विशेष बचत योजना चलाई जा रही है। इस कार्यक्रम में जेपीएस होंडा की ओर से संचालक पवन गट्टाणी, पंकज गट्टाणी, श्रवण गट्टाणी, जनरल मैनेजर नितिन हाडोळे, सेल्स मैनेजर संदीप टिंगने, सर्विस मैनेजर वडूरकर आदि सहित संपूर्ण स्टॉफ उपस्थित था।

महेश नवमी उत्सव संपन्न

खंडवा. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन स्कूल व अस्पतालों में डोनेट की गई। महिला मंडल अध्यक्ष रत्ना राठी के नेतृत्व में पांच दिवसीय महेश नवमी उत्सव कार्यक्रम संपन्न हुए। सर्वप्रथम 6 जून को नारी शक्ति क्रिकेट स्पर्धा आयोजित हुई। 7 जून को स्लो साइकिल रेस व संध्या में सामूहिक सुंदरकांड आयोजित हुआ। 8 जून को पांच से सात वर्ष के बच्चों की हनुमान चालीसा की प्रतियोगिता हुई। पचास से ऊपर की महिलाओं की फैंसी ड्रेस स्पर्धा हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विवाह की थीम पर विवाहों में होने वाले अनावश्यक खर्च, दिखावे आदि को दर्शाया गया। 9 एवं 10 जून को पेपर गेम, एक मिनट गेम क्विज कॉन्टेस्ट, पानी की बचत पर पोस्टर सह स्लोगन की प्रतियोगिता, अंताक्षरी, ग्रुप गेम जैसी अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। उषा परवाल, रीना गिल्डा, रेखा व मंजू काबरा सहित समस्त सदस्याएं उपस्थित थीं।

बधाई समारोह का हुआ आयोजन

कोलकाता. माहेश्वरी औद्योगिक शिक्षण केंद्र (अंतर्गत माहेश्वरी सभा कोलकाता) के तत्वावधान में आयोजित बधाई समारोह में ओम बिड़ला को लोकसभा अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से चयनित होने पर बहुत बहुत बधाई दी गई। इसके साथ ही उनकी इस संवैधानिक यात्रा की सफलता के लिए भगवान महेश से प्रार्थना की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी बुलाकीदास मिमानी ने की। संचालन मंत्री अरुणकुमार सोनी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में केंद्र के सदस्य प्रतिनिधि पंचानन भट्टड़, कोष मंत्री आदित्य बिनानी एवं राजेश मोहता, रजनी मोहता, रचित मोहता, मनमोहन राठी, अशोक द्वारकानी आदि उपस्थित थे।

महिला समिति ने दिया योगदान

बरेली. माहेश्वरी महिला समिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया और योग विज्ञान का लाभ उठाया गया। इसमें सभी सदस्याओं ने सीआई पार्क में कार्यक्रम आयोजित किया। मारवाड़ी युवा मंच द्वारा लगाए गए रक्तदान शिविर में समिति की सदस्याओं ने अपनी सहभागिता निभाई। महेश नवमी के अवसर पर श्याम मंदिर में भगवान महेश का पूजन पूरे विधि-विधान से विद्वान पंडित के मार्गदर्शन में किया गया। इसके अतिरिक्त अभा माहेश्वरी महिला संगठन के अभियान के अंतर्गत समिति द्वारा स्थानीय सूरज भवन स्कूल राजेंद्र नगर को सेनिटरी पैड वेंडिंग मशीन भी भेंट की गई।

राठी बने समाज अध्यक्ष

यवतमाल. समाजसेवी ओमप्रकाश राठी को माहेश्वरी समाज के सदस्यों ने सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित किया। उनकी कार्य करने की विशिष्ट क्षमता व बड़े-छोटों को साथ में लेकर समाज का हर कार्य करने की उनकी विशेषता के कारण यह निर्णय लिया गया।

अनमोल ने बनाया कैंसर टेस्टिंग डिवाईस

रायपुर. रायपुर के अनमोल राठी ने न्यूयॉर्क में हुए इंटरनेशनल जीनियस ओलिंपियाड में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। गत 16 से 21 जून तक न्यूयार्क की अस्विगो सिटी में इसका आयोजन किया गया था। इसमें कक्षा 11वीं के छात्र अनमोल राठी ने अपने पार्टनर हर्ष अग्रवाल के साथ भाग लिया। इस ओलंपियाड में लगभग 73 देशों के 1500 छात्र-छात्राओं के 789 प्रोजेक्ट्स आए थे। भारत से 5 टीमों ने भाग लिया था। इसमें केवल रायपुर की इस टीम को साइंस मॉडल कैटेगिरी में गोल्ड मेडल मिला। इन्होंने पैंक्रिएटिक कैंसर डिटेक्ट करने के लिए मॉडल बनाया। इस डिवाइस के जरिये पहली बार टेस्टिंग किट में सेलाइवा का इस्तेमाल किया जाएगा। इससे बड़ी ही आसानी से कम खर्चे में और शुरुआती स्टेज में ही पैंक्रिएटिक कैंसर का पता चल जाएगा। हर्ष के अनुसार इस डिवाइस को बनाने में उन्हें 3 से 4 महीने का समय लगा।

पहले भी मिले पुरस्कार

इससे पहले अनमोल राठी को सीएसआईआर अवॉर्ड, एफजीएसआई (फाउंडेशन फॉर ग्लोबल साइंस) में गोल्ड अवॉर्ड, आईआईटी मुंबई में प्रथम पुरस्कार 75000 रुपए , आईआईटी कानपुर में अवॉर्ड तथा आईएनएसइएफ नेशनल फेयर (इंडियन साइंस एंड इंजीनियरिंग फेयर) में गोल्ड अवॉर्ड मिल चुके हैं। उनके पिताजी इंद्रगोपाल राठी सारड़ा एनर्जी एंड मिनरल्स लिमिटेड में डीजीएम हैं। माता श्रीमती पूजा राठी कम्प्यूटर साइंस की प्रोफेसर हैं। इस उपलब्धि पर माहेश्वरी सभा रायपुर ने हर्ष व्यक्त किया है।

सोमाणी को नवरत्न अवॉर्ड

रेवाड़ी. समाजसेवा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाले उद्योगपति अशोक सोमाणी को लायंस क्लब डिस्ट्रिक्ट 321-ए के नवरत्न अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवॉर्ड एक समारोह में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर तेजपाल खिल्लन द्वारा दिया गया। इस अवसर पर समाजसेवी बनवारीलाल अग्रवाल, बृजलाल गोयल, ताराचंद गुप्ता, ओपी गुप्ता, डॉ. एस.एन. सक्सेना आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट कार्यकारिणी गठित

फरीदाबाद. माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की नई कार्यकारिणी हेतु गत 28 अप्रैल को संपन्न हुए चुनाव में महेशकुमार गट्टानी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी चुना गया। साथ ही डॉ. अरुण माहेश्वरी एवं सुशील सोमानी को उपाध्यक्ष, शैलेष मुंधड़ा को सचिव, दुर्गाप्रसाद मुंधड़ा को कोषाध्यक्ष एवं मनीष नेवर को सहसचिव चुना गया। यह चुनाव चुनाव अधिकारी गुलाब बिहानी एवं रमेश जाजू की देखरेख में संपन्न हुए। कार्यकारिणी सदस्यों का चयन भी किया गया।

मूंदड़ा को भामाशाह सम्मान

जोधपुर. महेश नवमी के अवसर पर समाज द्वारा जगदीशचंद्र एन. मूंदड़ा को जोधपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समाज के कई प्रतिष्ठित लोग मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि श्री मूंदड़ा द्वारा समाज ही नहीं बल्कि कई अन्य समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से भी योगदान दिया जा रहा है।

गौरव ने सेवा से किया गौरवान्वित

उदयपुर. संस्था माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा समाधान एक पहल के तहत पांच सेनेट्री नैपकिन वेंडिंग मशीनें गांव, विद्यालय, छात्रावास, कॉलेज में लगाई गईं। इसमें विशेष योगदान कौशल्या गट्टानी, सरिता न्याती, आशा नरानीवाल, राजकुमारी कोठारी, निर्मला काबरा का रहा। महेश नवमी के उपलक्ष्य में पांच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम, परितोषितक वितरण व स्नेह भोज के साथ सभी कार्यक्रम का समापन किया। समाज के सभी सम्माननीय सदस्य उपस्थित थे। सेवा की श्रृंखला में योगा दिवस के उपलक्ष्य में पानी में योगा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें माहेश्वरी समाज की प्रशिक्षित नीरा तापड़िया व कविता बल्दवा ने अपनी सेवा दी। आशा नरानीवाल ने बताया कि ताड़ासान, अर्द्धचक्रासन, प्राणायाम, भ्रामरी आदि योगा पानी में अध्यक्ष सरला न्याती व संरक्षक कौशल्या गट्टानी की उपस्थिति में किए गए।

राष्ट्रीय पुरस्कार ''भारत श्री'' से सम्मानित हुए बागड़ी

नागपुर. नेशनल ह्यूमन वेलफ़ेयर काउंसिल तथा जल, थल व वायु सेना के पूर्व अधिकारियों की संस्था की ओर से दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, संसद मार्ग स्थित सभागार में राष्ट्र सेवा को समर्पित भव्य 'भारत-श्री 2019' सम्मान व अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देश की थल सेना, जल सेना, वायु सेना, पुलिस, रेलवे पुलिस, समाजसेवी, उद्योग जगत व शिक्षा जगत की महान हस्तियों को उनके राष्ट्र निर्माण और अखंड भारत को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान पर 'भारत श्री 2019 अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। प्रमुख अतिथि के रूप में सम्मिलित भारत सरकार के कैबिनेट मंत्री प्रतापचंद्र सारंगी, महादेवराव जानकर व अति विशिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए पवन जिंदल नार्थ इंडिया हेड राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, रमेश बैस पूर्व सांसद, उत्तर भारत यूनिवर्सिटी वाईस चांसलर, गुंजन मेहता अध्यक्ष नेशनल ह्यूमन वेलफेयर काउंसिल आदि उपस्थित थे। पूरे भारतवर्ष से 11 विभूतियों का उनके सामाजिक कार्य, समर्पण भाव, लेखन, उपलब्धियों की समीक्षा कर भारत-श्री पुरस्कार के लिए चयन किया गया। इसमें महाराष्ट्र नागपुर से सामाजिक कार्यकर्ता शरद गोपीदास बागड़ी का चयन किया गया।

समाजसेवा में सतत योगदान

श्री बागड़ी सामाजिक कार्य में 1976 से विभिन्न संस्थाओं लियो क्लब, जेसीज क्लब, लायन क्लब, रोटरी क्लब, भारत विकास परिषद, लघु उद्योग भारती, जीवन सुरक्षा प्रकल्प, विदर्भ सेवा समिति आदि के माध्यम से सतत योगदान देते रहे हैं। उन्होंने महिला सशक्तिकरण, बुजुर्गों की समस्या-मानवाधिकार, बेटी बचाव-बेटी पढ़ाओ, वृक्षारोपण आदि में अपना सक्रिय सहयोग दिया व लगातार देते रहते हैं। राष्ट्रीय मैगजीन, न्यूज पेपर आदि में सामाजिक समस्याओं, मुद्दों, कुरीतियों पर अपने स्पष्ट राय रखते हुए समस्या का समाधान रखते हैं। श्री बागड़ी को भारत-श्री का राष्ट्रीय पुरस्कार व सत्कार केंद्रीय कैबिनेट मंत्री प्रतापचंद्र सारंगी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पवन जिंदल, गुड़गांव इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री गांधी, छत्तीसगढ़ के पूर्व आमदार रमेश बैस, कैबिनेट मंत्री महादेव राव जानदार के हाथों प्रदान किया गया। आभार प्रदर्शन अध्यक्ष गुंजन मेहता ने किया। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने ''भारत-श्री 2019'' राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए श्री बागड़ी का अभिनंदन कर उन्हें बधाइयां दीं।

गट्टानी को पर्सन ऑफ दी ईयर पुरस्कार

यवतमाल. स्थानीय महेश भवन में आयोजित महेश नवमी उत्सव के अवसर पर पर्सन ऑफ दी ईयर पुरस्कार से इस वर्ष शोभा जीवन गट्टानी को सम्मानित किया गया। श्रीमती गट्टानी समाज के कार्य से पिछले 40 साल से जुड़ी होकर स्थानीय माहेश्वरी मंडल यवतमाल जिला, विदर्भ प्रादेशिक महिला संगठन एवं अखिल भारतीय में भी कार्यरत हैं। इसके साथ लायनेस क्लब, योगधारा, सिनीयर सिटीजन, हरिशरणम व भक्तिसुमन भजन ग्रुप आदि कई संस्थाओं में भी उनकी सहभागिता है।

शादी की सालगिरह पर किया पौधारोपण

नागदा. शुभम-राधिका सिंघी की शादी की सालगिरह पर राठी परिवार द्वारा हताई पालकी स्थित कमला कृषि फॉर्म हाउस पर 21 पौधे लगाये गए। उल्लेखनीय है कि राठी परिवार द्वारा हर सामाजिक कार्यक्रम या खुशी के मौके पर पौधारोपण किया जाता है। उक्त जानकारी विपिन मोहता द्वारा दी गयी।

पर्यावरण सुखी करता, जीवों में चुस्ती भरता।
पर्यावरण यदि बिगड़ेगा, जीवन कैसे सँवरेगा।

हेड़ा संगठन की बैठक संपन्न

जनवरी 2020 में शिर्डी में आयोजित होगा हेड़ा (माहेश्वरी) महाकुंभ

वाशिम. अखिल भारतीय हेड़ा (माहेश्वरी) संगठन के बैनर तले हेड़ा परिवारों का संभागीय स्नेह मिलन समारोह व संगठन की द्वितीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक गत दिनों संपन्न हुई। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष भागीरथ हेड़ा के मुख्य आतिथ्य में हुए इस आयोजन में समाज को संगठित करके देशहित में कार्य करने और सभी बंधुओं को साथ लेकर चलने का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम में हेड़ा गौरव और वाशिम नगर अध्यक्ष अशोक हेड़ा विशेष रूप से उपस्थित थे। वाशिम, आकोला, अमरावती संभाग के वृहद हेड़ा परिवार के 100 से अधिक हेड़ा बंधु सपरिवार तथा देशभर से आए लगभग 45 से अधिक अखिल भारतीय हेड़ा (माहेश्वरी) संगठन के सम्मानित मार्गदर्शक, पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्यगण मौजूद थे। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि डॉ. राजकुमार हेड़ा अकोला, कालूराम हेड़ा नडियाद, द्वारकाप्रसाद हेड़ा डेगाना, गौरीशंकर हेड़ा अमरावती, दीपक चिमनीरामजी हेड़ा अमरावती, हरिनारायण हेडा जोधपुर, महेश हेड़ा अजमेर, गुरुचरण हेड़ा पाली (पाली माहेश्वरी समाज अध्यक्ष), तुलसीराम हेड़ा सूरत, रामप्रसाद हेड़ा शाहपुरा आदि मौजूद थे।

हर परिवार को मजबूत करना ही हमारा लक्ष्य

संगठन अध्यक्ष भागीरथ हेड़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि सबसे पहले हम देशभक्त माहेश्वरी हैं और हेड़ा परिवारों को संगठित करते हुए सभी बंधुओं को माहेश्वरी महासभा और संगठन के माध्यम से सक्षम बनाने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने सभी बंधुओं का आह्वान करते हुए कहा कि हेड़ा संगठन हर परिवार को सशक्त और मजबूत करने की दिशा में कार्य कर रहा है। महासचिव डॉ. जीएल हेड़ा ने बताया कि मात्र तीन वर्ष में हेड़ा संगठन एक विशाल स्वरूप में उभर कर आया है और देश-विदेश में बसे आशातीत संख्या में हेड़ा परिवार सगंठन से जुड़े हैं। वृहद हेड़ा परिवार का यह संगठन शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, वाणिज्य, सहायता प्रकल्पों आदि के साथ ही किशोर, किशोरी तथा युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु कई सेवा प्रकल्पों व आयोजनों के माध्यम से सकारात्मक कार्य कर रहा है। संगठन के सम्मानित मार्गदर्शक डॉ. राजकुमार हेडा अकोला ने उपस्थित मातृशक्ति से बच्चों को माहेश्वरी संस्कार व नैतिक शिक्षा देने का आह्वान किया।

हेड़ा परिचय पुस्तिका होगा प्रकाशन

हेड़ा गौरव से सम्मानित अशोक हेड़ा ने बताया कि संगठन का आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन जनवरी 2020 में शिर्डी में आयोजित होगा। इसमें सभी परिवारों की परिचय पुस्तिका का लोकार्पण किया जाएगा। उन्होंने अपने उद्बोधन में जहां सभी वृहद हेड़ा परिवारजनों से संगठन से जुड़ने-जोड़ने पर जोर दिया, वहीं यह सुनिश्चित करने को भी कहा कि परिवार में यदि कोई बंधु अपरिहार्य कारणों से कमजोर है, तो उसका पता भी हमें ही लगाना है और उसकी गरिमा को बिना ठेस पहुंचाए ससम्मान उस बंधु का हाथ पकड़ना है। उसे अपने साथ गतिमान करना है। आयोजन समिति संयोजक गोपाल हेड़ा ने बताया कि सम्मेलन के बाद कार्यकारिणी की बैठक में पूर्व के आयोजनों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनी। कार्यक्रम के समापन पर सभी बंधुओं ने स्नेहभोज किया। डॉ. रमन हेड़ा ने सभी आगंतुक बंधुओं व मातृशक्ति को धन्यवाद ज्ञापित किया।

निबंध स्पर्धा में जाजू प्रथम

वर्धा. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत राष्ट्रस्तरीय सुलेखा समिति के तत्वावधान में विदर्भ प्रादेशिक महिला संगठन द्वारा आयोजित निबंध स्पर्धा में माहेश्वरी महिला संगठन वर्धा की सदस्या अलका राजकुमार जाजू ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। प्रतियोगिता का विषय ''पीहर के आंगन से ससुराल के महलों तक का सफर-मेरी आत्मकथा'' था। पूर्व में इसी समिति अंतर्गत आयोजित कविता लेखन, दोहा लेखन तथा पोस्टर स्पर्धा में भी श्रीमती जाजू ने राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त किए थे।

मूंधड़ा साहित्य प्रहरी से सम्मानित

बैंगलुरु. संस्था साहित्य संगम द्वारा समाजसेवी रामगोपाल मूंधड़ा को बैंगलुरु साहित्य प्रहरी सम्मान से सम्मानित किया गया। संस्था अध्यक्ष डॉ. सुनील तरुण ने बताया कि श्री मूंधड़ा की साहित्य सेवा, शिक्षा प्रेम, समाजसेवा, दृढ़संकल्प एवं समर्पित बहुमुखी प्रतिभा से समाज, साहित्य और राष्ट्र लाभान्वित होता रहा है। आपने विरासत में मिली अमूल्य संस्कृति का सदैव समाज में प्रचार प्रसार करने में समर्पण भाव दिखाया है।

महामंडलेश्वर का किया अभिनंदन

धार. गिरीराज की परिक्रमा से पधारे सब से कम उम्र के महामंडलेश्वर श्री विनोदगिरि महाराज व राकेशजी महाराज समाजसेवी महेशचंद्र माहेश्वरी के निवास पर आए। परिवारजनों ने स्वामी का स्वागत कर आशीर्वचन लिए। इस अवसर पर डॉ. भावेश राजपुरोहित, नारायण कुबेर, महेशचंद्र माहेश्वरी आदि परिवार सहित उपस्थित थे।

नानीबाई रो मायरो संपन्न

इंदौर. कथा श्रवण के साथ जब तक हम उसमें कही बात को जीवन में उतारने का संकल्प नहीं लेते हमारे कथा श्रवण का कोई अर्थ नहीं है। उक्त उद्‌गार श्री बड़ा रामद्वारा सुरसागर जोधपुर के व्यासपीठ महंत श्री रामप्रसाद जी महाराज ने माहेश्वरी महिला संगठन संयोगितागंज इंदौर द्वारा 1 से 3 जुलाई तक आयोजित तीन दिवसीय नानीबाई रो मायरो की कथा की शुरुआत पर व्यक्त किए। कथा का आयोजन माहेश्वरी भवन नवलखा पर किया गया। महिला संगठन अध्यक्ष सुनीता लड्ढा, मंत्री नीलम काबरा व संगठन मंत्री नीलिमा असावा ने बताया कि कथा के पूर्व रामद्वारा छावनी से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में प्रादेशिक महिला संगठन की अध्यक्ष अरुणा बाहेती, सचिव वीणा सोमानी, जिलाध्यक्ष प्रमिला भूतड़ा, सचिव सुमन सारडा सहित रामेश्वरलाल असावा, ईश्वर बाहेती, रामविलास राठी आदि कई समाजजन मौजूद थे। शोभायात्रा के यजमान पुरुषोत्तम करवा थे। संयोजिका प्रमिला गिलड़ा, किरण लखोटिया, अर्चना भूतड़ा, साधना मंडोवरा ने बताया कि इस भव्य आयोजन के मुख्य यजमान राधेश्याम-सोहनीदेवी मालानी थे। कथा के समापन पर महाराजश्री का सम्मान किया गया। सम्मान पत्र का वाचन महेश सार्वजनिक ट्रस्ट के केदार सारडा ने किया। आयोजन के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया था। अंतिम दिवस को महाप्रसादी का आयोजन भी हुआ।

पर्यावरण प्रकृति देन, इसके बिन जीवन बेचैन।
पर्यावरण सुंदर रखें, प्रदूषण का जहर न चखें।

बिरला की अगवानी में उमड़ी 'छोटीकाशी'

बूंदी. लोकसभा अध्यक्ष बनने के उपरांत पहली बार गत 6 जुलाई को बूंदी आए ओम बिरला का माहेश्वरी समाज सहित 'छोटी काशी' बूंदी में पग-पग पर स्वागत हुआ। शहर की जनता ने पलक-पावड़े बिछा दिए। श्री बिरला खुली जीप में शहर की सड़कों पर निकले। देवपुरा स्थित ग्रीन वैली रिसोर्ट पर 'माहेश्वरी समाज' ने भी जोरदार अगवानी की। महिला संगठन की पदाधिकारियों ने रोली-मोली व आरती कर पुष्पवर्षा से स्वागत किया।

अभा माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडी सदस्य संजय लाठी ने बताया कि लोकसभा अध्यक्ष बिरला का काफिला शाम चार बजे बूंदी के दधिमती माता मंदिर पहुंचा। यही से शुरू हुआ स्वागत का दौर, जो समूचे मार्ग में बना रहा। उन्होंने सभी का अभिवादन स्वीकारा। उनके साथ खुली जीप में स्थानीय विधायक अशोक डोगरा, राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष ममता शर्मा, नगर परिषद के सभापति महावीर मोदी आदि सवार रहे। स्वागत करने वालों में पंचायत अध्यक्ष जगदीश जैथलिया, सचिव विजेंद्र माहेश्वरी, जिला सभा अध्यक्ष घनश्याम नकलक, सचिव चंद्रभानु लाठी, महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी अध्यक्ष संजय लाठी, उपाध्यक्ष चतुर्भुज गुप्ता, सचिव नारायण मंडोवरा, निदेशक मनीष मंत्री व मीनाक्षी काबरा, युवा संगठन जिलाध्यक्ष नरेश लाठी, महामंत्री निशांत नुवाल, महिला संगठन की जिला सचिव मधु हल्दिया, शहर सचिव सोनल मूंदड़ा, पूर्व जिलाध्यक्ष कविता जाजू सहित सैकड़ों समाजजन मौजूद थे।

महेश नगर में हुआ पौधारोपण

दुर्ग. स्थानीय श्री महेश नगर में पौधारोपण बड़े ही सुनियोजित तरीके से संपन्न हुआ। इसमें चंपा के लगभग 400 पौधे जो लगभग 8 से 10 फीट के थे, रोपे गए। समाज के लालचंद राठी, ईश्वरदास चांडक, नरसिंगदास भूतड़ा, सत्यनारायण भूतड़ा, ओमप्रकाश टावरी, चतुर्भुज राठी, राजकुमार केला, मनोज राठी, दीपक गांधी, विजय चांडक, नरेंद्र राठी, सुरेंद्र राठी आदि मौजूद थे। शीघ्र ही 5-7 दिनों में फलदार और छायादार पेड़ों को रोपित करने का भी निश्चय किया गया है।

दो दिवसीय स्व चिकित्सा शिविर संपन्न

पिपरिया. बीमारियों का इलाज शरीर के अंग से ही किया जा सकता है। यदि सही स्थान व पाइंट पर आपने एक्यूप्रेशर का माध्यम अपनाया तो आप हमेशा स्वस्थ रहेंगे। उक्त उद्गार अखिल भारतीय महाराष्ट्र महिला संगठन के अनेकों पदों पर पदासीन रह चुकी समाजसेवी मीना सांवल ने माहेश्वरी महिला परिषद द्वारा आयोजित दो दिवसीय एक्यूप्रेशर स्वचिकित्सा शिविर के अवसर पर व्यक्त किए। इस दौरान आपने एक्यूप्रेशर के माध्यम से शरीर के अंगों पर एक्यूप्रेशर देकर बीमारियों को कैसे रोका जा सकता है यह भी बताया। उन्होंने कहा कि एक्यूप्रेशर से हर बीमारी का इलाज होता है। परंतु नियमित व सही तरीके से किया जाए तो ही इसका लाभ मिलेगा। इस अवसर पर श्रीमती सांवल ने माहेश्वरी महिला परिषद की महिलाओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का विस्तार से जवाब देते हुए एक्यूप्रेशर के माध्यम से इलाज भी बताया। इस अवसर पर शोभा भट्टर, राजश्री राठी, अध्यक्ष बीना मूंदड़ा, सचिव अरुणा मूंदड़ा, सहसचिव साधना घुरका, किरण हुरकट सहित कई सदस्याएं मौजूद थीं।

तापड़िया विकास परिषद का रक्तदान शिविर

कोलकाता. तापड़िया विकास परिषद ने भारतीय सेना (पूर्वी कमान) के तत्वावधान में द्वितीय रक्तदान शिविर का आयोजन रामा भवन में गत 30 जून को किया गया। इसमें 81 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। वृहत्तर कोलकाता माहेश्वरी सभा अध्यक्ष भंवरलाल राठी, माहेश्वरी सभा अध्यक्ष पुरुषोत्तम मिमानी, मंत्री पुरुषोत्तम मूंधड़ा, परिषद संरक्षक भीकमचंद तापड़िया, सभापति बलदेव जी, सचिव विनय जी, सिटी केबल के सुरेंद्र अग्रवाल ने व्यक्तव्य रखे। श्याम बागड़ी, टीके दत्ता आदि की उपस्थिति ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। भारतीय सेना पूर्वी कमान की लेफ्टिनेंट कर्नल दीपिका गुलाटी की विशेष उपस्थिति रही। उपसभापति देवकिशन जी, सतीश जी, चंद्रप्रकाश जी, मनोज जी, घनश्याम जी, हरिभगवांन जी आदि का सहयोग रहा।

जाजू दंपति ने किया स्वास्थ्य परीक्षण

पुणे. प्रतिवर्ष देवशयनी एकादशी (आषाढ़ी एकादशी) पर महाराष्ट्र में पंढरपुर की वारी (तीर्थयात्रा) का आयोजन होता है। इसमें प्रदेश के कोने-कोने से वारकरी संप्रदाय के लाखों श्रद्धालु पालकियों और दिंडियों के साथ पंढरपुर में विट्ठल दर्शन को पहुंचते हैं। इस अवसर पर 27 जून को वडगाओं शेरी चंदन नगर खराड़ी में डॉक्ट्र्स एसोसिएशन वर्किंग समिति द्वारा आषाढ़ी वारी मोफत आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. रामप्रसाद जाजू एवं डॉ. संगीता जाजू ने अपने सह डॉक्टर मित्रों के साथ वारकरी संप्रदाय के 750 लोगों का मेडिकल चेकअप किया वे पिछले 6-7 वर्षों से सपत्नीक यह मेडिकल सेवा कार्य कर रहे हैं।

वृष्टि यज्ञ का हुआ आयोजन

ब्यावर. आर्य समाज के तत्वावधान में विश्व कल्याण के लिए वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। मंत्री भूदेव आर्य ने बताया ने कि यज्ञ के द्वितीय दिवस यज्ञमान सुलेखा-विशाल काबरा, रेखा-सुनील बाहेती, रेणु-कमलेश मालू, अंजू-मितेश मूंदड़ा आदि द्वारा यज्ञ में आहुतियां दी गईं। वृष्टि यज्ञ कार्यक्रम में प्रधान ओमप्रकाश नवाल, ओमप्रकाश काबरा, मानकरण हेड़ा, महेश मालू, हरिनारायण मालानी, विनायक माहेश्वरी, रुद्रदेव झंवर, रामेश्वर भूतड़ा, विजय काबरा, विजय भूतड़ा, राजेंद्र काबरा, संजय बाहेती सहित कई सदस्य व शहर के गणमान्यजन उपस्थित थे।

पर्यावरण मित्र हमारा, धरती पर गूंजे ये नारा।
पर्यावरण रहेगा शुद्ध, होगा वातावरण विशुद्ध।

पर्यावरण करेंगे नष्ट, पाएँगे फिर निश्चित कष्ट।
पर्यावरण से शुद्ध हवा, सब रोगों की एक दवा।

महिला संगठन के अभियान में योगदान

गुना. माहेश्वरी समाज द्वारा शासकीय कन्या मावि पगारा जिला गुना में सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाई गई जिससे आवश्यकता पड़ने पर स्कूली छात्राओं को स्कूल में सुविधा उपलब्ध हो सके। कार्यक्रम में मंडल के सभी सदस्यों की उपस्थिति रही जिसमें नीलिमा लाहोटी, कांता लाहोटी, लक्ष्मी राठी, विष्णुकांता मजेजी, रमा सूरजन आदि मौजूद थीं।

उच्च शिक्षित प्रोफेशनल परिचय सम्मेलन संपन्न

इंदौर. श्री माहेश्वरी संस्कृति केंद्र द्वारा एक दिवसीय माहेश्वरी उच्च शिक्षित/प्रोफेशनल ग्यारहवां परिचय सम्मेलन गत 30 जून को इंदौर में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में कुल 255 प्रविष्टियां सम्मिलित की गईं जिसमें से 150 लड़कियों एवं 105 लड़कों से संबंधित थीं। इसमें भारत के विभिन्न 14 राज्यों के अलावा 12 विदेशों से भी प्रत्याशी शामिल थे। उक्त जानकारी देते हुए संयोजक मुनीश मालानी ने बताया कि इस कार्यक्रम में सम्मानीय अतिथि भोजराज लाखोटिया (समाजसेवी एवं उद्योगपति अकोट), सीए शिवनारायण भूतड़ा (निदेशक एवं कॉलोनाइजर इंदौर), इंदु लढ़ा (पूर्व अध्यक्ष प्रा. मामस दिल्ली) थीं। प्रत्याशियों ने हॉट सीट पर बैठकर अपना परिचय दिया। भव्य स्क्रीन पर प्रत्याशी का बायोडाटा एवं अन्य जानकारियाँ प्रदर्शित की गईं। दोपहर पश्चात प्रत्याशी एवं अभिभावक मिलन समारोह चला। प्रत्याशियों की विस्तृत जानकारी हेतु डायरेक्टरी प्रयास का विमोचन भी किया गया। इसमें सहसंयोजक ओम टावरी, उपसंयोजक कृष्णावतार राठी, प्रचार प्रमुख रामस्वरूप मूंदड़ा का विशेष सहयोग रहा। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष मनीष सोमानी, स्वागताध्यक्ष सागरमल खटोड़, राजकुमार साबू, कमलकिशोर अटल, मुकेश कचोलिया, ज्योतिप्रकाश बसेर, ओमप्रकाश माहेश्वरी आदि ने किया।

नेचुरल बर्थिंग कार्यशाला का आयोजन

महू. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा एक दिवसीय नेचुरल बर्थिंग कार्यशाला रखी गई। चोइथराम अस्पताल व अनुसंधान केंद्र तथा चोइथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग के संयुक्त रूप से रखी गई इस कार्यशाला में डॉ. सुषमा जामद द्वारा महिलाओं व उनके परिवार को आने वाले शिशु के लिए प्राकृतिक प्रसव को बढ़ावा देने व गर्भावस्था के समय किए जाने वाले व्यायाम व मालिश आदि के बारे में जानकारी दी गई। अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष उमा सोढ़ानी ने की। कार्यक्रम संयोजक आशा सोढ़ानी, अर्पना जाजू, कृष्णा बाहेती आदि कई महिलाएं उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन संगीता माहेश्वरी ने किया।

राम लेखन कला की कार्यशाला

कोलकाता. संस्था "ये मेरा इंडिया (वायएमआई)" द्वारा कविता डागा की राम लेखन कला की दूसरी कार्यशाला गत 16 जुलाई को कोलकाता में आयोजित की गई। वायएमआई (ये मेरा इंडिया) महिलाओं की संस्था है जिसका एकमात्र उद्देश्य सिर्फ समाज की भलाई है एवं अपनी संपदा को समाज के कार्य में प्रयोग करना है।

सदा - सर्वदा - सर्वोत्तम

50 मंगल वस्त्रालय
जयस्तंभ चौक, अमरावती.
☎ 2572672

Colors & Weaves
by shreemangalam
1st Floor, Sahakar Bhavan,
Jaistambh Chowk, Amravati. 2569458

मंगलम्
जयस्तंभ चौक, अमरावती.
☎ 2564172

घागरा ओढणी, बनारसी शालु, डिझायनर वर्क साडीयाँ, प्युअर सिल्क साडीयाँ, पैठणी, कांजीवरम्, ९वारी पातळे, सलवार सुट, कुर्ती, इंडो वेस्टर्न, इव्हीनींग गाऊन

वैश्य महासम्मेलन ने किया प्रतिभा सम्मान

देवास. वैश्य महासम्मेलन मप्र के देवास युवा इकाई द्वारा प्रदेशाध्यक्ष उमाशंकर गुप्ता के जन्मदिन को सम्मान दिवस के रूप में मनाया गया। युवा इकाई के नगर अध्यक्ष गौरव गुप्ता ने बताया कि इसमें दसवीं व 12वीं के 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 34 मेधावी विद्यार्थियों को अभिनंदन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। नगर अध्यक्ष विजय विजयवर्गीय व महिला अध्यक्ष सुषमा गुप्ता ने बताया कि आयोजन की मुख्य अतिथि वैश्य महासम्मेलन की महिला प्रदेश अध्यक्ष मीना गुप्ता, विशेष अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष तरुण शाह प्रेस्टिज इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर अमिताभ जोशी, वैश्य पार्षद पूर्णिमा खंडेलवाल एवं कार्यक्रम अध्यक्ष प्रदेशा महामंत्री सत्यनारायण लाठी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा वैश्य कुलदेवी महालक्ष्मी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। महिला इकाई द्वारा वैश्य गान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में रजीनश पोरवाल, विजय विजयवर्गीय, गौरव गुप्ता, द्वारका मंत्री, अमित गुप्ता, देवीलाल पोरवाल आदि का सराहनीय सहयोग रहा। राजीव खंडेलवाल, गिरधर गुप्ता, श्याम सारड़ा कन्नौद आदि उपस्थित थे।

30 मोरों की हत्या की एफआईआर

भीलवाड़ा. पीपुल फॉर एनीमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने पिछले दिनों अजमेर जिले के केकड़ी के अजगरा में एक दर्जन मोरों की हत्या, नागौर जिले के जायल के कुर्सिया में 10 मोरों की हत्या तथा बूंदी जिले के पेचकीबावड़ी में स्वरूपगढ़के पास जंगल में 8 मोरों की हत्या की प्राथमिकी पुलिस अधीक्षक अजमेर, नागौर व बूंदी को ई-मेल एवं रजिस्टर्ड डाक से दर्ज कराते हुए शिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की है। श्री जाजू ने बताया कि पुलिस की ढीली प्रवृत्ति के कारण मोरों की हत्या का सिलसिला बदस्तूर जारी है। पुलिस कार्रवाई के नाम पर केवल मोरों के पोस्टमार्टम तक ही सीमित रह जाती है।

गुरु वंदन-छात्र अभिनंदन

ब्यावर. गत 16 जुलाई को भारत विकास परिषद की ब्यावर शाखा द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु वंदन व छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का प्रारंभ स्थानीय राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य राजेश जिंदल व अध्यक्ष राजेंद्र काबरा द्वारा मां सरस्वती व भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी और परिषद की ब्यावर शाखा अध्यक्ष श्री काबरा द्वारा बच्चों को गुरु वंदन कार्यक्रम का प्रायोजन व गुरु की जीवन में आवश्यकता पर तथा गुरु पूर्णिमा के महत्व पर वक्तव्य दिया गया। परिषद के सदस्य अमरचंद मूंदड़ा द्वारा बच्चों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई। परिषद सदस्यों द्वारा शिष्यों से सभी गुरुओं का सम्मान करवाया गया। एक श्रेष्ठ गुरु के रूप में व्याख्याता श्रीकिशन वैष्णव को प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शॉल प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ छात्र के रूप में 11वीं के छात्र सुरेश जांगिड़ को प्रशस्ति-पत्र दिया गया जिसने माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा में ब्यावर नगर में सर्वाधिक 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे।

सितंबर-अक्टूबर में होंगे इंदौर जिला के चुनाव

इंदौर. अभा माहेश्वरी महासभा द्वारा तैयार मतदाता सूची के आधार पर इंदौर जिला माहेश्वरी सभा के चुनाव सितंबर माह में होंगे। माहेश्वरी समाज इंदौर के जिलाध्यक्ष कल्याणमल मंत्री, सचिव बसंत खटौड़ ने बताया कि इंदौर में समाज के 4280 परिवार पंजीकृत हैं। जिले के लिए गौरीशंकर लखोटिया को मुख्य चुनाव अधिकारी मनोनीत किया है। सितंबर में इंदौर के सभी 9 क्षेत्रों में चुनाव होंगे। यहां भी चुनाव अधिकारियों की नियुक्ति 30 जुलाई तक हो जाएगी। अक्टूबर में इंदौर जिला माहेश्वरी समाज के चुनाव होंगे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव का हुआ आयोजन

अमरावती. गुरु पूर्णिमा पर सुबह 11 बजे स्थानीय धनराज लेन में दो दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम अंतर्गत सुश्री मंगलाश्री भूतड़ा के मुखारविंद से प्रवचन का आयोजन किया गया। रामायण, संगीतमय सुंदरकांड, बाबा की आरती के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। 16 जुलाई को 11 बजे से माहेश्वरी भवन में महाप्रसादी का आयोजन किया गया। इसमें ओमप्रकाश चांडक, अशोक जाजू, घनश्याम मालानी, कमल सोनी, उमेश टावरी, ओमबाबू लड्ढा, राधेश्याम राठी, राजकुमार टवाणी, संगीता टवाणी, नंदकिशोर सुदा, गंगाबाई सुदा, शांताबाई लड्ढा आदि का योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन बाबा राउत ने किया।

खुशी को 97 प्रतिशत

बारहमासपुर. (मुर्शीदाबाद). सुभाष-मीना सोनी की सुपुत्री खुशी ने आईसीएसई दसवीं की परीक्षा 97 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। कम्प्यूटर व हिस्ट्री में शत-प्रतिशत 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

झंवर एलएलबी उत्तीर्ण

अहमदनगर. समाज सदस्य नंदकुमार झंवर के सुपुत्र भरत झंवर ने एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इससे पूर्व 2008 में उन्होंने कंपनी सेक्रेटरी की अत्यंत कठिन परीक्षा पुणे शहर से छठवें स्थान से उत्तीर्ण की थी। दिसंबर 2018 में उन्होंने सीएमए फायनल की परीक्षा का पहला ग्रुप प्रथम प्रयास में पूरा किया है। जून 2019 में उन्होंने सीएमए फायनल का दूसरा ग्रुप उत्तीर्ण किया है।

आर्यमन को यूएसए में अवॉर्ड

भीलवाड़ा. आरके कॉलोनी निवासी कैलाशचंद्र दरगड़ के सुपौत्र एवं यूएसए निवासी जितेंद्र-दीपाली दरगड़ के सुपुत्र आर्यमन लॉस एंजल्स यूएसए में पांचवीं स्टैंडर्ड में अध्ययनरत हैं। उन्होंने अमेरिकन प्रेसिडेंट एजुकेशनल अवॉर्ड गणित विषय में अपने सर्वोत्तम प्रदर्शन के आधार पर प्राप्त किया है।

अवनी को 94.2 प्रतिशत

कोलकाता (पबं). समाज सदस्य राहुल व प्रीति तोषनीवाल की सुपुत्री अवनी ने सीबीएसई दसवीं की परीक्षा 94.2 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। इसमें उन्होंने गणित विषय में सर्वाधिक 98 अंक प्राप्त किए।

युक्ता को 88.4 प्रतिशत अंक

चंद्रपुर (महा.). गिरिश व अलका चांडक की सुपुत्री युक्ता ने सीबीएसई दसवीं की परीक्षा 88.4 अंकों से उत्तीर्ण की। इसमें सर्वाधिक 99 अंक हिंदी में प्राप्त किए हैं।

कौन बनेगा सुपर स्टार में सोनाली द्वितीय

नागौर. माहेश्वरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान व माहेश्वरी युवा संगठन परबतसर के आतिथ्य में "कौन बनेगा सुपर स्टार" के तहत आयोजित प्रादेशिक सांस्कृतिक प्रतियोगिता गत 2 जुलाई को परबतसर, नागौर में आयोजित हुई। इसमें डांस, सिंगिंग, वाद्य यंत्र, जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम "कौन बनेगा सुपरस्टार" में केकड़ी (अजमेर) माहेश्वरी समाज की सोनाली राठी पत्नी अतुल राठी ने डांसिंग प्रतियोगिता में राज्यस्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

केशव सीपीटी में संभाग में टॉपर

सीहोर. द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आई सी ए आई) की ओर से आयोजित कॉमन प्रोफिशिएंसी टेस्ट सीपीटी 2019 के परीक्षा परिणाम में सीहोर शहर के होनहार छात्र केशव सोनी 200 में से 168 अंक प्राप्त कर भोपाल संभाग में अपने मित्र आयूष तिवारी के साथ संयुक्त रूप से टॉपर बने। केशव व्यवसायी नवीन व कत्थक शिक्षिका रूपाली सोनी के सुपुत्र हैं।

अनुष्का को जूनियर मास्टर शेफ पुरस्कार

हैदराबाद. फोरम मॉल में ख्यात फूड कंपनी द्वारा जूनियर मास्टर शेफ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें 300 प्रतियोगियों में 13 वर्षीय अनुष्का गट्टाणी ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इसमें उन्हें 25 हजार का गिफ्ट हैम्पर मिला। इसमें उन्होंने पाश्ता, ओरियो केके, तिरंगा केसरी संदेश समय पर बनाकर सुंदर डेकोरेशन के साथ प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं अनुष्का पढ़ाई में सदा अव्वल रहकर ड्राइंग, पेंटिंग, स्केटिंग, क्लासिकल सीगिंग, कुकिंग व डांसिंग में भी रुचि रखती हैं। अनुष्का आशुतोष गट्टानी की सुपुत्री हैं।

जूनियर एडिटर में चयनित उत्सव

नीमच. विगत दिनों मीडिया समूह दैनिक भास्कर ने देशभर के 4 हजार से अधिक स्कूलों के लगभग 4 लाख विद्यार्थियों के बीच जूनियर एडिटर स्पेशल मेंशन विनर्स स्पर्धा का आयोजन किया था। इसमें दसवीं से 12वीं के बच्चों ने भी भाग लिया। श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर 70 बच्चों का चयन किया गया। प्रतियोगिता में नीमच के छात्र उत्सव पिता ओमप्रकाश काबरा (स्वास्थ्य सभापति नपा, नीमच) ने चयनित 70 बच्चों के बीच मप्र से इकलौते प्रतियोगी के रूप में स्थान बनाया। इसमें उत्सव को श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के हाथों सम्मानित किया गया।

पर्यावरण प्रकृति का धर्म, इसे तोड़ना भारी शर्म।
पर्यावरण हानि को जान, बंजर धरती रेगिस्तान।

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Registration Free

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

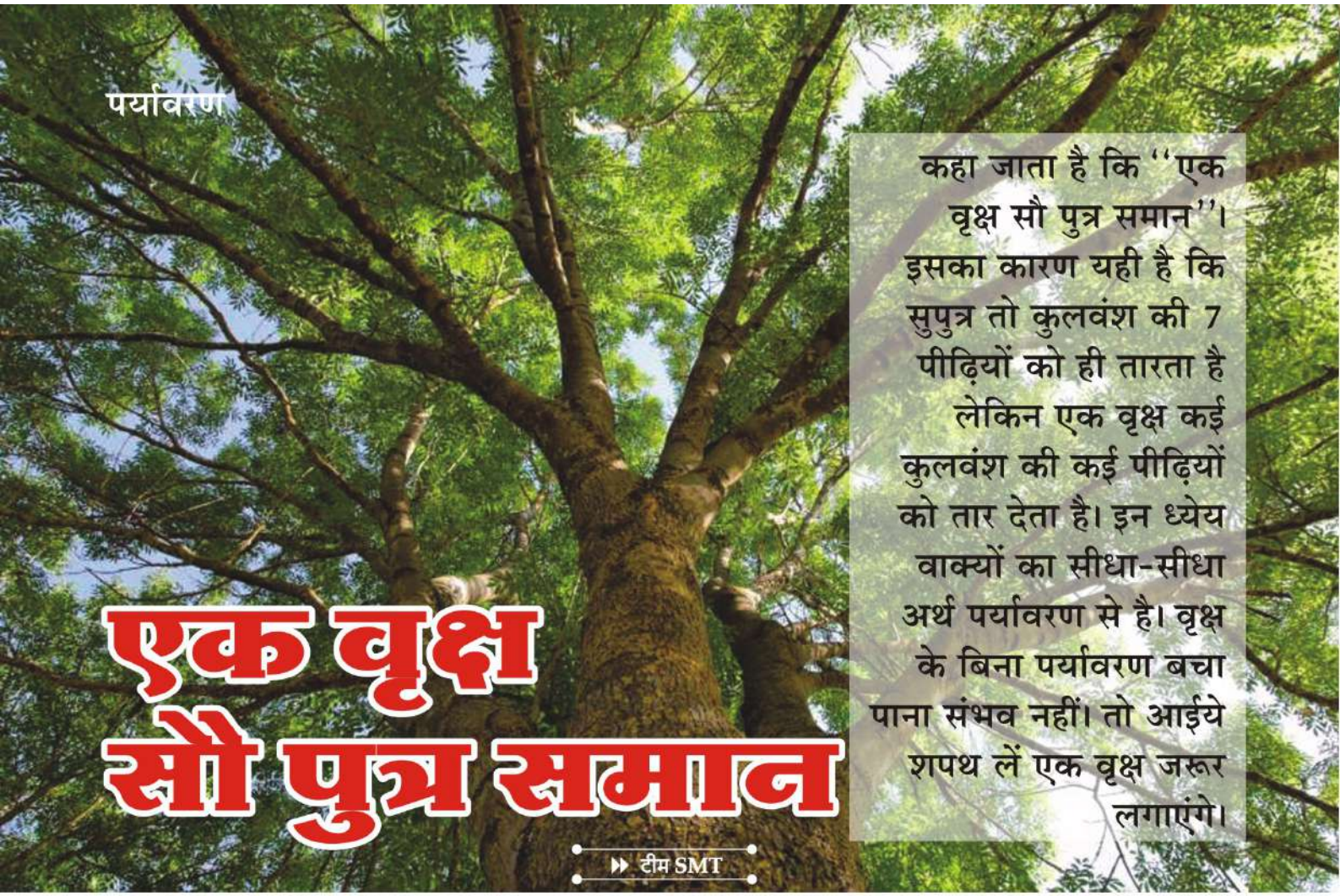

एक वृक्ष सौ पुत्र समान

कहा जाता है कि ''एक वृक्ष सौ पुत्र समान''। इसका कारण यही है कि सुपुत्र तो कुलवंश की 7 पीढ़ियों को ही तारता है लेकिन एक वृक्ष कई कुलवंश की कई पीढ़ियों को तार देता है। इन ध्येय वाक्यों का सीधा-सीधा अर्थ पर्यावरण से है। वृक्ष के बिना पर्यावरण बचा पाना संभव नहीं। तो आईये शपथ लें एक वृक्ष जरूर लगाएंगे।

टीम SMT

शास्त्रों में लिखा गया है कि लाखों योनी के सत्कर्मों के पश्चात हमें मानव जीवन मिलता है और हमें धरती मां की गोद में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है। जिस मां के आंचल में मानव जन्म लेने के लिए हम लाखों योनी में से गुजरते हैं, आज वृक्षों का छेदन कर हम हमारी उसी धरती माता की कोख को उजाड़ रहे हैं और आने वाली पीढ़ी के लिए इस स्वर्ग को नर्क में बदलने का महापाप कर रहे हैं। आज वृक्षों की कमी की वजह से सारा विश्व किस अल्प या अतिवृष्टि से गुजर रहा है, उस वास्तविकता से कोई भी अनजान नहीं है। वृक्षों के छेदन से पर्यावरण के साथ जो छेड़छाड़ हो रही है, उसी के फलस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग जैसी भयावह समस्या से पूरा विश्व ग्रसित है। इन सब समस्याओं का समाधान यदि कुछ है, तो मात्र और मात्र पौधारोपण ही है, क्योंकि वृक्ष ही ऑक्सीजन का स्रोत हैं जो कि पर्यावरण को शुद्ध करते हैं, जल का संरक्षण करते हैं और तापमान को नियंत्रण में रखते हैं। वृक्ष ही आयुर्वेद के आधार स्तंभ हैं, जो भोजन के मुख्य स्रोत भी हैं और हमारे स्वास्थ्य की रक्षा भी करते हैं।

मानव जीवन का आधार हैं वृक्ष

सभी वृक्षों की एक आम विशेषता है कि वे दिन में प्रकाश संश्लेषण के समय दूषित वायु कार्बन डाईआक्साईड ग्रहण कर हमारी प्राण वायु ऑक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं। यदि हम स्वच्छ वायु में सांस ले पा रहे हैं, तो इसका श्रेय सिर्फ वृक्षों को ही जाता है। याद रखें वृक्ष नहीं होंगे तो हम भी नहीं होंगे। इतना ही नहीं ये हमारी अर्थव्यवस्था का आधार भी हैं। यदि व्यापारिक दृष्टि से भी देखें, तो अर्थव्यवस्था का साधन हैं वृक्ष। वृक्ष से फल-सब्जी, अन्न, ईंधन, फर्नीचर, खेलकूद के सामान, औषधी तथा अन्य कई चीजें मिलती हैं, जिनसे अर्थव्यवस्था को गति मिलती है व मानव जाति को रोजगार मिलता है। कागज, रबर तथा माचिस जैसे अनेक उद्योग पेड़ों पर ही आश्रित हैं। वृक्ष प्रॉपर्टी की कीमत भी बढ़ाते हैं क्योंकि पेड़-पौधों से आच्छादित प्रॉपर्टी की ओर लोग ज्यादा आकर्षित होते हैं।

सौ हकीम के बराबर है एक नीम

भारतीय संस्कृति में नीम का विशेष महत्व है। हमारे यहां आम धारणा रही है कि जहां नीम है, वहां रोग व मृत्यु नहीं आती। अमेरिका सहित कई देश इसे पेटेंट कराने में वर्षों से जुटे हैं। विदेशों में नीम को एक ऐसे पेड़ के रूप में पेश किया जा रहा है जो मधुमेह से लेकर कैंसर और न जाने किस-किस तरह की बीमारियों का इलाज कर सकता है। कारण यही है कि नीम के औषधीय गुणों को घरेलू नुस्खों में उपयोग कर स्वस्थ व निरोगी बना जा सकता है। नीम एक चमत्कारी वृक्ष माना जाता है, जो प्रायः सर्व सुलभ मिल जाता है। यह पूरे भारत में फैला है और हमारे जीवन से जुड़ा है। नीम एक बहुत ही अच्छी वनस्पति है जो भारतीय पर्यावरण के अनुकूल है और भारत में बहुतायत में पाया जाता है। भारत में इसके औषधीय गुणों की जानकारी हजारों सालों से रही है। यही कारण है कि नीम हमारे लिए अति विशिष्ट व पूजनीय वृक्ष है। नीम को संस्कृत में ''निंब'' वनस्पति कहते हैं।

ईश्वर का साक्षात् प्रतीक पीपल

विशिष्ट भारतीय संस्कृति में पीपल वृक्ष को बहुत पवित्र एवं पूज्य माना जाता है। कहा गया है कि पीपल के वृक्ष में देवता निवास करते हैं। इसका अर्थ यह है कि पीपल में अनेक विशिष्ट गुण हैं। एकमात्र पीपल का वृक्ष ही है जो चौबीसों घंटे प्राणवायु देकर वातावरण को शुद्ध एवं स्वास्थ्यप्रद बनाए रखने का कार्य करता है। अतः यह गुण उसे स्वतः ही पूज्यनीय बना देता है। पीपल को भगवान शंकर के रूप में भी पूजा जाता है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार समुद मंथन से प्राप्त विष को भगवान शंकर ने पीकर पृथ्वी को बचाया उसी तरह पीपल का वृक्ष भी वातावरण से जहरीली गैसों को निरंतर पीते रहकर मानव जाति को चौबीसों घंटे ऑक्सीजन देकर कल्याण करता है। यह एक प्रकार से ऑक्सीजन यंत्र है है। अतः फेफड़ों, दमा व अस्थमा के रोगियों को इसकी छाया में बैठने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके संपर्क में रहने वाले व्यक्ति की आयु लंबी एवं शरीर स्वस्थ रहता है। पीपल के वृक्ष की जड़, टहनियां, पत्ते, फल, छाल, गोंद तथा रस व रेशे आदि सभी अंग मनुष्य को निरोग बनाने में सहायता करते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में इसके चिकित्सीय गुणों को विस्तार से वर्णित किया गया है।

पौधारोपण वास्तव में पर्यावरण रक्षा में हमारा परम कर्तव्य है, लेकिन आवास में स्थान की कमी से अक्सर प्रश्न उठते हैं कि हम कौन सा पौधा कहां लगाएं? इसका उत्तर दे रहे हैं भीलवाड़ा निवासी ख्यात पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू।

कौन सा पौधा कहां लगाएं?

आवासगृहों के बाहर अशोक, मोलश्री, करंज अथवा फूलदार-अमलतास, कचनार, गुलमोहर, जखरंडा के पौधे लगा सकते हैं। आवासगृहों के अंदर क्यारियों में गुलाब, मोगरा, रातरानी, दिन का राजा, गुड़हल, एग्जोरा, चांदनी, चंपा, हारश्रृंगार, मीठानीम जैसे उपयोगी अथवा फल वाले वाले नींबू जैसे अमरूद, चीकू, अनार, किन्नू, सीताफल, आंवला लगा सकते हैं। यदि आवासगृहों के बाहर ऊपर बिजली के तार हों तो बॉटलब्रश, चंपा, हारश्रृंगार, चांदनी, कनेर, गुड़हल, फायकस जैसे पौधे लगाएं। स्कूलों, अस्पतालों, श्मशानों, देवबनों में सार्वजनिक स्थलों में चलने वाले नीम, बरगद, पीपल, शीशम, करंज, जामुन, गुंदा, टीमरू, सीरस, बैर, कीकर, ईमली, आंवला, आम जैसे पौधे लगाएं।

आवासगृहों के बाहर व सार्वजनिक स्थलों दोनों जगह बोगनवेलिया, अलमुंडा बेल पीले फूलवाली, सवेरा बेल, मधुमालती, चमेली, जूही, बंगला बेल, परदा बेल गमले वाले धूप में चलने वाले पौधे सायकस फायकस, जेट प्लांट, योका, लोलिना, एग्जोरा, यूफोबिबया, एडीनियम लगा सकते हैं। घर में स्थान कम हो तो गमले वाले छाया में चलने वाले पौधे-एरूकेरिया, क्रॉटन, टोपीकृष्णा, ड्रेसिना चार तरह के, एरिकापाम, मनी प्लांट, सप्लेरा, स्नेक प्लांट, चाइना पाम, फोनिसपाम, सिंगोनिया, कोलिश, सन ऑफ इंडिया लगाऐं। इन्हें छायादार स्थानों पर लगाया जा सकता है। आवासगृहों के अंदर चलने वाले पौधे-एरूकेरिया, कृष्णा टोपी, मनी प्लांट, एरिकापाम, फोनिसपाम, साइकस आदि भी घर के अंदर लगा सकते हैं।

कैसे करें पौधारोपण

पौधा लगाने के लिए गड्ढा कम से कम 2 बाय 2 बाय 2 घनफीट का होना चाहिए। पीली मिट्टी, थोड़ी सी रेत और थोड़ी सी मिंगड़ियों की खाद डाल दी जाए और पौधा लगाते समय पॉलिथिन की थैली को हटाते समय पिंड नहीं टूटना चाहिए, तो पौधे के चलने की संभावना शत-प्रतिशत होती है। वर्षाऋतु में लगाए गए पौधों के शत-प्रतिशत चलने की संभावना रहती है। सदियों में पौधों को पानी पांच से सात दिन में दिया जा सकता है। गर्मी में हर दूसरे दिन देना जरूरी होता है और पौधों की निंदाई-गुड़ाई 15 दिन में एक बार हो तो पौधा अच्छा खिलखिला उठता है।

'पर्यावरण' का संक्षिप्त अर्थ है, हमारे चहुंओर का संपूर्ण वातावरण। पर्यावरण का संतुलन कितना आवश्यक है, इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि हमारे वेद, पुराण हों या प्राचीन शिलालेख अथवा पंचतंत्र की कथा या अन्य कोई धर्मग्रंथ लगभग सभी में इसका महत्व प्रतिपादित है। कारण यही है कि हम जागेंगे, तभी बचेगा पर्यावरण और पर्यावरण बचेगा, तभी हम।

हम जागेंगे तभी बचेगा पर्यावरण

राजकुमार आर. जाजू, वर्धा

सजीव, निर्जीव, हवा, जमीन और पानी इन सारी बातों का समावेश अर्थात अपने चहुंओर जो भी दिखता है, वह है पर्यावरण। इस पृथ्वी पर चर-अचर का संबंध अटूट है। यह संबंध ही पर्यावरण का जनक है। इसका आधार संतुलन है। संतुलन डगमगाया नहीं कि पर्यावरण का ताना-बाना छिन्न-भिन्न होते देर नहीं लगती। हमने अपनी जरूरतों के लिए जंगल काट दिये और इससे वन्य जीवों का नाश हो गया जो कि पर्यावरण संतुलन से संबंध रखते थे। बड़ी-बड़ी इमारतों, उद्योगों एवं रास्तों के निर्माण के लिए पहाड़ उजाड़ दिए। नदियों के पानी को पीने या नहाने लायक नहीं छोड़ा। कीटनाशकों के छिड़काव एवं रासायनिक खादों से हमने धरती की उर्वरा शक्ति घटा दी। पॉलिथीन हमारी जिंदगी का हिस्सा बनकर पर्यावरण के गले में फांस की तरह अटक रहा है। पैदल चलना हम भूल चुके हैं। बढ़ती आबादी से बढ़ते वाहनों ने जहरीला धुआँ छोड़कर तथा मोबाइल आदि की तरंगों ने हवा को भी प्रदूषित कर दिया है। महात्मा गांधी ने कहा था कि कुदरत हमारी जरुरतों को तो पूरा कर सकती हैं, लेकिन लालच को नहीं। पर गांधीजी को कौन याद रखता है? और जब वैज्ञानिकों ने चेतावनियां देना आरंभ किया, पर्यावरण प्रदूषण समस्या गंभीर हुई तब संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 1972 में महासभा में 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' घोषित किया।

अब प्रकृति होने लगी है नाराज

पर्यावरण के साथ मनुष्य की छेड़छाड़ ने मौसम का मिजाज बदल दिया है। प्रकृति नाराज हो उठी है। यह विडंबना है कि एक ओर जहां उत्तर भारत लू के थपेड़े झेल रहा है, वहीं पश्चिमी तट पर बेमौसम भीषण तूफान आ रहे हैं। फसलें चौपट होने से ढेरों किसान आत्महत्या कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र पॅनल की नवीनतम रिपोर्ट में आशंका जताई गई है कि तापमान बढ़ने (ग्लोबल वार्मिंग) से 'भारत' सर्वाधिक प्रभावित होने वाले देशों में शुमार हो सकता है। पहले तो कहा गया कि दुनिया सुंदर होती जा रही है लेकिन पर्यावरण में कुछ ऐसी हलचलें होने लगी कि औद्योगिकरण के इस सरपट भागते घोड़े पर लगाम लगाने की बात होने लगी लेकिन ब्रेक लगाना इतना आसान नहीं होता। जब हम कोयला जलाते हैं या तेल का उपयोग करते हैं तो वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों को पहुंचाते हैं और प्रदूषण बढ़ाते हैं। इन गैसों को ग्रीनहाउस गैस इसीलिए कहा जाता है क्योंकि उनके प्रभाव से वायुमंडल एक अदृश्य आवरण से ढंक जाता है, जिसके कारण गर्म पृथ्वी अपना 'बुखार' कम करने में असमर्थ हो जाती है और उसका तापमान वैसे ही कृत्रिम रूप से बढ़ जाता है। रैफ्रिजरेटरों, एयरकंडीशनरों तथा एयरोसेल स्प्रे में प्रयुक्त होने वाले रसायनों से भी ग्रीनहाऊस गैसों का घनत्व बढ़ता है।

नहीं संभले तो होगा महाविनाश

तटीय विपदा : ग्लोबल वार्मिंग के कारण सन 2100 तक समुद्र का जल स्तर 40 से.मी. तक बढ़जायेगा और भारत के तटीय इलाकों में 5 करोड़ लोग विस्थापित हो जायेंगे। सन 2020 तक मुंबई का गेटवे ऑफ इंडिया आधे से अधिक डूब जायेगा।

मैदानी इलाकों में आफत : शीत ऋतु की अवधि घट जायेगी जिससे पानी की कमी हो जायेगी। चरागाहों का आकर घट जायेगा और चारे की समस्या पैदा हो जायेगी।

डेंगू जैसी महामारी : मच्छरों की आबादी और किस्में बढ़ेंगी और इनसे डेंगू तथा मलेरिया जैसी बीमारियाँ तेजी से बढ़जायेंगी। पैचिस, हैजा और कुपोषण जैसी बीमारियाँ मौत का तांडव रचती हुई कहर बरपा देंगी।

हिमनदों का का पिघलना : तिब्बत के पठारों पर हिमनद तेजी से पिघलने लगेंगे और 2030 तक इनका आकार 5 लाख वर्ग कि.मी. से घटकर 1 लाख वर्ग कि.मी. रह जायेगा। पहले तो नदियों में भयंकर बाढ़ आयेगी, फिर नदियाँ तेजी से सूखने लगेंगी। गंगा का पठार तो पूरी तरह बंजर हो सकता है। रेगिस्तान फैलता ही जायेगा।

समुद्री संकट : समुद्रों के अधिक गर्म होने से ब्लीचिंग की प्रक्रिया शुरू होगी। सीपियों, शंखों, मछलियाँ एवं समुद्री जीवों आदि का विनाश होगा।

नष्ट होंगे वन : अनियमित बारिश और ठंड की तीव्रता घटने से भारत के जंगल तेजी से कम होंगे। जैव-विविधता नष्ट हो जायेगी।

बदतर हालात : फैलते रेगिस्तान के कारण उत्तर भारत में दुश्वारियां बढ़ेंगी। भारत में अनाज कम से कम 33 प्रतिशत तक घट जायेगा। सबसे ज्यादा असर गेहूँ की पैदावार पर होगा। पानी की किल्लत आम हो जाएगी।

पर्यावरण के लिये क्या करें हम

ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायें : देश की आबादी तेजी से बढ़ रही है। इससे मनुष्यों को सांस लेने के लिए अधिक ऑक्सीजन की जरूरत पड़ेगी। पेड़ कार्बन डाय ऑक्साईड सोखते हैं और भरपूर मात्रा में 'प्राणवायु' देते हैं। यदि एक व्यक्ति एक भी पेड़ लगा दे तो कई अन्य पेड़ बड़े होने लगेंगे। लोगों को यह बताया जाना जरूरी है कि एक पत्ता अपने जीवनकाल में इतना ऑक्सीजन उत्पादित करता है जिससे एक आदमी चार दिनों तक सांस ले सकता है। एक बड़ा पेड़ अपने जीवनकाल में करीब साढ़े तीन सौ करोड़ रुपये के बराबर तक की सेवाएँ प्रदान करता है।

जल संरक्षण : अपने मैदान या फसलों की सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर

या ड्रिप-इरिगेशन उपकरणों का इस्तेमाल करें। जल संरक्षण के लिये रैन वॉटर हार्वेस्टिंग जैसी पद्धति तत्काल अपनाना होगी। खुली जगहों पर पेड़-पौधे या घास उगाकर हम पानी रोक सकते हैं। खेल, खलिहान, मकान या दुकान जहाँ कहीं भी पानी बह रहा हो उसे सहेजकर जमीन में उतारना होगा।

पैदल चलें- गाड़ी से नहीं : अगर आपको चिप्स या पान खरीदना हो तो मुहल्ले की दुकान तक पैदल जाएं, गाड़ी से नहीं। अगर गाड़ी से ही जाना हो तो एक साथ कई काम कर लें। हो सके तो साइकिल का इस्तेमाल करें, जिससे बचत तो होगी, व्यायाम भी हो जायेगा। वातावरण भी कार्बन-डाय-ऑक्साईड गैस से प्रदूषित होने से थोड़ें अंश से ही सही बच जायेगा।

पॉलीथिन बैग्ज का प्रयोग न करें : पॉलीथिन थैलियां जमीन में दब जाने से धरती बंजर हो जाती है। पशुओं के लिए ये जानलेवा साबित हो रही है। कचरे के साथ इन्हें जलाने से जहरीली गैसों से वायु प्रदूषित हो रही है। जल की निकासी इनसे अवरूद्ध हो जाती है। अतः इनकी जगह कागज के लिफाफों का उपयोग करें।

बायोफ्युल अपनाएं : बायोडीजल से लेकर एथेनॉल जैसे प्राकृतिक ईंधन पर चलने वाली कारों का इस्तेमाल करें।

बिजली की बचत : लंबे समय तक चलने वाले व एक चौथाई ही बिजली खपत करने वाले सीएफएल व एलईडी लगाएं। जब काम हो जाए कम्प्यूटर, लाईट, गीजर आदि उपकरण तत्काल बंद कर दें।

सौर उपकरण लगाएं : सोलर हीटर, सोलर गिजर, सोलर कुकर जैसे उपकरण पर्यावरण के लिए बेहतर साबित हो रहे हैं।

पवन ऊर्जा का प्रयोग करें : हम अपने घर पवन चक्की तो नहीं लगा सकते पर 'सेज' में कारखाना लगा रहे हैं तो पवन- ऊर्जा को बढ़ावा देने की वकालत तो कर ही सकते हैं।

स्वच्छ प्रौद्योगिकी की मांग करें : सरकार पर दबाव डालें कि वे विकसित देशों से पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकी खरीदें ताकि हम अनुसंधान और विकास पर मोटी रकम खर्च किए बगैर उत्सर्जन की मात्रा कम कर सकें।

टायर प्रेशर चेक करें : वाहनों के टायरों का परीक्षण करते रहें। पर्याप्त हवा से ईंधन कम खपत होता है।

पर्यावरण के अनुकूल भवन बनाएं : हम ऐसे वास्तुकार की मदद ले सकते हैं जो ऊर्जा के अधिकतम इस्तेमाल का तरीका जानता हो।

हवाई यात्रा कम करें : इसकी जगह अगर फोन या ई मेल से काम हो सकता है, तो ऐसा ही करें। पैसा भी बचेगा और दुनिया कार्बन डायऑक्साईड के उत्सर्जन से भी बचेगी।

दूसरों को भी शिक्षित करें : भले ही आप प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित कर रहे हों, लेकिन आपका पड़ोसी अगर ऐसा नहीं कर रहा है तो आपको कोई खास फायदा नहीं हो रहा है।

कम उपयोग करें : आप 'योगी न बनें' पर कुछ अतिरिक्त खरीदते वक्त स्वयं से पूछें कि क्या आपको वाकई इसकी जरूरत है।

सभी समझें अपनी जिम्मदारियां

हम चाहे जितने भी धनी हो जायें और कितने भी विकसित हो जाऐं, उससे हमारा जीवन नहीं चलने वाला। पर्यावरण की सुरक्षा पर ही हमारा जीवन निर्भर है। लोगों को जागरुक करने और पर्यावरण से जुड़ी बुनियादी समस्याओं का अध्ययन कर लेने के बाद जरूरी है कि अब नीति बनाने वाले लोगों पर दबाव बनाया जाये ताकि वे औद्योगिकीकरण से लेकर आवास की समस्या हल करने तक जो भी नीति बनायें उसमें पर्यावरण सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। हमें यह मानसिकता बदलनी होगी कि पहले विकास कर लें और फिर पर्यावरण के बारे में सोचेंगे। दोनों काम साथ-साथ करने होंगे। तीसरी बात यह है कि पर्यावरण सुरक्षा की नीतियों में आम लोगों को तथा गैर-सरकारी संस्थाओं को भी शामिल करना होगा। स्कूल, कॉलेजेस में आरंभ से ही पर्यावरण विषय अनिवार्य करना होगा। जनमानस में भी चेतना जगाने के लिए स्पर्धाओं के माध्यम से ही सही 'पर्यावरण' विषय चर्चा में रखना होगा। यदि हम ऐसा कर पाये तो अब भी बहुत देर नहीं हुई है। आइये हम हमारे बच्चों को प्रदूषण मुक्त, स्वच्छ एवं बिल्कुल नैसर्गिक पर्यावरण उपहार में देकर जाने का संकल्प करे

पेड़ धरती पर सबसे पुराने लीविंग आर्गनिज्म हैं और ये कभी भी ज्यादा उम्र की वजह से नहीं मरते।

हर साल 5 अरब पौधे लगाए जा रहे हैं लेकिन हर साल 10 अरब पेड़ काटे भी जा रहे हैं।

देशों की बात करें, तो दुनिया में सबसे ज्यादा पेड़ रूस में हैं। उसके बाद कनाडा में, उसके बाद ब्राजील में फिर अमेरिका में और उसके बाद भारत में केवल 35 अरब पेड़ बचे हैं।

दुनिया की बात करें, तो 1 इंसान के लिए 422 पेड़ बचे हैं, लेकिन अगर भारत की बात करें तो 1 हिंदुस्तानी के लिए सिर्फ 28 पेड़ बचे हैं।

पेड़ों की कतार धूल-मिट्टी के स्तर को 75 प्रतिशत तक कम कर देती है और 50 प्रतिशत तक शोर को कम करती है।

एक पेड़ इतनी ठंड पैदा करता है जितनी 1 एसी 10 कमरों में 20 घंटों तक चलने पर करता है। जो इलाका पेड़ों से घिरा होता है वह दूसरे इलाकों की तुलना में 9 डिग्री ठंडा रहता है।

पेड़ अपनी 10 प्रतिशत खुराक मिट्टी से और 90 प्रतिशत खुराक हवा से लेते हैं। एक पेड़ एक साल में 2,000 लीटर पानी धरती से चूस लेता है।

एक एकड़ में लगे हुए पेड़ 1 साल में इतनी कार्बन डाई आक्साइड सोख लेते हैं, जितनी एक कार 41,000 किमी चलने पर छोड़ती है।

दुनिया की 20% oxygen अमेजन के जंगलों द्वारा पैदा की जाती है। ये जंगल 8 करोड़ 15 लाख एकड़ में फैले हुए हैं।

इंसानों की तरह पेड़ों को भी कैंसर होती है। कैंसर होने के बाद पेड़ कम ऑक्सीजन देने लगते हैं।

पेड़ की जड़ें बहुत नीचे तक जा सकती हैं। दक्षिण अफ्रीका में एक अंजीर के पेड़ की जड़ें 400 फीट नीचे तक पाई गई थीं।

दुनिया का सबसे पुराना पेड़ स्वीडन के डलारना प्रांत में है। टीजिक्को नाम का यह पेड़ 9,550 साल पुराना है। इसकी लंबाई करीब 13 फीट है।

किसी एक पेड़ का नाम लेना मुश्किल है लेकिन तुलसी, पीपल, नीम और बरगद दूसरों के मुकाबले ज्यादा ऑक्सीजन पैदा करते हैं।

कल तभी है जब जल है

हमारे देश में 12 माह नदियां कल-कल बहती थीं और पीने का पानी तो सहज ही हर कहीं उपलब्ध हो जाता था। आज दृश्य तेजी से बदलता जा रहा है। अब पेयजल के लिए गर्मी के दिनों में तो मारामारी मच जाती है। सोचें कि यही स्थिति रही तो आने वाला हमारा 'कल' कितना भयावह होगा?

श्याम पलौड, उज्जैन

यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि भारत में वर्षा के मौसम में एक क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति होती है जबकि दूसरे क्षेत्रों में भयंकर सूखा होता है। पर्याप्त वर्षा के बावजूद लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसते हैं तथा कई जगह संघर्ष की स्थिति भी पैदा हो जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि हमने प्रकृति प्रदत्त अनमोल वर्षा जल का संचय नहीं किया और वह व्यर्थ में बहकर दूषित जल बन गया। वहीं दूसरी ओर मानवीय लालसा के परिणामस्वरूप भूजल का अंधाधुंध दोहन किया गया, परंतु धरती से निकाले गए इस जल को वापस धरती को नहीं लौटाया। इससे भू-जलस्तर गिरा तथा भीषण जलसंकट पैदा हुआ। एक अनुमान के अनुसार विश्व के लगभग 1.4 अरब लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है। प्रकृति ने अनमोल जीवनदायी संपदा 'जल' को हमें एक चक्र के रूप में दिया है। इस जल चक्र का निरंतर गतिमान रहना अनिवार्य है। अतः प्रकृति के खजाने से जो जल हमने लिया है उसे वापस भी हमें ही लौटाना होगा, क्योंकि हम स्वयं जल नहीं बना सकते। अतः हमारा दायित्व है कि हम वर्षाजल का संरक्षण करें तथा प्राकृतिक जलस्रोतों को प्रदूषण से बचाएं और किसी भी कीमत पर पानी को बर्बाद न होने दें।

वर्षाजल संचय सबसे कारगर उपाय

जलसंकट को लेकर हमें हाथ-पर-हाथ धरकर नहीं बैठ जाना चाहिए। इससे निपटना जरूरी है तभी हमारा आज और कल (वर्तमान एवं भविष्य) सुरक्षित रहेगा। इसके लिये कई वैज्ञानिक तरीके हैं जिनमें सबसे कारगर तरीका है-रेन वाटर हार्वेस्टिंग- अर्थात वर्षाजल का संचय एवं संग्रह करके इसका समुचित प्रबंधन एवं आवश्यकतानुसार आपूर्ति। दूसरे शब्दों में हमने जो प्रकृति से लिया है, वह प्रकृति को ही वापस लौटाना भी है। यदि वर्षाजल के संग्रहण की समुचित व्यवस्था हो तो न केवल जलसंकट से जूझते शहर अपनी तत्कालीन जरूरतों के लिए पानी जुटा पाएंगे बल्कि इससे भूजल भी रिचार्ज हो सकेगा। अतः शहरों के जल प्रबंधन में वर्षाजल की हर बूंद को सहेजकर रखना जरूरी है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही जल संचय की परंपरा थी तथा वर्षाजल का संग्रहण करने के लिए लोग प्रयास करते थे। इसीलिए कुएं, बावड़ी, तालाब, नदियां आदि पानी से भरे रहते थे। इससे भू जलस्तर भी ऊपर हो जाता था तथा सभी जलस्रोत रिचार्ज हो जाते थे। परंतु मानवीय उपेक्षा, लापरवाही, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के कारण ये जलस्रोत मृत प्रायः हो गए।

दूसरे देश हमसे अधिक सजग

वर्षाजल संरक्षण (रेन वाटर हार्वेस्टिंग) का इतिहास काफी पुराना है। विश्व विरासत में सम्मिलित जार्डन के पेट्रा में की गई पुरातात्विक खुदाई में ईसा पूर्व सातवीं सदी में बनाए गए ऐसे हौज निकले जिनका इस्तेमाल वर्षाजल को एकत्र करने में किया जाता था। इसी प्रकार श्रीलंका स्थित सिजिरिया में बारिश के पानी को एकत्र करने के लिए रॉक कैचमेंट सिस्टम बना हुआ था। यह सिस्टम ईसा पूर्व 425 में बनाया गया था। इसे भी विश्व विरासत में सम्मिलित किया गया है। भारत में भी राजस्थान प्रदेश के थार क्षेत्र में 4500 वर्ष पूर्व बारिश के पानी को एकत्र करने के प्रमाण हड़प्पा में की गई खुदाई के दौरान पाए गए। इजराइल, सिंगापुर,

चीन, आस्ट्रेलिया जैसे कई देशों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग पर काफी समय से काम हो रहा है। अब समय आ चुका है जबकि भारत में भी इस तकनीक को अनिवार्यतः लागू करने के लिए जन-जागरण को प्रोत्साहन दिया जाए। यह अत्यंत आसान तकनीक है। इसके अंतर्गत वर्षाजल को व्यर्थ बहने से रोककर इसे नालियों/पाइप लाइनों के माध्यम से इस प्रकार संग्रहीत किया जाता है ताकि इसका उपयोग फिर से किया जा सके। भूजल भंडारों में वर्षाजल द्वारा भंडारण बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान जलसंकट में यह न केवल जरूरी है, बल्कि बेहद सस्ता व फायदेमंद भी है। इससे हमारे जल भंडार भर जाएंगे तथा जलस्तर भी ऊपर पहुंच जाएगा।

कहां अधिक उपयोगी है वाटर हार्वेस्टिंग

सामान्यतया वर्षाजल संग्रहण कहीं भी किया जा सकता है, परंतु इसके लिए वे स्थल सर्वथा उपयुक्त होते हैं जहां पर जल का बहाव तेज होता है और जल शीघ्रता से बह जाता है। इस प्रकार जल संग्रहण के लिए सर्वथा उपयुक्त होते हैं 1. कम भूजल वाले स्थल, 2.दूषित भूजल वाले स्थल, 3. पर्वतीय/विषम जल वाले स्थल, 4. सूखा या बाढ़प्रभावित स्थल, 5. प्रदूषित जल वाले स्थल, 6. कम जनसंख्या घनत्त्व वाले स्थल, 7. अधिक खनिज व खारा पानी वाले स्थल, एवं 8. महंगे पानी व विद्युत वाले स्थल आदि। सामान्यतः वर्षाजल शुद्ध जल होता है तथा इसका उपयोग सभी कार्यों के लिए किया जा सकता है। तथापि बर्तनों की साफ-सफाई, नहाना व कपड़ा धोना, शौच आदि कार्य, सिंचाई के लिए, मवेशियों के पीने, नहाने आदि के लिए एवं औद्योगिक उपयोग आदि में यह सर्वथा उपयुक्त है।

कैसे करें रेन वाटर हार्वेस्टिंग

सीधे जमीन के अंदर : इस विधि के अंतर्गत वर्षाजल को एक गड्ढे के माध्यम से सीधे भूजल भंडार में उतार दिया जाता है।

खाई बनाकर रिचार्जिंग : इस विधि से बड़े संस्थान के परिसरों में बाउंड्रीवॉल के साथ-साथ बड़ी-बड़ी नालियां (रिचार्ज ट्रेंच) बनाकर पानी को जमीन के भीतर उतारा जाता है। यह पानी जमीन में नीचे चला जाता है और भूजल स्तर में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

कुओं में पानी उतारना : वर्षाजल को मकानों के ऊपर की छतों से पाइप द्वारा घर के या पास के किसी कुएं में उतारा जाता है। इस ढंग से न केवल कुआं रिचार्ज होता है, बल्कि कुएं से पानी जमीन के भीतर भी चला जाता है। यह पानी जमीन के अंदर के भूजलस्तर को ऊपर उठाता है।

ट्यूबवेल में पानी उतारना : भवनों की छत पर बरसाती पानी को संचित करके एक पाइप के माध्यम से सीधे ट्यूबवेल में उतारा जाता है। इसमें छत से ट्यूबवेल को जोड़ने वाले पाइप के बीच फिल्टर लगाना आवश्यक हो जाता है। इससे ट्यूबवेल का जल हमेशा एक समान बना रहता है।

टैंक में जमा करना : भूजल भंडार को रिचार्ज करने के अलावा बरसाती पानी को टैंक में जमा करके रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। इस विधि से बरसाती पानी का लंबे समय तक उपयोग किया जा सकता है। एक हजार वर्गफीट की छत वाले छोटे मकानों के लिए यह तरीका बहुत ही उपयुक्त है।

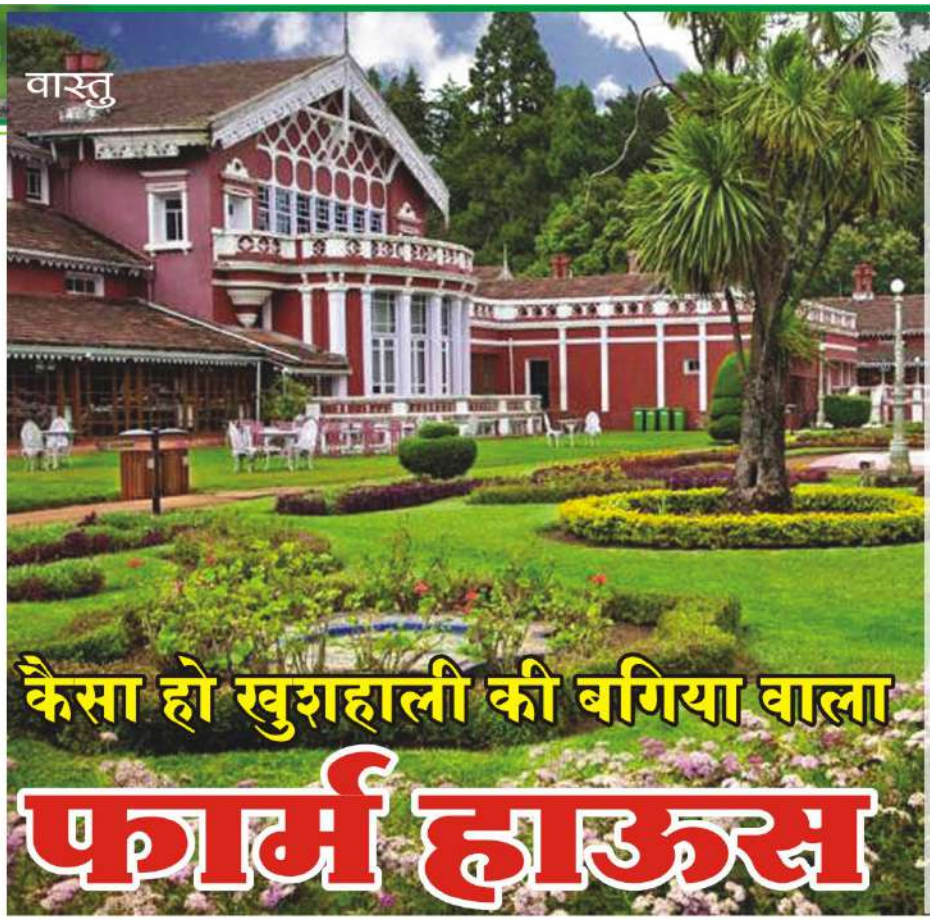

कैसा हो खुशहाली की बगिया वाला फार्म हाऊस

बढ़ते प्रदूषण वाले आज के दौर में फार्म हाउस वास्तव में ''खुशहाली की बगीया'' ही बन चुके हैं, जहां जीवन की भागमभाग से दूर स्वच्छ हवा व स्वस्थ्य वातावरण मिलता है इसका निर्माण हम करते तो हैं, अपने पूरे परिवार को खुशहाली की सौगात देने के लिये लेकिन वास्तु विरुद्ध निर्माण होने पर ये आपदाओं का कारण भी बन जाते हैं। आइये देखें वास्तु के आइने में, कैसा हो हमारा फार्म हाऊस?

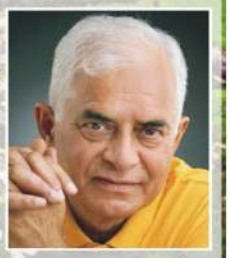

▸▸ कुलदीप सलूजा, उज्जैन

■ फार्म हाउस ऐसी जगह बनाएँ या खरीदें, जिसके उत्तर-पूर्व में गहरे गड्ढे, तालाब नदी आदि हो, दक्षिण-पश्चिम टीले हो तो फार्म हाउस आपकी प्रसिद्धि और समृद्धि के लिए वरदान सिद्ध होगा।

■ अच्छे आर्थिक लाभ के लिए वह जमीन जहां आप फार्म हाउस का निर्माण करना चाहते हैं उसका आकार वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए। जमीन अनियत आकार की न हो। जमीन का दक्षिण पश्चिम कोना 90° का होना चाहिए, साथ ही जमीन पर निर्माण कार्य करते समय उत्तर व पूर्व दिशा में ज्यादा खुली जगह छोड़नी चाहिए।

■ फार्म हाउस की जमीन की उत्तर, पूर्व एवं ईशान दिशा का दबा, कटा एवं गोल होना बहुत अशुभ होता है, इससे फार्म हाउस के मालिक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत जमीन की इन दिशाओं का बड़ा होना बहुत शुभ होता हैं यदि जमीन की यह दिशाएँ दबी, कटी या गोल हों, तो इन्हें शीघ्र बढ़ाकर या घटाकर समकोण करके इसके अशुभ परिणामों से बचना करना चाहिए।

■ फार्म हाउस में स्वीमिंग पूल, कृत्रिम जलप्रपात, तालाब इत्यादि का निर्माण उत्तर या पूर्व दिशा में करवाना चाहिए। कुआँ या बोरिंग पूर्व दिशा में करवाना चाहिए। कुआँ या बोरिंग ईशान कोण में होना चाहिए। इसके विपरीत अन्य किसी भी दिशा में इनका होना अशुभ होता है। फार्म हाउस के मध्य में स्वीमिंग पूल का निर्माण भयंकर आर्थिक कष्ट देता है।

■ फार्म हाउस की अच्छी सफलता के लिए उत्तर, ईशान व पूर्व का भाग दक्षिण, नैऋत्य व पश्चिम भाग की तुलना में नीचा होना चाहिए। जमीन का इन दिशाओं में ऊँचा होना दुर्भाग्य को आमंत्रित करता है। जमीन का ईशान कोण या उत्तर पूर्व दिशा ऊँची हो तो वहा की मिट्टी निकालकर दक्षिण पश्चिम दिशा या नैऋत्य कोण में डालकर जमीन को समतल कर देना चाहिए।

■ चहारदीवारी एवं भवन का मुख्य द्वार पूर्व ईशान, दक्षिण आग्नेय, पश्चिम वायव्य और उत्तर ईशान में कहीं भी रखा जा सकता है, परंतु मुख्य द्वार कभी भी पूर्व आग्नेय, दक्षिण नैऋत्य, पश्चिम नैऋत्य या उत्तर वायव्य में नहीं होना चाहिएं विशेष-दक्षिण नैऋत्य या पश्चिम नैऋत्य में किसी भी स्थिति में प्रवेश द्वार नहीं होना चाहिए।

■ फार्म हाउस के मुख्य द्वार के सामने कोई बाधा होती है तो उसे द्वार वेध कहा जाता है। जैसे बिजली का खंभा, स्तम्भ, वृक्ष इत्यादि। यह बाधा अशुभ होती है, जो आपके फार्म हाउस के विकास में रुकावटें पैदा करती हैं। यदि फार्म हाउस और बाधा के मध्य सार्वजनिक सड़क हो, तो यह दोष खत्म हो जाता हैं। फार्म हाउस के मुख्य द्वार के दायें-बायें व पीछे ऐसी बाधा हो तो यह दोष नहीं होता है।

■ अपनी आस्था के अनुसार, फार्म हाउस के के मुख्य द्वार के बाहर मांगलिक प्रतीकों को प्रदर्शित करना चाहिए जैसे स्वस्तिक, ऊँ, त्रिशूल, क्रॉस इत्यादि। इससे सौभाग्य में वृद्धि होती है।

■ फार्म हाउस कभी ऐसे स्थान पर न बनाएँ जहाँ ऊपर से हाईटेंशन बिजली की तारें निकलती हों। इनसे निकलने वाली इलेक्ट्रो मैगनेटिक तरंगें काफी खतरनाक होती हैं व वहाँ रहने वालों के स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगी।

■ ट्रांसफार्मर, जेनरेटर अन्य विद्युत उपकरणों की व्यवस्था नैऋत्य कोण में ही करनी चाहिए। फार्म हाउस में रसोईघर का निर्माण मध्य उत्तर दिशा या मध्य पश्चिम दिशा में से कहीं भी की जा सकता है। डाइनिंग हॉल पश्चिम में रखना चाहिए।

■ फार्म हाउस में रहने के कमरे दक्षिण पश्चिम या नैऋत्य कोण में बनाने चाहिए और कमरों में पूर्व उत्तर की ओर ज्यादा खिड़कियाँ रखनी चाहिए। कमरों में पलंग इस प्रकार लगाने चाहिए कि सोने वालों के सिर दक्षिण में व पैर उत्तर में हों।

■ अच्छे स्वास्थ्य के लिए फार्म हाउस में पूजा का स्थान ईशान कोण में रखना चाहिए ताकि सूर्य से मिलने वाली सुबह की जीवनदायी किरणों का भरपूर लाभ लिया जा सकें।

■ सेप्टिक टैंक केवल पूर्व या उत्तर दिशा में ही बनाना चाहिए। यदि इन दोनों दिशाओं में किसी एक दिशा में स्वीमिंग पूल हो, तो दूसरी दिशा में बनाना चाहिए।

■ ओवर हैड वॉटर टैंक का निर्माण ईशान कोण एवं आग्नेय कोण को छोड़कर कहीं भी कर सकते हैं।

■ फार्म हाउस में बगीचे में सहारा लेकर ऊपर चढ़ने वाली बेल मुख्य द्वार व भवन के आस-पास न लगाएँ। इस प्रकार चढ़ने वाली बेलें कठिनाइयाँ पैदा करती हैं।

■ दूध वाले वृक्षों को फार्म हाउस में उगाना काफी अशुभ होता है, क्योंकि अधिकतर पेड़ों से निकलने वाला दूध जहरीला होता है। ऐसे पेड़-पौधों का दूध आँखों में चला जाए तो आँखें खराब हो जाती हैं, और कई बार आँखों की रोशनी तक चली जाती है।

■ ध्यान रहे, फार्म हाउस के बेड रूम के अंदर कभी भी पौधे नहीं रखने चाहिए, क्योंकि ये पौधे रात को कार्बन डाइआक्साइड छोड़ते हैं। इस कारण ऐसे बेड रूम में सोने वालों का स्वास्थ्य खराब होता है।

कोशिश, पुरजोर पर क्यों असफल रहते पौधारोपण अभियान

प्रतिवर्ष समाज संगठनों द्वारा जोर-शोर से पौधारोपण किया जाता है। इनके समाचारों से समाचार-पत्र इस तरह भरे होते है, जैसे कुछ ही वर्षों में सम्पूर्ण क्षेत्र वन से घिर जाऐगा। लेकिन हकीकत यह है कि हरियाली बढ़ नहीं रही, बल्कि दिनों-दिन और भी कम हो रही हैं अत: यह चिंतनीय है कि ऐसा क्यों हो रहा है? क्या पौधारोपण करके समाचार पत्रों में फोटो छपवाकर समाज संगठनों की जिम्मेदारी पूर्ण हो जाती है? आखिर पौधारोपण में उनकी भूमिका क्या होनी चाहिये? वर्तमान दौर में पर्यावरण संरक्षण सम्पूर्ण राष्ट्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिये चुनौती बन गया है। आईये जानें इस ज्वलंत विषय पर स्तंभ की प्रभारी मालेगांव निवासी सुमिता मूंदड़ा से उनके व समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

देखरेख का भी लें संकल्प

सभी को विदित है कि अधिकांशतः विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा आयोजित पौधारोपण अभियान महज एक दिखावा मात्र ही होता है। श्री माहेश्वरी टाइम्स पत्रिका का धन्यवाद देना चाहूंगी कि मत-सम्मत के जरिये मुझे सबकी राय जगजाहिर करने का अवसर मिला। आज मशीनी युग में हम इंसानों के लिए अपनी सांसों को बचाये रखने एवं स्वस्थ जीवनयापन करने के लिए सर्वाधिक आवश्यक कार्य है पर्यावरण का संरक्षण। भारत में विभिन्न पर्यावरण जागरूक अभियान भी चल रहे हैं जिसके तहत पौधारोपण किया जाता है, पर इसका पूर्ण लाभ नहीं मिलता। कारण स्पष्ट है कि पौधों का रोपण तो किया जाता है पर पोषण नहीं किया जाता। बस अपनी तसल्ली या लोकदिखावे के लिए हम पर्यावरण-पौधारोपण अभियान में जुड़ते हैं, नए-नए पेड़ लगाते हैं, तस्वीरें खिंचवाते हैं, सोशल मीडिया पर बढ़-चढ़कर तस्वीरों के साथ अपना प्रचार-प्रसार करते हैं, लोगों की वाह-वाही बटोरते हैं और पर्यावरण रक्षण की जिम्मेदारी को पूर्ण मान लेते हैं। एक बार भी अपने हाथों से आरोपित बीज/डाली को मुड़कर भी नहीं देखते कि वाकई में वह प्रफुल्लित हो भी रही है या नहीं? सच तो यह है कि इक्के-दुक्के पौधारोपण स्थल को छोड़कर किसी भी रोपित बीज से एक अंकुर तक नहीं फूटता तो पेड़ क्या खाक लगेंगे? क्या सिर्फ पौधे लगाने या बीज आरोपित करने तक ही हमारी जिम्मेदारी थी? आरोपित करने के बाद उसकी देख-रेख क्या प्रकृति की जिम्मेदारी है? क्या हम अपने नवजात बच्चों को भी जन्म देकर भगवान भरोसे छोड़ देते हैं? हमें प्रकृति के इन सवालों का समाधान कर पर्यावरण के लिए अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाने के लिए दृढ़संकल्प लेना होगा, तभी हमारा प्राकृतिक ऋण भी उतरेगा। सामाजिक संस्थाओं को अपना बहुमूल्य समय देकर बीज को आरोपित कर प्रफुल्लित होने तक की जिम्मेदारी को उठाना होगा जिससे हम सही मायने में पौधारोपण अभियान में सफल हो पाएंगे।

- सुमिता मूंधड़ा, नागपुर

योजनाबद्ध तय करें देखरेख

पौधारोपण एक सही दिशा ओर उचित कदम है। हमें पौधारोपण से लेकर विकास तक की भूमिका को अदा करना होगा। पौधारोपण से लेकर उनके रख-रखाव वृद्धि तक पर, ताकि हरियाली बढ़े। उस पर जोर देना होगा। हमें दिशा की ओर आगे बढ़ना होगा। पौधारोपण के साथ पौधे को पानी पिलाने की जवाबदारी भी लें। उसका रखरखाव कैसे हो इसके लिए संसाधनों पर भी वचनबद्धता हो। समय-समय पर उचित देख-रेख की व्यवस्था हो। उचित एजेंसी को पौधारोपण के बाद उसके विकास की जवाबदारी दें। तब हम पर्यावरण में देखेंगे नया परिणाम। **- राजेश कोठारी,** सूरत

काम कम,प्रचार-प्रसार अधिक

हमारे देश में जनसेवा, समाजसेवा व राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में जितना कार्य शासन एवं निजी स्तर पर किया जाता है, उसका प्रचार प्रसार उससे कई गुना अधिक किया जाता है। काम कम और दिखावा ज्यादा होता है। फोटो में जितना पौधारोपण दिखाया जाता है, यदि जमीन पर इतना पौधारोपण सफल हो जाता तो आज भारत की तस्वीर ही बदल जाती है। आपने भी फोटो सहित सुझाव शायद इसीलिए बुलवाये हैं कि बगैर फोटो छपाये लोग विचार भेजना भी पसंद नहीं करते हैं। पौधारोपण करना जितना सरल है, पौधों की परवरिश कर वृक्ष बनाना उतना ही दुश्कर है। बाद की देखरेख के अभाव में 95 प्रतिशत पौधारोपण नष्ट हो जाता है। पौधारोपण करने के बाद की जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करने वालों के लिए वृक्षों की अवैध कटाई के समान दंड का प्रावधान होना चाहिए। मेरा सुझाव है कि पौधारोपण के लिए शासन द्वारा एक नीति बनाई जाकर पौधारोपण की अनिवार्यता संबंधी विधिक प्रावधान किए जाएं। स्वच्छता अभियान के समान प्रोत्साहन व पुरस्कार की घोषणा हो। समाचार पत्र, टीवी चैनल, सोशल मीडिया आदि द्वारा पर्यावरण संरक्षण को प्रमुख चुनौती मानकर प्रयास नहीं किए गए तो परिणाम गंभीर होंगे।

-पीसी राठी,
पूर्व अपर कलेक्टर, इंदौर

भावनात्मक जुड़ाव जरूरी

निःसंदेह प्रतिवर्ष विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा पौधारोपण के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आज वो यदि सही मायनों में सफल होते तो धरती ने हरियाली की चादर ओढ़ ली होती लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कारण अनेक हैं, निदान सिर्फ एक 'संरक्षण'। बालकों से लेकर युवाओं तक सभी को ये बात समझना होगी कि शुद्ध वातावरण जीवन के लिए कितना आवश्यक है। बच्चों को उनके जन्मदिन पर पौधा लगाने और उस पौधे को कोई नाम देकर उसकी देखभाल के लिए प्रेरित किया जाए। साथ ही बड़े बुजुर्गों की पुण्यतिथि पर भी पौधा स्मृति स्वरूप लगाया जाए तो निश्चित ही एक भावनात्मक जुड़ाव उस पौधे के संरक्षण में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त ऐसी भूमि निर्मित की जाए जहां पौधा सुरक्षित रह सके। पानी की प्रचुरता हो, भूमि उर्वर हो किंतु बढ़ते भवन-सड़क निर्माण, रासायनिक खाद के प्रचुर प्रयोग ने इस लक्ष्य को बाधित कर दिया, पॉलीथिन के प्रयोग ने तो रही सही कसर पूरी कर दी। न केवल पेड़-पौधे बल्कि नदियों, भूमि, वायु आदि सभी को बढ़ते प्रदूषण से बचाने की आवश्यकता है। वरना वह दिन दूर नहीं जब हमें ऑक्सीजन सिलेंडर अपनी पीठ पर लाद कर सांस लेना पड़े।

- मनीषा राठी, उज्जैन (मप्र)

संरक्षण की जिम्मेदारी भी लें

आजकल हर वर्ष हम मानसून सीजन में देखते हैं कि पौधारोपण के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। आम जनता पहले से अधिक जागरूक भी हुई है। कई सामाजिक संगठनों द्वारा भी समय-समय पर कैम्पेन चलाए जाते हैं। सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग ने आमजन में अलख जरूर जगाई है। लेकिन अफसोस हम सिर्फ पौधे के साथ फोटो खिंचवाकर 'सांसें हो रही कम, आओ पेड़ लगाएं हम' जैसे स्लोगन के साथ उसको सोशल मीडिया पर अपलोड करके या अखबार में फोटो व न्यूज देकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं। अतः हमारी पुरजोर कोशिश भी परिणाम नहीं ला पा रही है। हर वर्ष देशभर में लाखों की संख्या में नए पौधे लगाए जाते हैं लेकिन देखभाल व संभाल के अभाव में गिने-चुने पौधे ही पनप पाते हैं। हमारे द्वारा लगाए गए पौधों में से 10 प्रतिशत भी अगर बड़े पेड़ का आकार ले सकें तो यह अंबर झूम उठेगा और यह धरती खिलखिला उठेगी। पूरे विश्व में पेड़ों की कटाई के कारण धरती का तापमान 45 से 50 डिग्री तक पहुंच रहा है। अगर अब भी हम नहीं चेते तो हमारी आने पीढ़ी स्वस्थ हवा के लिए तरसेगी। अपने बच्चों के भविष्य के लिए लाखों-करोड़ों रुपए जोड़ों या नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन उनके स्वस्थ भविष्य के लिए अपने हाथों से एक पेड़ जरूर लगाना होगा। हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य एक पौधा लगाए व अपने बच्चे की तरह उनकी परवरिश और सार संभाल करने का संकल्प भी लें। **-डॉ.राधेश्याम लाहोटी**

अध्यक्ष-माहेश्वरी युवा संगठन, नौखा

तकनीकी जानकारी भी जरूरी

प्रकृति, पर्यावरण का संरक्षण करना हर प्राणी, जीव जंतु के हित में हैं। हम अगर गहराइयों से अध्ययन करें तो पाएंगे कि प्रकृति अपने आप में बराबर संतुलन बनाकर चलती है। प्रकृति ने हर जीव-जंतु-प्राणी, पेड़-पौधे के रहने, खाने, पीने, फुलने, फलने, जीने की व्यवस्था कर रखी हैं, जो अपने आप में संतुलन बनाए रखती हैं। मनुष्य प्रकृति से छेड़छाड़ कर उसे सतत असंतुलित कर रहा है। अभी कुछ सालों से पौधारोपण की मुहिम बहुत जोर-शोर से चलाई जाने के बाद भी पेड़ों की संख्या बढ़ने के बजाय घटती जा रही है। इसका मुख्य कारण पौधारोपण मुहिम एक भेड़चाल, बिना किसी सोचे-समझे की जा रही। संस्थाएं अपना लक्ष्य पूरा करने, फोटो खींचवाने व नाम कमाने की होड़ में गड्ढे खुदवा कर उसमें आनन-फानन पौधे लगाकर उसे भूल जाती हैं। पौधारोपण जितना जरूरी है उससे ज्यादा जरूरी होता है पौधारोपण करने की सही जानकारी होना। साथ में यह जानना सबसे ज्यादा जरूरी है कि कौन से पौधे किस मिट्टी व किस जमीन के लिए फायदेमंद होते हैं। सही फायदा तभी होगा जब पौधारोपण सही जानकारी के साथ सही मार्गदर्शन में किया जायेगा। **-शरद गोपीदास बागड़ी,** नागपुर

देखभाल का शपथ पत्र भी लें

पौधारोपण करवाना बहुत ही पुनीत कार्य है। जितना नुकसान प्रकृति को हमारे द्वारा पहुंचाया जा रहा है, उसके दुष्परिणाम भी हम भुगत रहे हैं। पौधारोपण करना और फोटो खिंचवा कर उस कार्यक्रम की इतिश्री करना एक बड़ी भूल है। वास्तव में जिस संस्था द्वारा पौधारोपण करवाया जाता है उसको प्रत्येक पौधे की देखभाल करने का शपथ-पत्र भी उस व्यक्ति द्वारा भरवाया जाना चाहिए कि जब तक यह पौधा बड़ा नहीं हो जाता है, मैं स्वयं इसकी पूर्ण देखभाल करूंगा।

- सुरेश कचोलिया, कोषाध्यक्ष- दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा

सिर्फ दिखावे के लिए न हो पौधारोपण

आज देश में पौधारोपण का जो कार्य विभिन्न सामाजिक स्तरों पर हो रहा है, उसमें 90 प्रतिशत सिर्फ औपचारिकता, फोटो खिंचवाने, जनता में आंकड़ा प्रस्तुत करने, पर्यावरण जागृति का ढोंग करने.. इत्यादि के लिए ही हो रहा है। ये एक ऐसी होड़ बन चली है, जिसमें काफी सामाजिक संस्थाएं भाग लेती दृष्टिगोचर जरूर होती हैं, लेकिन धरातल में नतीजा शून्य होता है। इसमें कुछ लोग मन से जरूर जागरूक होते हैं, पैसा भी खर्च करते हैं, लेकिन व्यवहार में पौधारोपण के बाद निष्क्रिय हो जाते हैं। अपने-अपने क्षेत्र में, हर व्यक्ति या संस्था, पौधारोपण को बढ़ा-चढ़ाकर प्रसारित कर, कार्य की इतिश्री कर लेती है। इस तरह के सभी पौधारोपण, अंततोगत्वा निरर्थक होते हैं, कारण वर्षांत देखरेख के प्रति पूर्ण निर्लिप्तता। संस्थाएं रोपण संख्या पर केंद्रित नहीं होकर, यदि कम पौधे रोपकर पूरे वर्ष के रखरखाव को ध्यान में रखें, तो ही पर्यावरण संतुलन के उद्देश्य में सफल हो सकती हैं।

- श्रीकांत बागड़ी

उज्जैन (म.प्र.)

आमजन की भागीदारी जरूरी

यह अभियान तक तक सफल नहीं हो सकता है, जब तक इसमें आमजन की स्वमेव भागीदारी नहीं होगी, साथ ही पौधारोपण से होने वाले फायदे के बारे नहीं बताया जाता। जनता को पौधों के आयुर्वेदिक फायदों के बारे में बताकर भी पौधारोपण अभियान को सफलता की उच्च कोटि पर पहुंचाया जा सकता है। कई पौधों की हमारे देश में पूजा भी होती है जैसे पीपल, आंवला, नीम आदि का अपना महत्व है। इनके बारे में बताकर हम इस मानवीय अभियान में सफल हो सकते हैं। पौधारोपण कर कोई व्यक्ति संस्था अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं करे बल्कि उनके लिए टी गार्ड लगाए। समय-समय पर उन्हें खाद, पानी दें, साथ ही उन्हें आवारा पशुओं से बचाएं। जनजागरण के लिए सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों व नुक्कड़ सभाओं आदि का सहयोग अवश्य लें।

- रामजस सोनी, बागोर, भीलवाड़ा

सभी अपना सांस्कृतिक दायित्व समझें

भूमि का क्षरण रोकने, पर्यावरण को स्वच्छ रखने और ऑक्सीजन के लिए मानव मात्र को पौधारोपण करना अत्यंत आवश्यक है। शास्त्रों में भी लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसका रक्षण भी करना चाहिए। मानव मात्र को आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ और निर्मल वातावरण का निर्माण कर उन्हें सुपुर्द करना ही चाहिए। हमारे देश भारत की संस्कृति एवं सभ्यता वनों में ही पल्लवित तथा विकसित हुई है। यह एक तरह से मानव का जीवन सहचर है। वृक्षों से प्रकृति का संतुलन बना रहता है। वृक्ष अगर ना हों तो सरोवर ना ही जल से भरे रहेंगे और ना ही सरिता ही कल कल ध्वनि से प्रवाहित होगी। वृक्ष लगाना मानव समाज का सांस्कृतिक दायित्व भी है।

- महेश राठी, भीलवाड़ा

बच्चों की तरह पौधों का रखना होगा ध्यान

हम जब भी पौधारोपण करते हैं, तो पौधारोपण के समय बड़ी तैयारियां करते हैं जैसे पौधारोपण स्थान, पौधों का चयन व उन्हें रोपने की अच्छी तैयारी। मगर इन सब बातों के साथ जो बेहद ज्यादा जरूरी है, वह है पौधों की जानवरों से सुरक्षा व पौधे के बड़ा पेड़ बनने तक पानी व खाद की निरंतर व्यवस्था। इन दोनों ही बिंदुओं पर हम सोचने के बाद भी व्यवस्था नहीं कर पाने से पौधारोपण के कार्य को असफल कर देते हैं। इस कार्य को सफल करने के लिए हमें दो बातों पर दृढ़संकल्पित होना होगा। एक-पौधों की संख्या उतनी ही रखें जितने की हम परवरिश कर सकें। दो-लगाए गए पौधों को अपनी संतान की तरह पालकर बड़े होने तक हम उनकी देखभाल कर उन्हें सुरक्षित रखे। मेरा एक सुझाव है कि शासन भी एक नीति बनाए, जो परिवार एक पौधे का पौधारोपण कर उसे पेड़-वृक्ष में तैयार करे उसे शासन की ओर से सम्मान व एक निश्चित राशि देकर पुरस्कृत किया जाए।

- मुरलीधर मानधन्या
पूर्व जिलाध्यक्ष देवास माहेश्वरी सभा

रोपें वहां जहां देखरेख आसान हो

पौधारोपण की एक अहम बात है कि पौधों को रोपने के बाद उसे सिंचित करने की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। उसका पोषण देख-रेख तब तक जरूरी है, जब तक वह पनप कर बढ़ा ना हो जाए। तो क्यों ना हम पौधारोपण ऐसे स्थानों पर ज्यादा से ज्यादा करें, जहां उनकी देखभाल के लिए व्यक्ति एवं पानी दोनों ही मौजूद हों। अस्पतालों, स्कूलों, ऑफिसों, बैंकों व रिहायशी इलाकों के आसपास अगर हम पौधे लगाते हैं, तो हम उनका ध्यान अच्छी तरह रख सकेंगे। पौधारोपण अभियान के असफल होने में बढ़ते हुए प्रदूषण का भी अहम हिस्सा है, जो पेड़-पौधों को पनपने में बाधा उत्पन्न कर रहा है। पौधों की देखभाल के लिए कुछ सरकारी संस्थाएं और प्राइवेट संस्थाएं भी आगे आएं, जो पौधों की देखभाल भली-भांति करें और पुनः देश, राज्य, शहर और गांव को हरा-भरा, प्रदूषण रहित किया जा सके।

- ज्योति नवलकिशोर मालानी, इटारसी

पहलें देखभाल सुनिश्चित करें

अपनी सांसों को स्वच्छ हवा का चित्रकार बनाना हो तो अपनी सोच को कुछ यूं बदलना होगा। जो भी संस्था पौधारोपण कर रही हो वह अगर यह निश्चित करें कि हम उतने ही पौधे लगाएंगे, जिनकी भविष्य में उचित देखभाल कर पाएं तो यह असफल नहीं होगा। पौधे वहां ही लगाना चाहिए, जहां आसपास लोग रहते हैं। दस-दस पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी दो-दो परिवारों को सौंप दें। वे आपस में मिल-जुलकर उन 10 पौधों की देखभाल अपनी धरोहर की तरह करेंगे। इससे पौधे लावारिस जीवों की तरह कमजोर या खत्म नहीं होंगे अपितु परिवार के सदस्य की तरह फलेंगे, लहलहाते हुए हरियाली बढ़ाएंगे, जो सभी के हित में रहेगा। समय-समय पर संस्था के कुछ लोग पौधारोपण वाली जगह पर जाकर निरीक्षण कर उन परिवारों की सराहना करें, जो उन पेड़ों की देखभाल कर रहे हैं।

- रेखा राजेश लखोटिया, नागपुर

समर्पण की कमी

पौधारोपण दिखावे हेतु एक परंपरा सा बन गया है। सिर्फ सोशल मीडिया पर फोटो डालने की चाहत में महज औपचारिकता बन कर रह गया है। सच तो यह है पर्यावरण संरक्षण के जुमले दोहराये और लिखे तो खूब जाते हैं, किंतु सच्चा समर्पण कहीं नहीं है। पराकाष्ठा का एक उदाहरण देखिये... लगभग तीन-चार साल से एक प्रतिष्ठित सामाजिक संस्था एक ही शिला के ऊपर तारीखों का बदलाव कर एक ही निश्चित स्थान पर अलग-अलग अतिथियों द्वारा पौधारोपण करवा रही है और यशोगान लूट कर सोशल मीडिया पर डाल रही है। दिखावे की इस संस्कृति ने इतने गहन विषय को भी मजाक का विषय बना दिया है।

- पूजा नबीरा, काटोल

परिवार की तरह सहेजें

पौधारोपण आज की पहली जरूरत है। इसका जोर-शोर तो आजकल काफी दिखाई देता है लेकिन कई बार यह, अखबार, सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोरने तक ही सीमित रह जाता है। जैसे पौधे लगाने के कार्य को प्रभावी ढंग से करने की आवश्यकता है वैसे ही इन्हें परिवार की तरह सहेजने की जरूरत है। उचित सिंचाई व्यवस्था, उर्वरक का सावधानी से प्रयोग, आधुनिक तरीकों से एवम ट्री-गार्ड से संरक्षण,'चेतना-समितियों' का गठन जैसे उल्लेखनीय प्रयास जरूरी हैं। जन्मदिन पर, शुभ कार्यों पर पौधारोपण एवं सार-संभाल को एक उदात्त सांस्कृतिक दायित्व के तौर पर लेना चाहिए।

-डॉ. श्रीमती सूरज माहेश्वरी, जोधपुर

अनाथ छोड़ दिए जाते हैं पौधे

वर्तमान में विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा जोर-शोर से पौधारोपण एवं वितरण का कार्य सभी के जेहन में कूट-कूटकर भरा हुआ है। ऐसा होना भी चाहिए, परंतु पौधारोपण करके ही इसकी इतिश्री होना प्रायः देखा गया है। मन में एक सवाल उठता है कि पौधा कैसे फलेगा-फूलेगा? कैसे बड़ा होगा? कौन उसकी देखभाल करेगा? पौधा किस जगह सुरक्षित रहेगा? इस प्रकार की व्यवस्थाएं प्रायः कहीं देखने को भी नहीं मिल पाती है। एक अनाथ आश्रम में जैसे किसी नवजात शिशु को काली अंधेरी रात में छोड़कर चले जाते हैं, वही स्थिति पौधारोपण के बाद प्रायः पौधों की देखी गई है। हमें संकल्प लेना पड़ेगा कि यह मात्र एक पौधा ना होकर हमारे परिवार का ही एक अहम सदस्य हो। जिस प्रकार हम अपने परिवार के नन्हें शिशु की सभी प्रकार के संक्रमण, रोगों एवं पशुओं व असामाजिक तत्वों से रक्षा करते हैं, उसी प्रकार पौधे की भी कम से कम 1 वर्ष तक सुरक्षा करेंगे।

- संजय जागेटिया, मंत्री शास्त्री नगर माहेश्वरी सभा, भीलवाड़ा (राजस्थान)

आवासीय क्षेत्र में तय करें हरियाली की जगह

हरियाली शब्द के सोचने मात्र से ही मन के भीतर खुशी की लहर दौड़ पड़ती है। अगर हरियाली का नजारा चारों ओर देखने को मिले तो सारी कायनात खुशनुमा हो जाती है। हर वक्त हम अपने आप को तरोताजा महसूस करते हैं। पौधारोपण अभियान से लोगों में जागरुकता आई है। ये जागरुकता एक दिन रंग जरूर लाएगी और ये पुरजोर कोशिश असफल नहीं सफल होंगी। पौधे हम अपने आसपास की जगह पर लगाते हैं। स्मार्ट सिटी बनाने के लिए हमें पेड़ों की कटाई करनी पड़ती है। जिससे हरियाली में कमी आ रही है। हरियाली को बरकरार रखने के लिए हमें स्पेशल हरियाली की जगह बनानी होगी, जिससे उस जगह की सुंदरता में चार चांद लग जाऐं। इससे प्रदूषण में कमी आएगी और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। जैसे हम अपने घर में पेड़-पौधों की देखभाल के लिए माली नियुक्त करते हैं, वैसे ही अगर जगह-जगह माली नियुक्त किए जाएं तो पेड़ पौधों की देखभाल में कमी नहीं आएगी और हरियाली भी बरकरार रहेगी।

- किरण कलंत्री, रणु कुंज

वनों को कटने से भी बचाएं

आए दिन विज्ञापनों में हम देखते हैं "पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ", लेकिन क्या हम पेड़ लगा रहे हैं? क्या हमने कभी पर्यावरण के लिए कुछ किया है। केवल बोलने से कुछ नहीं होता। कहने व करने में बहुत फर्क होता है। पर्यावरण को दूषित करने में केवल चंद लोगों का हाथ ही नहीं बल्कि कहीं न कहीं हम सब जिम्मेदार हैं। मनुष्य इतना स्वार्थी होता जा रहा है कि वह धरती माता से पहले अपना फायदा देखता है जितने पौधे वे लगाते है उससे दोगुनी मात्रा में अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पेड़ काट भी रहे हैं। यही मुख्य कारण है कि पेड़ लग तो रहे हैं पर प्रगति नहीं हो रही। पेड़ों कि कटाई में नगरी जीवन सबसे ऊपर आता है। अंधाधुंध जंगलों की कटाई से प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है, अतः वन विभाग को पेड़ों को काटने से बचाना चाहिए और लकड़ी माफिया पर नजर रखना चाहिए जो क्विंटलों लकड़ी अवैध रूप से काटकर बेच देते हैं। इसके साथ ही हमें पौधारोपण अभियान को भी युद्धस्तर पर चलाने की आवश्यकता है।

-पिंकी सोनी, भीलवाड़ा

पौधारोपण करने वाले ही करें देखभाल

पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में पौधों का बहुत बड़ा योगदान है। मैं पिछले कई वर्षों ये यह देख रहा हूं कि पर्यावरण संरक्षण के नाम पर कई संगठनों द्वारा पौधारोपण कर समाचार पत्रों में फोटो छपवाकर इतिश्री कर ली जाती है। पिछले 10 वर्षों में विभिन्न संगठनों द्वारा कितने पौधे लगाए गए एवं कितने पौधे आज जीवित अवस्था में हैं? इसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मेरे विचार से पर्यावरण संरक्षण तब ही संभव है जब जो व्यक्ति पौधारोपण करें वो ही व्यक्ति हमेशा उसकी देखभाल करें और पौधों को सींचे। परिवार में मां-बाप बनकर जैसे बच्चों को बड़ा करते हैं उसी तरह पौधों के मां-बाप बनकर उनको बड़ा करना होगा। चाहे आप एक पौधा ही लगावें उस पर संबंधित व्यक्ति के नाम का टैग लगावें जिस पर अवधि भी अंकित हो, जिससे पौधे की सही देखभाल हो सकेंगी एवं पर्यावरण संरक्षण अभियान सफल हो सकेगा। अन्यथा केवल पौधारोपण करना दिखावा मात्र है।

- देवेंद्रकुमार सोमानी, जिला मंत्री, भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा

दम तोड़ देते हैं अधिकांश पौधे

सच कहूं तो जब भी मैं किसी अखबार या पत्रिका में पौधारोपण करते हुए किसी व्यक्ति विशेष या संगठन की फोटो देखती हूं तो मेरा मन व्यथित हो उठता है। इस बात को सोचकर कि आज इस पौधे को लगाने के लिए इतने व्यक्ति खड़े हुए हैं लेकिन कल यह पौधा पानी के अभाव में अपना दम तोड़ देगा। वह इसलिए क्योंकि उनका उद्देश्य

फोटो खिंचवाना भर था, वह पूरा हो गया। अखबार और पत्रिका वालों ने फोटो छापकर उनकी महानता में चार चांद लगाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली। इंसान विवेक शून्य हो गया है। अगर चतुर्थ स्तंभ ने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए 4-5 महीने बाद इनसे वापस उस पौधों के बारे में पूछकर जानकारी ली होती और पौधे ना पनपने का कारण पूछते तो यकीन मानिए यह पौधारोपण अभियान छलावा ना बनता।

- स्वाति मानधना
बालोतरा (राज)

जनचेतना आवश्यक

आज जिस प्रकार का वातावरण है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो, भ्रष्टाचार से कुछ भी अछूता नहीं बचा है। जब राष्ट्रीय स्तर पर यह समस्या है, तो कोई भी समाज इससे अछूता कैसे रह सकता है? उसी का परिणाम है कि आज सार्वजनिक क्षेत्र में जो भी काम हो रहे हैं, वे सभी किसी भी कोण से अपने स्तर के नहीं हो रहे हैं। पौधारोपण में यही अनीतिगत विचार प्रबल हैं। पौधारोपण के साथ-साथ उनके संरक्षण और संवर्धन के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं का नितांत अभाव दृष्टिगोचर होता है! यथा सिंचन की सुविधा, पौधे के रक्षणार्थ लोहे की जाली आदि मात्र खानापूर्ति के स्तर तक दिखते हैं। आवश्यकता है जनचेतना, जन भागीदारिता की।

- महेशकुमार मारू, मालेगांव

भेंट में दे एक पौधा

आजकल की भागती जिंदगी में इंसान यही भूल गया है कि, मैं भाग रहा हूं क्योंकि मैं सांस ले पा रहा हूं, मेरे प्राण सुरक्षित है। प्राणों की सुरक्षा प्राणवायु द्वारा होती है और प्राणवायु हमें पेड़ पौधों से प्राप्त होती है। अर्थात पेड़ पौधों की सुरक्षा हमारा प्रथम दायित्व होना चाहिए। पौधारोपण हेतु कई संस्थाओं, समाजों, स्कूलों द्वारा समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। परंतु यह कार्यक्रम कहीं ना कहीं अधूरे छूट जाते हैं। कहने का तात्पर्य है पौधे लगाकर भूल जाना पौधारोपण नहीं कहलाता, पौधों को लगाकर उनका रखरखाव अर्थात उनको जीवित रखने के लिए समय निकालने का दृढ़संकल्प करना भी अति आवश्यक है। समय पर पानी, खाद आदि संरक्षण करने पर ही पौधारोपण अभियान सफल हो सकते हैं। आधुनिकरण की दौड़ में पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है उन्हें नियंत्रित करके भी हम इस समस्या से काफी हद तक निदान पा सकते हैं। इसकी शुरुआत हम अपने घर से करें, घर में प्रत्येक मेंबर द्वारा एक-एक पौधा रोपित किया जाए और यह प्रतियोगिता हो कि कौन सबसे अच्छी देखरेख कर रहा है? हम अपने परिवार में पहचान वालों में उनके जन्मदिवस पर शादी की सालगिरह पर एक पौधा उपहार में जरूर दें।

- एकता महेंद्र झंवर, उज्जैन

सही समय पर नहीं होता पौधारोपण

विडंबना की बात है कि हम 9 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। सभी जगह भारत में इस अवसर पर पौधों को लगाने का एक सामाजिक कार्यक्रम होता है। पर्यावरण और पौधारोपण में सूक्ष्म अंतर है। सब जानते हैं कि भारत में 21 जून को मानसून का प्रवेश होता है उसके बाद लगाए हुए पौधे ही पनपते हैं, लेकिन हम केवल खानापूर्ति करते हैं जो भी अधिकारी या पदाधिकारी केवल फोटो के लिए पौधारोपण करते हैं वो दोबाना न तो उस स्थान पर पुनः जाकर या किसी भी माध्यम से जानकारी लेते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि आप इन पौधों की समुचित देखभाल के संकल्प के साथ पौधारोपण करे तो ही हम पर्यावरण के प्रति जागरूक माने जाएंगे। अन्यथा हम सिर्फ कुछ प्रचार-प्रसार की मानसिकता में ही रह जाएंगे।

- संजय समदानी, सचिव माहेश्वरी समाज, मनासा जिला नीमच

जिम्मेदार सही ढंग से न निभाना

पौधारोपण अभियान क्यों असफल हो जाता है, उसका मुख्य कारण है जिम्मेदारी पूरी नहीं करना कहने का तात्पर्य यह है कि समाज संगठन पौधारोपण कर अपनी जिम्मेदारी को परिपूर्ण समझते हैं, जबकि पौधों को रोपित कर वहां से चले जाना ये सोच कर कि हमारा संकल्प पूर्ण हुआ। ये सही नहीं है। जब पौधारोपण किया जाता है तब संगठन की जिम्मेदारी ज्यादा बड़ी हो जाती है, उनकी देखभाल करने की, पर्याप्त रूप से उनको संरक्षण देने की, जो कि वो कर नहीं कर पाते हैं। छोटे पौधे वृक्ष का रूप तभी ले पाएंगे जब उनको पूरी देखभाल और पर्याप्त समय दिया जाएगा। पौधे छोटे बच्चों की भांति होते हैं, जिन्हें पूर्ण रूप से देखभाल की जरूरत होती है, उन्हें भी समय-समय पर पूर्ण आहार दिया जाना चाहिए, उन्हें भी अपना कीमती समय देने की आवश्यकता है। जब तक समाज संगठन इस बात को न समझ ले तब तक उनकी हर कोशिश नाकामयाब ही होनी है।

- प्रमिला कमल राठी, पुणे

जरूरतों के प्रति नासमझी

पेड़-पौधों को बचाने के लिए केवल लगाना ही काफी नहीं है। कई बार हम पौधे लगा देते हैं और उनकी देखभाल के लिए एक आदमी को पैसे दे देते हैं और कह देते हैं कि तुम इसे पानी-खाद देते रहना। वो आदमी पानी खाद देता है फिर भी पौधे मुरझाकर खत्म हो जाते हैं। कारण हर आदमी को यह पता नहीं होता कि किस मौसम में कब किस समय पानी देना होता है? इसके कारण पौधे लगवाते तो बहुत हैं पर वो पनप नही पाते और नष्ट होने की कगार पर आ जाते हैं। पेड़-पौधें खरा सोना हैं। इन्हें बचाने के लिये हम सबको मिलकर ही काम करना होगा। दूसरों पर निर्भर नहीं रहना है। हम सब सोच लें कि हमने पौधे नहीं एक बच्चे को ही अपनाया है। हमें अपने बच्चे को कब किस समय क्या देना चाहिये? किस चीज की जरूरत है? वह हमें पता रहता है। वैसे ही जब हम पौधे का ख्याल रखेंगे तो वह जरूर रंग लाएगा और अपना देश व विश्व खिला-खिला और हरा-भरा रहेगा।

- भगवती शिवप्रसाद बिहानी

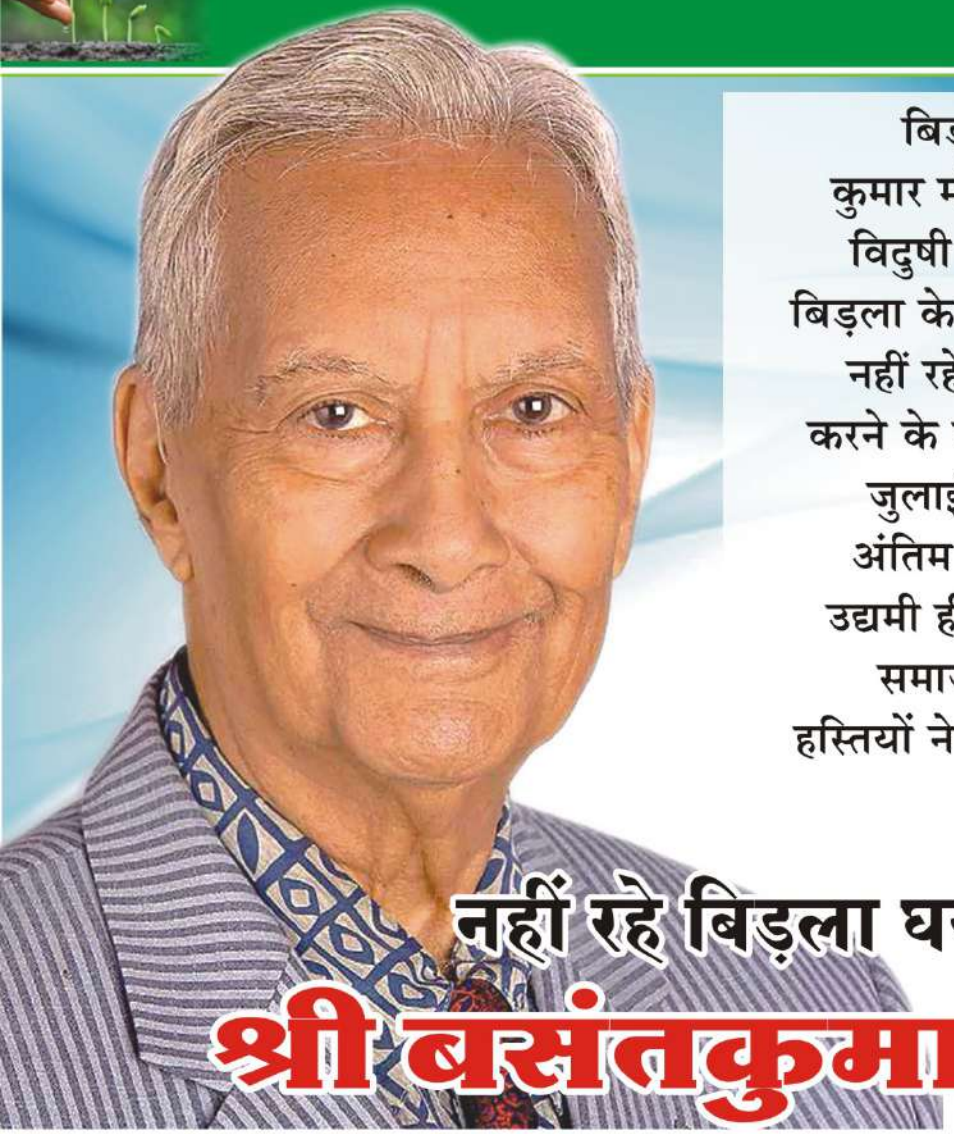

बिड़ला उद्योग समूह के चेयरपर्सन कुमार मंगलम् बिड़ला के दादाजी तथा विदुषी उद्यमी श्रीमती राजश्री आदित्य बिड़ला के श्वसुर श्री बसंतकुमार बिड़ला नहीं रहे। अपनी आयु के 99 वर्ष पूर्ण करने के करीब रहे श्री बिड़ला ने गत 3 जुलाई को अपने कर्मयोगी जीवन से अंतिम विदा ले ली। देश के कई शीर्ष उद्यमी ही नहीं बल्कि शीर्ष राजनेताओं, समाजसेवियों, कलाकारों आदि कई हस्तियों ने उपस्थित होकर उन्हें अश्रुपूरित अंतिम बिदाई दी।

नहीं रहे बिड़ला घराने के 'पितामह'
श्री बसंतकुमार बिड़ला

स्व. श्री बसंतकुमार बिड़ला की ख्याति समाज की नहीं बल्कि लगभग अधिकांश चिरपरिचितों में बीके बाबू के रूप में भी थी। श्री बिड़ला की पहचान उद्योग जगत में एक ऐसे कर्मयोगी के रूप में थी, जिन्होंने अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने में उम्र को भी परास्त कर दिया, उन्हें बढ़ती उम्र भी कभी रोक नहीं पाई। जिस उम्र में लोग सेवानिवृत्ति ले लेते हैं, उस उम्र में भी आपने अपने औद्योगिक साम्राज्य का विस्तार किया। आपका दूसरा पहलू था समाजसेवा, जिसके प्रति भी आप समर्पित रहे। ऐसी अनगिनत समाजसेवी संस्थाएं हैं, जिनकी या तो बीके बाबू ने स्थापना की अथवा जिन्हें सतत वित्तीय सहयोग दिया। माहेश्वरी समाज के लिए तो आप स्नेह का वरदहस्त ही थे। श्री बिड़ला की विशिष्ट पहचान युगल रूप में थी, बसंतकुमार-सरला बिड़ला। दोनों ने 'दो जिस्म मगर एक जान' की तरह एक-दूसरे का साथ दिया और दोनों के इस दीर्घ जीवन की अंतिम यात्रा में भी मात्र 4 वर्ष का ही अंतर रहा।

5 वर्ष की उम्र में उठा मां का साया

बिड़ला घराने के कलकत्ता स्थित विशाल आवास 'रायने पार्क' में प्रख्यात उद्योगपति स्व.श्री घनश्याम बिड़ला व श्रीमती महादेवी जी के यहां बसंतकुमारजी का द्वितीय पुत्र के रूप में 4 फरवरी 1921 को जन्म हुआ था। महादेवीजी जीडी बिड़ला की द्वितीय पत्नी थीं। प्रथम पत्नी दुर्गादेवी से उनका विवाह सन् 1906 में हुआ था। एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम लक्ष्मीनिवास रखा गया। किंतु दुर्भाग्य से 1909 में ही पत्नी का निधन हो जाने से बहुत सदमा पहुंचा। इसके बाद पुनर्विवाह महादेवीजी के साथ हुआ। द्वितीय पत्नी से उन्हें दो पुत्र श्रीकृष्ण कुमार एवं श्री बसंतकुमार तथा तीन पुत्रियां चंद्रकला देवी, अनुसूया देवी एवं शांतिदेवी प्राप्त हुईं। किंतु विधि के विधान स्वरूप 1926 में ही महादेवी का भी एक लाइलाज मर्ज का शिकार होने से स्वर्गवास हो गया। पत्नी महादेवीजी का मोहक व्यक्तित्व बिड़ला हाउस में अपनी विशिष्ट सुगंध रखता था। अतः इस आघात से संपूर्ण बिड़ला परिवार ही शोक सन्तप्त हो उठा। विधि की इस विडंबना ने मात्र 5 वर्षीय बसंतकुमार से उनकी मां का साया भी छीन लिया था। इसके बाद पिताजी जीडी बिड़ला ने पुनर्विवाह नहीं किया और उन्हें अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद पिता के साथ-साथ माता का स्नेह भी देने का भरसक प्रयास किया।

13 वर्ष में प्रारंभ व्यावसायिक यात्रा

वर्ष 1934 में मुश्किल से तेरह वर्ष के दसवीं कक्षा के छात्र ही थे कि बसंतकुमार ने कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज की जानकारी प्राप्त करना शुरू किया। उसके चाचा ब्रजमोहन ने गंगादासजी झावर नाम के एक ब्रोकर को लगाया, जिसने किशोर बसंतकुमार की 'हावड़ा जूट' और 'इंडियन रेयॉन' के कुछ सौ शेयर खरीदने में मदद की। पहले साल के अंत तक, बसंत ने 3500 रुपए का लाभ कमाया। इसके दो वर्ष बाद 18 मार्च 1936 को प्रथम बार पिता का कार्यालय देखा। बस यही जीवन का स्मरणीय दिन था। इसके अगले दिन 'केशोराम मिल्स' गए और मात्र 4 माह में प्रसाधन सामग्री निर्माण के उद्योग 'कुमार केमिकल वर्क्स' प्रारंभ कर दिया। बस फिर क्या था उनकी दक्षता को देखकर केशोराम मिल्स सहित पिताजी ने उन्हें कई उद्योगों की जिम्मेदारी सौंप दी। वहीं स्वय भी एक के बाद एक नए उद्योगों की स्थापना करते चले गए।

उम्र भी उत्साह न रोक पायी

श्री बिड़ला ने जब से उद्योग जगत में कदम रखा तब से जिस उत्साह के साथ औद्योगिक विस्तार प्रारम्भ हुआ उसे उम्र का कोई पड़ाव भी नहीं रोक पाया। वर्ष 1990 में जब श्री बिड़ला उम्र का 70वें वर्ष का पड़ाव पार कर रहे थे, तब भी उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आई। इसके बाद ही उन्होंने 6 सीमेंट प्लांट, पल्प एवं कागज कारखाने व टायर्स उद्योग स्थापित किए। ये उद्योग आज भी अच्छी तरह से चल रहे हैं। वर्ष 1995 के बाद उद्योग जगत ने कई करवट ली। नई चुनौतियाँ उभरी और प्रबंधन में भी विश्वव्यापी परिवर्तन आये। इस परिवर्तन ने कई उद्योगों के पैर उखाड़ दिए। 2-3 साल बिड़ला समूह को भी कुछ कठिनाईयां आई लेकिन उनके हौसले और उनकी तीक्ष्ण बुद्धि ने समय की मांग के अनुरूप प्रबंधन में ऐसा परिवर्तन किया कि उद्योग पुनः वक्त के साथ कदम से कदम मिलाकर दौड़ने लग गये। उम्र के इस पड़ाव पर भी वे स्वस्थता की स्थिति में प्रतिदिन प्रातः 8.45 बजे ऑफिस जाते और वहाँ से शाम 4 बजे लौटते थे।

पुत्र की मृत्यु का सहा सदमा

किसी भी पिता के लिये उसके बेटे की अपनी आंखों के सामने मौत होने से अधिक कष्टप्रद कुछ भी नहीं होता, लेकिन बिड़ला दंपति को अपने जीवन में यह क्षण भी झेलना पड़ा। वर्ष 1960 से उनके पुत्र आदित्य इस विशाल औद्योगिक साम्राज्य के संभालने व उसे शिखर की ओर पहुंचाने में सतत योगदान दे रहे थे। बिड़ला दंपति अब औद्योगिक क्षेत्र की चिंता से लगभग मुक्त होने लगे थे लेकिन वर्ष 1993 उनके सामने 72 वर्ष की आयु में नई चुनौती लेकर आया। यह चुनौती थी उनके बेटे आदित्य को हुई कैंसर की बीमारी। अमेरिका में विशेषज्ञ डॉक्टरों से आपरेशन के बाद भी कुछ नहीं हो सका और वे असहाय होकर तिल-तिलकर मौत की ओर बढ़ते हुए अपने बेटे को देखते रहे। आखिरकार 1 अक्टूबर 1995 की रात 12 बजकर 21 मिनट पर उनका यह चिराग बुझ गया। उनके जीवन में तो जैसे अंधेरा ही छा गया लेकिन पूरे परिवार को संभालने की जिम्मेदारी भी सामने थी। वैसे तो स्व. श्री आदित्य के पुत्र व श्री बिड़ला के पौत्र कुमार मंगलम् बिड़ला समूह को संभालने लग गये थे लेकिन फिर भी वे बहुत अधिक अनुभवी व परिपक्व नहीं थे। इस स्थिति ने श्री बिड़ला पर नई जिम्मेदारियां फिर से डाल दी। ये थी काम में कुमार मंगलम को सहयोग व परामर्श देना। इसके लिए उनकी दिनचर्या पुनः व्यस्त हो गई।

अत्यंत आदर्श दंपति

श्री बिड़ला का विवाह 30 अप्रैल 1942 को ख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी विदर्भ केसरी श्री ब्रजलाल बियाणी की विदुषी सुपुत्री सरलाजी से हुआ था। 73 वर्ष के दीर्घ दांपत्य के बाद श्रीमती सरला बिड़ला का 4 वर्ष पूर्व 28 मार्च 2015 को देहावसान हो गया। श्री व श्रीमती बिड़ला की जोड़ी वास्तव में आदर्श दांम्पत्य की मिसाल ही थी क्योंकि दोनों ने हर कदम पर कंधे से कंधा मिलाकर एक-दूसरे का साथ दिया। कहते हैं कि किसी पुरुष की उन्नति के पीछे किसी नारी का हाथ होता है, यह सरलाजी ने चरितार्थ कर दिया। उनके आपसी रिश्तों में पति-पत्नी के कर्त्तव्य तो शामिल थे ही, साथ ही मित्रतापूर्ण संबंध भी थे। इसका प्रमाण यही है कि उस दौर में जब विवाह के पूर्व लड़के-लड़की एक दूसरे की सूरत भी नहीं देख सकते थे, ऐसे दौर में भी विवाह के पूर्व ही पत्र-व्यवहार द्वारा दोनों के मित्रवत संबंध जारी थे। एक अर्द्धांगिनी के रूप में आपने बसंतकुमारजी को हर अच्छी-बुरी परिस्थितियों में तो संबल दिया ही, साथ ही आध्यात्मिक व मानवसेवी गतिविधियों की ओर प्रेरित भी किया। ससुर जीडी बिड़ला भी इनके इस स्वभाव से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इन्हें स्नेहवश एक पुत्रीवत् दर्जा ही दे रखा था। श्रीमती बिड़ला श्री बिड़ला के लिए वास्तव में एक बहुत बड़ी प्रेरणा ही थी।

200 करोड़ से इंडियन स्कूल की शुरुआत

बसंत व सरला के पुत्र आदित्य की उम्र जब स्कूल जाने की हुई तो विकट समस्या उत्पन्न हो गई। ये आदित्य को श्रेष्ठ शिक्षा देना चाहते थे कि लेकिन उस समय कलकत्ता में केवल कॉन्वेंट स्कूल ही थे, जो इस श्रेणी में आते थे। समस्या यह थी कि इनकी विचारधारा गांधीवादी होने से स्वदेशी को प्राथमिकता देने की थी। अतः कान्वेंट स्कूल में पुत्र के प्रवेश का तो प्रश्न ही नहीं था। सरलाजी ने अपनी सहेली इंदु पार्लिकर के सहयोग से आधुनिकतम् शिक्षा सुविधा से युक्त इंडियन स्कूल की स्थापना की, जिसकी प्राचार्य श्रीमती पार्लिकर को ही बनाया गया। स्कूलों के संचालन के लिए 200 करोड़ रुपए की लागत से एक शैक्षणिक ट्रस्ट की स्थापना की गई। इसके साथ ही कुछ ही समय में देश के विभिन्न भागों में 25 स्कूलों की स्थापना की गई। वर्तमान में ट्रस्ट की इस पूंजी का ब्याज ही 15 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष से अधिक बन रहा है जो इनके आधुनिकतम शैक्षणिक कार्यक्रमों में योगदान दे रहा है।

बिट्स की दी सौगात

बिड़ला परिवार की जन्मभूमि पिलानी के विकास के लिए भी सरलाजी ने बसंतकुमारजी को प्रेरित किया। पिलानी एक छोटा सा कस्बा था, जहां शिक्षा के संसाधन सीमित थे। इस समस्या को देख वहां के अपनों की उन्नति के उद्देश्य से बिड़ला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साईंसेस (बीआईटीएस) नामक इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की। यह इंजीनियरिंग कॉलेज आज देश के शीर्ष तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में

से एक है जिसमें प्रवेश पाना विद्यार्थी अपना सौभाग्य समझते हैं। शैक्षणिक क्षेत्रों में और भी संस्थाओं की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में पिलानी को देश-विदेश में सम्मान दिलवाया। वर्तमान में बिट्स के पिलानी ही नहीं बल्कि कई अन्य प्रमुख शहरों में भी तकनीकी संस्थान कार्यरत हैं। इन संस्थाओं की प्रतिष्ठा ठीक आईआईटी जैसी ही उच्चस्तरीय है।

दोनों में ही था कलाकार दिल

चाहे श्री बिड़ला उद्योगपति थे लेकिन उनमें व उनकी धर्मपत्नी दोनों में ही कलाकार हृदय धड़कता था। यही कारण है कि वे दोनों कई कला संस्थाओं से संबद्ध थे। जिनके जन्म के साथ आप दोनों जुड़े रहे। उनके द्वारा स्थापित स्वर संगम और संगम नामक कला संस्थान में 800 विद्यार्थी कला के साथ साहित्य, धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों का भी अध्ययन कर रहे हैं। इसके साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में योगदान के अंतर्गत कलकत्ता में महादेवी बिरला मंगल निकेतन नामक भवन का निर्माण वयोवृद्ध व्यक्तियों के लिए करवाया गया। वैसे तो शीर्ष उद्यमी होने से उनकी व्यवस्तता अत्यधिक रहती थी, फिर भी वे अधिकांशतः इन कला संस्थाओं के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में शामिल हुए बिना नहीं रहते थे।

युगल गीत बना था यादगार

सन् 1935 में फिल्म 'अछूत कन्या' बहुत ही लोकप्रिय हुई थी। श्रीमती सरला बिड़ला इससे संबंधित एक घटना को ऐसे जीवंत रूप में बताती थीं कि जैसे वह आजकल ही हुई हो। इस फिल्म के गीत घर-घर में गूंज रहे थे। इसका एक गीत ''वन की चिड़िया'' सर्वाधिक लोकप्रिय था। सन् 1983 में संगीत कला मंदिर में एक कार्यक्रम था जिसमें श्री बसंतकुमार बिड़ला व श्रीमती सरला बिड़ला दोनों मौजूद थे। कला मंदिर के सदस्यों ने इनके सामने युगल गीत गाने का प्रस्ताव रखा। हॉल पूरा खचाखच भरा हुआ था। सब उन्हें सुनने को इच्छुक थे। दोनों ने वन की चिड़िया गीत गाना शुरू किया। गाना शुरू होने के कुछ ही सेकंडों के पश्चात श्रोताओं ने बड़े स्नेह से तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया। जब गीत समाप्त हुआ तो करतल ध्वनि से हॉल गूंज उठा। कार्यक्रम के बाद श्री बिड़ला ने भावविभोर हो कहा था कि कंपनियों को सुचारु रूप से चलाने पर भी शेयर होल्डर्स ने कभी इतनी सराहना नहीं की, जितनी हमारे इस गायन पर तालियां मिलीं। बसंतकुमार जी की आंखों में आंसू थे क्योंकि वे जानते थे कि ये तालियां कला मंदिर सदस्यों के स्नेह की प्रतीक थीं।

एक स्वर्णिम ऐतिहासिक पत्र

श्रीघनश्यामदासजी बिरला द्वारा अपने पुत्र श्री बसंतकुमारजी बिरला को जो पत्र लिखा था, आज के परिवेश में भी उतना ही उपयोगी है जितना लिखने के समय था

चि. बसंत,

जो भी तुम्हें लिख रहा हूं-उसे तुम्हें बड़े और यहां तक कि, बूढ़े होने पर भी पढ़ते रहना चाहिए।

मेरा लिखा अनुभव पर आधारित है। यह सही है कि मानव बनकर जन्म लेना ही कठिन है, और जो भी व्यक्ति अपने मानव-जन्म रूपी विशेषाधिकार को नहीं समझता, वह पशु तुल्य है। तुम्हारे पास धन, अच्छा स्वास्थ्य और जीवनयापन के सभी आवश्यक साधन हैं। यदि तुम उन्हें मानवता की सेवा के लिए उपयोग करते हो, तो ही वे उपयोगी हैं अन्यथा, वे शैतानी बलाएं बन जाते हैं। तुम्हें इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

▸▸ धन का उपयोग केवल मजे और मौज के लिए मत करो। रावण ने ऐसा किया लेकिन जनक ने इससे मानवता की सेवा की। धन-संपदा सदैव नहीं रहती, अतः इसका अधिक से अधिक उपयोग समाज सेवार्थ करो। अपने पर न्यूनतम ही खर्च करों धन से निर्धनों की दुर्दशा को दूर करो।

▸▸ धन शक्ति है। इस शक्ति के मद में, दूसरों पर अन्याय होने की संभावना हो सकती है, इससे बचने की कोशिश करना।

▸▸ अपने बच्चों को बताना यदि वे धन को केवल सांसारिक भोगों पर ही खर्च करते हैं तो यह पाप होगा। ऐसे में हमारा व्यापार भी नष्ट हो जायगा। ऐसी अवांछनीय चीज़ों पर धन कभी मत खर्चना-इस तरह से उसका अपव्यय करने के बदले, उसे गरीबों में बाँट दो। तुम्हें स्वयं को एक निमित्तमात्र समझना चाहिए। हम सभी भाईयों ने इस व्यापार को इसी आशा से फैलाया है कि तुम इसे उचित प्रकार सँभालोगे।

▸▸ हमेशा सोचते रहो कि तुम्हारे धन पर जनता का भी अधिकार है। तुम्हें सिर्फ स्वयं के लिए ही धनार्जन नहीं करना है।

▸▸ ईश्वर का ध्यान हमेशा करो। इससे तुम्हारे मन में शुभ विचार आयेंगे।

▸▸ अपनी इंद्रियों पर संयम रखो- अन्यथा वे तुम्हें समस्या ग्रस्त कर डालेंगी।

▸▸ नित्य व्यायाम करो।

▸▸ भोजन ऐसे करो, जैसे दवा लेते हो। जो स्वाद के लिए ही भोजन करते हैं- वे समय से पूर्व ही अवसान को प्राप्त होते हैं और उनसे ठीक से काम भी नहीं होता।

काकोजी (श्रीघनश्यामदासजी बिरला)

सामाजिक वरदान थी उनकी उपस्थिति

आदरणीय श्री बसंतकुमार जी बिड़ला के 98 वर्ष की आयु में गोलोकवास का समाचार संपूर्ण माहेश्वरी समाज के लिये वज्रपात है। उनकी उपस्थिति अपने आप में एक सामाजिक आश्वासन, एक सामाजिक वरदान जैसी थी। बी.के. बाबू के नाम से सुपरिचित व विदर्भ केसरी आदरणीय ब्रजलालजी बियाणी के जामाता श्री बिड़ला इस उद्योग घराने की नींव थे। पद्मविभूषण परम आदरणीय घनश्यामदास जी के पुत्र के रूप में आपने परिवार की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखी थी। मानव जीवन के हर क्षेत्र में फिर वह कला हो या साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, चैरिटी हर क्षेत्र में बीके बाबू का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। स्वनामधन्य स्व. आदित्य विक्रम बिड़ला के पिता, सुयोग्य कुमार मंगलम के दादा, माहेश्वरी समाज पर वरद हस्त रखनेवाली पद्मभूषण राजश्री जी के ससुर हमारे बीच नहीं रहे, यह मन को कचोटनेवाली खबर है। ''जातस्यहि ध्रुवोमृत्यु-भगवान ने गीता में कहा है परंतु उसे स्वीकार कर पाना हम सामान्य जीवों के लिए बहुत कठिन है। मैं भरे हृदय से स्वतः और श्री आदित्य विक्रम बिरला मेमोरियल व्यापार सहयोग केंद्र की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि स्व. श्री बीके बाबू के श्री चरणों में अर्पित कर परमपिता ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे उन्हें अपना चिरंतन सान्निध्य दें। परिवार और समाज को यह दुःख सहने की क्षमता भी ईश्वर ही दे।

- बंशीलाल राठी
कार्याध्यक्ष-श्री आदित्य विक्रम बिरला मेमोरियल
व्यापार सहयोग केंद्र, चेन्नई

महान समाजसेवी थे श्री बिड़ला

आज श्रद्धेय श्री बसंतकुमारजी बिड़ला भले ही हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके द्वारा बनाए गए विभिन्न संस्थानों के रूप में उनकी विरासत एवं उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की स्मृति हमारे दिलों में सदैव जीवित रहेगी। आपने अपने जीवनकाल में जो सामाजिक सेवा एवं परोपकारी कार्य किए हैं, वो सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। मेरा एवं मेरे परिवार का श्री बसंतकुमार बिड़ला एवं उनके परिवार के साथ लगभग पिछले 6 दशक, सन् 1962 से काफी करीबी संपर्क रहा है। हमारे परिवार पर आपकी असीम कृपा, प्रेम एवं आशीर्वाद हमेशा रहा है। आपने मेरे चारों पुत्रों के विवाह में उपस्थित होकर उन्हें अपना आशीर्वाद दिया था। कोलकाता के नंदराम मार्केट में जब भीषण आग लगी थी और कई व्यवसायी आर्थिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गए थे, तब इन्होंने मुझे वहां भेजा था और स्वयं भी नंदरात मार्केट जाकर सभी व्यवसायियों के साथ खड़े हुए और उन सभी को अपना सहयोग प्रदान किया। मुझे सामाजिक क्षेत्र में आगे बढ़ाने में भी श्री बिड़ला का अहम योगदान है। उनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ही मैं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के 27वें सत्र के अधिवेशन में सभापति निर्वाचित हुआ। मेरा सौभाग्य है कि पहली बार मुझे अपने साथ जोधपुर लेकर गए थे और वहां उन्होंने एक माहेश्वरी भवन निर्माण की नींव रखी एवं सहयोग प्रदान किया।

- जोधराज लड्ढा, कोलकाता
पूर्व सभापति अभा माहेश्वरी महासभा

भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित

जाने माने उद्योगपति श्री बसंतकुमार बिड़ला का निधन हो गया। वे घनश्यादासजी बिड़ला के सबसे छोटे पुत्र थे। उनका जन्म 15 जनवरी 1921 में हुआ। 15 साल की उम्र से ही वे कारोबार में सक्रिय हो गए थे। आप उद्योगपति होने के साथ एक गोपनीय ढंग से बिना प्रचार के लाखों रुपए देने वाले दानदाता भी थे। आपके निधन से समाज में शोक का वातावरण है। औद्योगिक व सामाजिक क्षेत्र में प्रायः सभी लोगों का उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने का एक तांता लग गया है। कर्मठ व जागरूक सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते उन्हें अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

- जयकिशन झंवर, बैंगलोर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित

श्रद्धेय श्री बसंतकुमारजी उर्फ बीके बाबूजी का जाना एक चिर अभाव है। उनकी स्मृति हमारे हृदय में अमिट रहेगी। यह मेरा परम सौभाग्य था कि बाबूजी के परिवार को करीब से देखने का अवसर विदर्भ केसरी श्री बृजलाल बियाणी की पावन स्मृति में स्थापित संस्था श्री बृजलाल बियाणी शिक्षा समिति अमरावती के माध्यम से मिलता रहा। समिति का यह पौधा सन् 1967 में रोपित किया गया था। सन् 1972 से पुष्पित पल्लवित होते रहा तथा आज वटवृक्ष बन गया है। इसे उन्नत करने में संस्था को आपके परिवार व संचालित औद्योगिक इकाइयों से प्रशसंनीय दान मिलता रहा। फलस्वरूप संस्था प्रगति और उन्नति के मार्ग पर चलने में सशक्त हुई।

- श्याम टावरी
पूर्व समन्वयक श्री बृजलाल बियाणी शिक्षा समिति अमरावती

समाज ने खोया सपूत

मैं वृहतर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि बीके बाबू के चरणों में अर्पित करती हूं। स्वनामधन्य, माहेश्वरी समाज के ही नहीं देश विदेश में ख्याति प्राप्त उद्योग जगत के सिरमौर श्रद्धेय श्री बी.के. बाबू के निधन से समाज ने एक सपूत खोया है। एक अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

साहित्य के वो सतत् पुजारी यूं मुंह मोड़कर चले गए,
उद्योग जगत के सिरमौर वो प्राण छोड़कर चले गये,
जीवन किया पूरा समर्पित मातृभूमि की सेवा में
समाज से तो दिल गठबंधन वो आज दिल तोड़कर चले गए।

- निर्मला मल्ल
वृहतर कोलकाता प्रादेशिक महेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

श्री बी.के. बिड़ला

श्री बी.के. बाबू के श्री चरणों में
लड्ढा परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...

जोधराज लड्ढा

निवर्तमान सभापति – अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

* सूरज देवी लड्ढा
* अरूण अनिता लड्ढा
* संजय निशा लड्ढा
* अजय मृदुला लड्ढा
* मनोज मीनाक्षी लड्ढा

8-ए, एवरेस्ट हाऊस, 46-सी, जवाहरलाल नेहरु रोड, कोलकाता-700071.
मो. 9830071200. ईमेल - jrladdha@jrladdha.in

सामाजिक कुरीतियां एकदम उत्पन्न नहीं हुईं बल्कि ये परंपराओं के भटकाव की प्रणाली में धीरे-धीरे निर्मित होती गई हैं। यदि इनके उत्पन्न होने में हमारी सामाजिक व्यवस्था की कहीं न कहीं कमी रही तो इनका उन्मूलन करना भी हमारा नैतिक सामाजिक दायित्व होना चाहिए।

बालकृष्ण जाजू,
'बालक', जयपुर

कैसे उत्पन्न होती है सामाजिक कुरुतियां

सामाजिक व्यवस्थाओं परंपराओं का प्रादुर्भाव कब और कैसे हुआ पता नहीं? लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि समाज में कुरुतियों का प्रादुर्भाव वैभव प्रदर्शन से ही संभावित हुआ है। देखते-देखते ही अतिथियों के लिए सम्मानपूर्वक भोजन व्यवस्था कब असीमित व्यंजनों में बदल गयी पता ही नहीं चला। अंततः आज विवाह उत्सवों में अन्न का दुरुपयोग रोकने के प्रयास, व्यंजन सीमा का निर्णय जैसे प्रयास, निर्धारण, वैभव प्रदर्शन से उपजी सामाजिक कुरुतियों के विरुद्ध समसामयिक कदम हैं।

ऐसे बनती हैं कुरुतियां

कैसे और कब कुरुतियां सुरसा बन जाती हैं? जरा गौर कीजिये ''कभी बेटी को दिया जाने वाला ''स्वैछिक उपहार'' ''दहेज'' बन गया (सिर्फ वधू पक्ष पर लागू)। समधी को दिया जाने वाला मान- 'मिलनी' बन गया (सिर्फ वधू पक्ष पर लागू)। समधन को दिया जाने वाला मान 'पगालाग्नि' बन गया (सिर्फ वधू पक्ष पर लागू)। गर्भस्थ शिशु का स्वास्थ्य परीक्षण-कन्या 'भ्रूणहत्या' बन गया (सिर्फ कन्याभ्रूण पर लागू)।

मृत्यु पर पद और कपड़े

मृतक की मृत्यु के पश्चात 12 माह तक परिजनों द्वारा श्राद्ध की नई थाली निकालने की धार्मिक परंपरा है। कदाचित किसी कमजोर आय वाले परिवार की परिस्थितियों के प्रति सहायक भूमिका के लिए किसी विद्वान बुजुर्ग ने समयानुकूल वैकल्पिक रास्ता निकाला होगा कि ननिहाल, ससुराल, बड़ी बहिन, समधी पक्ष की तरफ से पद, कपड़ा व्यवस्था कर दी जाए ताकि अर्थाभाव से पीड़ित परिवार कमजोर हीन भावना का शिकार न हो। संभवतः उस समय काल की वैकल्पिक व्यवस्था आज कुरुति बनकर औचित्यहीन मजबूरी बन गई है।

कुरुतियों की समीक्षा जरूरी

समय के साथ-साथ सामाजिक परिदृश्य, समयानुकूल जरूरतें एवं वैचारिक सोच में परिवर्तन होते आए हैं। बालिका बचाओ के समय काल में भी बहू के परिजनों पर सम्मान की जवाबदेही के नाम पर मिलनी, पहरावणी, पगालाग्नि के लागू लिफाफे (सामाजिक जजिया कर जैसी कुरीति बन चुकी व्यवस्था) को समाप्त करवाने के लिए विकृत कुरुतियों की समीक्षा समय की जरूरत है। प्रबुद्ध माहेश्वरी समाज में मृत्युभोज जैसी कुरुति तो समाप्त सी हो गई। इसी कड़ी में मान्यताओं और परंपराओं को सुरक्षित रखते हुए ननिहाल-ससुराल को छोड़कर अन्य समधी पक्ष पर सम्मान के नाम पर शॉल, दुशाले, पद, कपड़े की गैरजरूरी फिजूलखर्ची पर रोक लगाने के लिए समाज में एक बदलाव की लहर चले, मातृशक्ति पहल करे तो सब संभव है। चिंतन समय की जरूरत है।

समाजसेवा की भावना क्या होती है? इसके लगभग प्रतिरूप ही बन चुके है, बाबूजी पद्मश्री बंशीलाल राठी। आखिर उनकी इस उत्कृष्ट भावना के सामने सेवापथ भी क्यों नतमस्तक न हो, जब उनकी इस भावना के सामने उम्र की बाधा तक नतमस्तक है। बाबूजी आगामी 14 अगस्त को अपनी उम्र के 86 वर्ष पूर्ण करने वाले हैं और कई बार अस्वस्थता की स्थिति के कारण बेड से भी नहीं उठ पाते लेकिन फिर भी चाहे श्री आदित्य बिड़ला व्यापार सहयोग केन्द्र का कोई काम हो या अन्य कोई सामाजिक कार्य वे अपनी जिम्मेदारी इस स्थिति में भी बखूबी निभाते हैं।

सेवा पथ भी जिनके सामने नतमस्तक
पद्मश्री बंशीलाल राठी

▸▸ टीम SMT

पद्मश्री बंशीलाल राठी आज समाज के लिये सिर्फ एक नाम नहीं बल्कि समाजसेवा के पथ पर एक ऐसा वरदहस्त हैं, जिनकी मौजूदगी मात्र ही हर कार्य की सफलता की ग्यारण्टी है। यह उनकी प्रबल समाजसेवा की भावना ही है कि उन्होंने जो सेवा के पौधे दशकों पूर्व रोपे उन्हें वे उम्र के इस 86 वें पड़ाव पर भी उसी तरह सींच रहे हैं, बढ़ती उम्र की असमर्थता की भी परवाह किये बिना। यदि वे बेड पर हैं और कोई समाज का कोई कार्य लेकर पहुँच जाए तो भी उसे खाली हाथ नहीं लौटना पड़ता। चाहे आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केन्द्र हो या महासभा इनकी शायद ही कोई ऐसी बैठक होगी जिसमें उनकी उपस्थिति न रही हो, चाहे व्हीलचेयर पर ही सही लेकिन पहुँचे अवश्य।

कैरियर की ओर बढ़ते युवाओं को प्रेरणा

आज उच्च शिक्षित होते हुए भी बड़ी संख्या में युवा बेरोजगारी का रोना रोते दिखाई दे जाऐंगे। ऐसे युवाओं के लिये तो बाबूजी रोल मॉडल ही हैं। 14 अगस्त 1933 को नागौर (राजस्थान) के खींवसर ग्राम में सेठ श्री गंगाधर राठी के यहाँ जन्मे बंशीलाल राठी वास्तव में एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं। मात्र प्राइमरी स्तर तक शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद उन्होंने शून्य से शिखर की ऊँचाई प्राप्त की। वर्तमान में स्टील, फाइनेंस, एक्सपोर्ट आदि कई व्यवसाय व उद्योगों का संचालन कर रहे हैं। समाजसेवा के अंतर्गत अभा माहेश्वरी महासभा के सभापति जैसे शीर्ष पद की जिम्मेदारी भी निभाई। समाज की कई संस्थाओं व ट्रस्टों के विकास के मूल में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उन्होंने समाज को राह दिखाई कि सिर्फ संस्था बनाकर छोड़ देना ही नहीं बल्कि उसकी देखरेख कर उसे बड़ा करना भी हमारा कर्तव्य होता है। ऐसी अनगिनत संस्थाएँ हैं, जिनमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बाबूजी सहयोगी बने हुए हैं।

उम्र के इस पड़ाव पर भी आदित्य बिड़ला केन्द्र की जिम्मेदारी

बाबू जी अपनी उम्र के 86 वें पड़ाव हैं, जिस पर वे कई बार लम्बे समय तक इतने अस्वस्थ रहते है कि उन्हें बेड पर ही रहना पड़ता है। वैसे भी अब बिना सहारे के चलना फिरना उनके लिये सम्भव नहीं। इसके बावजूद बाबूजी अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य तथा शीर्ष सेवा संस्था श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केन्द्र के कार्याध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी सफलतापूर्वक निभा रहे है। वर्तमान में श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र समाज के आर्थिक विकास की धुरी बन चुका है। इसकी स्थापना भी श्री राठी के अभा माहेश्वरी महासभा के सभापतित्वकाल में वर्ष 1997 में हुई थी। इसके पश्चात यह बिड़ला उद्योग समूह की चेयरपर्सन राजश्री बिड़ला की अध्यक्षता में सतत रूप से कार्य कर रहा है। प्रारंभ से ही श्रीमती बिड़ला ने श्री राठी को इस संस्था का नेतृत्व कार्याध्यक्ष के रूप में सौंप दिया था। तब से ही इसे शून्य से शिखर की ऊँचाई देने में श्री राठी के नेतृत्व का बहुत बड़ा योगदान है। इसे उनका जज्बा ही कहा जाए कि संस्था द्वारा कोष संग्रहण का जो भी लक्ष्य तय किया गया श्री राठी ने सदैव ही उससे अधिक की लक्ष्य पूर्ति की। बढ़ती उम्र की परेशानी व अस्वस्थता के बावजूद हर किसी को विश्वास रहता है कि बाबूजी श्री राठी अपने इस लक्ष्य को अवश्य ही पूरा कर लेंगे, क्योंकि कभी उनकी असफलता किसी ने देखी ही नहीं।

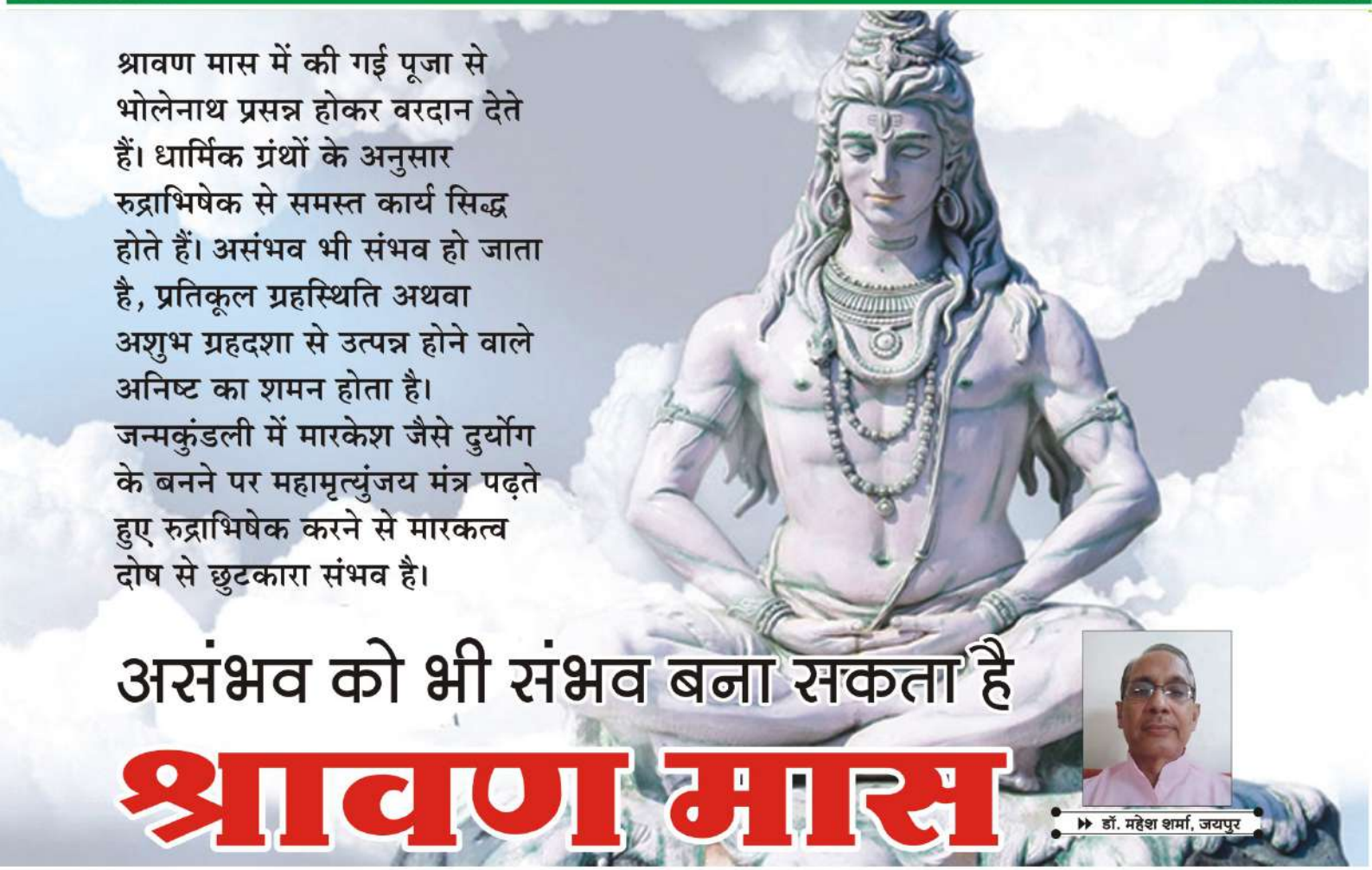

श्रावण मास में की गई पूजा से भोलेनाथ प्रसन्न होकर वरदान देते हैं। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार रुद्राभिषेक से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। असंभव भी संभव हो जाता है, प्रतिकूल ग्रहस्थिति अथवा अशुभ ग्रहदशा से उत्पन्न होने वाले अनिष्ट का शमन होता है। जन्मकुंडली में मारकेश जैसे दुर्योग के बनने पर महामृत्युंजय मंत्र पढ़ते हुए रुद्राभिषेक करने से मारकत्व दोष से छुटकारा संभव है।

असंभव को भी संभव बना सकता है

श्रावण मास

डॉ. महेश शर्मा, जयपुर

देवाधिदेव महादेव को प्रिय सावन (श्रावण) मास 17 जुलाई से शुरू हो गया है। इसमें आशुतोष भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्व है। पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार श्रावण में ही समुद्र मंथन से निकला विष भगवान शंकर ने पीकर सृष्टि की रक्षा की थी, इसलिए इस मास में शिव आराधना करने से भोलेनाथ की कृपा प्राप्त होती है। पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र होने के कारण यह श्रावण या सावन का महीना कहलाता है। श्रवण नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा है। इस मास में सूर्य संक्रांति कर्क राशि में होती है। कर्क का स्वामी भी चंद्रमा है, अतः चंद्रमा के स्वामित्व वाला सोमवार भगवान शंकर को अत्यंत प्रिय है। श्रवण नक्षत्र के चारों चरण मकर राशि में पड़ते हैं और मकर राशि का स्वामी ग्रह शनि है। शनि की दशा-अंतर्दशा और साढ़ेसाती से छुटकारा पाने के लिए श्रावण में शिव पूजा अमोघ फलदायी है। इस मास में रोज शिवोपासना, पार्थिव शिवपूजा, रुद्राष्टाध्यायी पाठ, महामृत्युंजय जप आदि करने का विशेष महत्व है। शिवार्चन में शिव महिम्न स्तोत्र, शिव तांडव स्तोत्र, शिव पंचाक्षर स्तोत्र, शिव मानस पूजा स्तोत्र, रुद्राष्टक, बिल्वाष्टक, लिंगाष्टक, शिवनामावल्याष्टक स्तोत्र, दारिद्रय दहन स्तोत्र आदि के पाठ करने का महत्व है। मंत्र-यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ महामृत्युंजय यंत्र (शिव यंत्र) की साधना सावन मास में करना फलदायी होता है। जप-तप आदि के लिए यह मास सर्वश्रेष्ठ है।

कैसे करें शिव पूजा

भोलेनाथ की पूजा विधि अत्यंत सरल है। वे मात्र आक, धतूरा, भांग, बिल्वपत्र, पुष्प, जल आदि से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। शिवजी की पूजा के लिए जल, कच्चा दूध, दही, बूरा, घी, शहद, गंगाजल, पंचामृत, मोली, सफेद वस्त्र, यज्ञोपवित, चंदन, फल, बिल्वपत्र, दूर्वा, आक, धतूरा, कमलगटा, पान, सुपारी, लोंग, इलाइची, पंचमेवा, धूप, दीप, दक्षिणा आदि सामग्री एकत्रित करके पूजा के लिए शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर पहले 'ॐ नमः शिवाय' कहकर तीन बार आचमन करें। 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृताम' इस मंत्र द्वारा विभूति धारण करें। पुनः पवित्री धारण, शरीर शुद्धि और आसन शुद्धि कर लेनी चाहिए। पूजन का संकल्प लेकर संकल्प वाक्य के अंत में 'श्रीसाम्ब सदाशिव प्रीत्यर्थं गणपत्यादि सकल देवता पूर्वकं श्रीभवानीशंकर पूजनं करिष्ये' कहकर संकल्पित जल छोड़ें। इसके बाद सर्वप्रथम गौरी-गणेश का पूजन करें। तत्पश्चात भगवान शंकर के विशिष्ट अनुग्रह की प्राप्ति के लिए उनके पूजन से पूर्व उनके परिवार व पार्षदों गणेश, पार्वती, नंदीश्वर, वीरभद्र, कार्तिकेय, कुबेर एवं कीर्तिमुख का पूजन करें और आह्वान मंत्रों से मूर्तियों के समीप पुष्प छोड़ें। जलहरी में सर्प का पूजन करने के पश्चात शिवपूजन करना चाहिए। सबसे पहले शिवलिंग को दूध से स्नान कराएं, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराएं और आचमन के लिए जल चढ़ाएं। अब दही से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराएं तथा आचमन के लिए जल समर्पित करें। इसी क्रम से घी, शहद और शर्करा से स्नान करवाकर शुद्ध जल से स्नान कराएं तथा आचमन के लिए तीनों स्नानों में जल चढ़ाएं। इसके बाद एकत्रित पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराएं। पुनः कपूर से सुवासित शीतल जल चढ़ाएं। केसर को चंदन से घिसकर तिलक-त्रिपुंड लगाएं। पुष्प, बिल्वपत्र, धूप, दीप, नैवद्य अर्पण करें। आरती, पुष्पांजलि एवं क्षमा याचना करें। पूजा में 'ॐ नमः शिवाय' तथा 'हर-हर महादेव' का जप निरंतर करते रहें।

अमोद्य फलदायी है श्रावण व्रत

पुराणों में सोमवार व्रत को अमोघ फलदायी कहा गया है। विवाहिताओं के सावन सोमवार का व्रत करने से परिवार में खुशियां, समृद्धि और सम्मान प्राप्त होता है। पुरुषों को इस व्रत से कार्य-व्यवसाय में उन्नति, शैक्षणिक गतिविधियों में सफलता और आर्थिक उन्नति मिलती है। अविवाहित पुरुषों को सुशील पत्नी मिलती है। कन्या यदि सावन सोमवार का व्रत करे और शिव परिवार का विधिपूर्वक पूजन करें तो उसे अच्छा घर और वर मिलता है। सोम ब्राह्मणों के राजा और औषधियों के देवता हैं। अतः शिव प्रिय सोमवार का व्रत करने से समस्त शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्ट दूर होकर जीवन सुखमय हो जाता है। सोमवार के व्रत का विधान अत्यंत सरल है। इसमें एक समय ही भोजन किया जाता है। भगवान शिव और माता पार्वती का ध्यान कर शिव पंचाक्षर मंत्र ''ॐ नमः शिवाय'' का जप करते हुए पूजन करना चाहिए। इससे भगवान शंकर प्रसन्न होकर मनोवांछित फल देते हैं। इस दिन स्नान करके श्वेत या हरे वस्त्र धारण करें, श्री गणेशजी, शिवजी, पार्वतीजी तथा नंदीजी की पूजा करें। दिनभर मन प्रसन्न रखें। क्रोध, ईर्ष्या, चुगली आदि न करें। दिन भर पंचाक्षरी मंत्र का मन ही मन जप करते रहें। शाम को शिव मंदिर में या अपने घर में ही मिट्टी से शिवलिंग और पार्वती तथा श्रीगणेश की मूर्ति बनाकर सोलह प्रकार से पूजन करें। इनमें सोलह दूर्वा, सोलह सफेद फूल और सोलह मालाओं से शिव पूजन करना समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। अंत में सोलह बत्तियों के दीपक से आरती करके क्षमा प्रार्थना करें।

कैसे लगाएं त्रिपुंड

चंदन, भस्म, त्रिपुंड और रुद्राक्ष माला ये शिव पूजन के लिए विशेष सामग्री हैं, जो पूजा के समय शरीर पर होनी चाहिए। शिवलिंग अथवा अपने ललाट पर तिलक-त्रिपुंडविधि विधान से लगाना चाहिए। सर्वप्रथम अंगूठे से ऊर्ध्वपुण्ड (नीचे से ऊपर की ओर) लगाने के बाद मध्यमा और अनामिका अंगुली से बायीं ओर से शुरू कर दाहिनी ओर भस्म लगाानी चाहिए। इसके बाद तीसरी रेखा अंगूठे से दाहिनी ओर से शुरू कर बायीं ओर लगावें। इस प्रकार तीन रेखाएं खिंच जाती हैं, जिसे त्रिपुंड कहते हैं। इन रेखाओं के बीच का स्थान रिक्त रखें। इसके बाद ''ॐ नमः शिवाय'' बोलते हुए ललाट, गर्दन, भुजाओं और हृदय पर भस्म लगाएं।

पूजा में रखें ये सावधानी

▶▶ शिव की पूजा में दूर्वा और तुलसी मंजरी से पूजा श्रेष्ठ मानी जाती है। शंकर की पूजा में तिल का निषेध है।

▶▶ शिवजी को सभी पुष्प प्रिय हैं। केवल चंपा और केतकी पुष्प निषिद्ध हैं। नागकेसर, जवा, केवड़ा तथा मालती का पुष्प भी नहीं चढ़ाया जाता है।

▶▶ निश्चित संख्या में जूही के फूल चढ़ाने से धन-धान्य की कमी नहीं रहती है। हार सिंगार के पुष्प अर्पण करने से सुख-संपत्ति की वृद्धि होती है। भांग एवं सफेद आक के पुष्प चढ़ाने से भोलेशंकर शुभ आशीर्वाद प्रदान करते हैं। बिल्वपत्र, कमलपुष्प, कमलगट्टा के बीज चढ़ाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। पुत्र प्राप्ति के लिए धतूरे के पुष्प अर्पण करें। राई के पुष्पों द्वारा पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है।

▶▶ शंकरजी की पूजा में बिल्वपत्र प्रधान है, किंतु बिल्वपत्र में चक्र और बज्र नहीं होना चाहिए। कीड़ों द्वारा बनाया हुआ सफेद चिह्न चक्र कहलाता है। बिल्व पत्र में डंठल की ओर जो थोड़ा सा मोटा भाग होता है, वह बज्र कहा जाता है। वह भाग तोड़ देना चाहिए। बिल्वपत्र चढ़ाते समय बिल्व पत्र का चिकना भाग मूर्ति की ओर रहे अर्थात उलटा चढ़ाएं। अन्य फल पुष्प जैसे उगते हैं वैसे ही सीधे चढ़ाने चाहिए।

▶▶ बिल्व-पत्र को चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, संक्रांति व सोमवार को नहीं तोड़ें। निषिद्ध दिन से पहले तोड़कर रखा बिल्वपत्र बासी नहीं होता है। यदि नूतन बिल्व पत्र नहीं मिल सके तो शिवजी पर चढ़े बिल्वपत्र को ही धोकर बार-बार चढ़ाया जा सकता है।

▶▶ शिवलिंग पर आक, धतूरा, कनेर तथा नील कमल के पुष्प अर्पण करने से पुण्यफल प्राप्त होता है।

▶▶ शिवलिंग पर चढ़े हुए फल, फूल, नैवेद्य, पत्र एवं जल ग्रहण करना निषिद्ध है। यदि शालिग्राम से उनका स्पर्श हो जाय तो वे ग्रहण करने योग्य हो जाते हैं। ज्योर्तिलिंग पर चढ़े हुए जल, पदार्थ आदि ग्रहण करने योग्य होते हैं।

▶▶ शंकरजी के मंदिर में आधी परिक्रमा करें। जलहरी से निकलने वाले जल की धारा का उल्लंघन नहीं करें।

▶▶ भगवान शंकर के पूजन के समय करताल नहीं बजाया जाता है।

▶▶ शिव मंदिर में सफाई-झाड़ू करने वाले शिव भक्त की मनोकामना भी पूरी होती है।

राशि अनुसार विशेष शिव पूजा

■ **मेष-** बिल्व पत्र पर सफेद चंदन से श्रीराम लिखकर शिवलिंग पर अर्पित करें। ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

■ **वृष-** सुख शांति के लिए तुलसी मंजरी और बिल्वपत्र के साथ शिवलिंग पर दूध और शर्करा मिश्रित जल चढ़ाएं। शिवपंचाक्षर स्तोत्र का पाठ करें।

■ **मिथुन-** शहद मिश्रित जल से अभिषेक करें। हरा वस्त्र और हरे फल शिव मंदिर में दान करें। 'ह्रीं ओम नमः शिवाय ह्रीं' मंत्र का जप करें।

■ **कर्क-** कपूर मिश्रित जल, दूध, दही, गंगाजल व मिश्री से शिवजी का अभिषेक करें। दूब और बिल्वपत्र चढ़ाएं। 'ओम ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय' मंत्र का जप करें।

■ **सिंह-** मिश्री व जल से अभिषेक करें। बिल्वपत्र के साथ लाल पुष्प शिवलिंग पर चढ़ाएं। आक की माला अर्पित करें। शिवमहिम्न स्तोत्र का पाठ करें।

■ **कन्या-** दूध और शहद से शिवलिंग का अभिषेक करें। बिल्वपत्र और धतूरा अर्पित करें। आक की माला चढ़ाएं। रुद्राष्टक का पाठ करें, तो अपयश तथा आर्थिक हानि से बच सकेंगे।

■ **तुला-** सावन में दही और गन्ने के रस से अभिषेक करें। बिल्व पत्र के साथ तुलसी और हारसिंगार की माला चढ़ाएं। शिव तांडव स्तोत्र का पाठ करें।

■ **वृश्चिक-** शिवलिंग पर गंगाजल के साथ दूब और बिल्वपत्र चढ़ाएं। लाल चंदन का तिलक करें। शिवाष्टोत्तरशतनामावली का जप करें।

■ **धनु-** कच्चे दूध में केसर, मिश्री व हल्दी मिलाकर शिवलिंग को स्नान कराएं। हल्दी व केसर से तिलक करें। रुद्र गायत्री 'ॐ तत्पुरुशाय विद्महे। महादेवाय धीमहि।। तन्नोरुद्र प्रचोदयात्।।'' का जप करें। केला, आम, पपीता का दान दें।

■ **मकर-** शनि की शांति के लिए घी, शहद, दही और बादाम के तेल से अभिषेक करें तथा नारियल के जल से स्नान कराकर नीलकमल अर्पित करें। लघु मृत्युंजय मंत्र 'ओम जूं सः' का जप करें।

■ **कुंभ-** इस राशि के जातक तेल से अभिषेक करें, शिवलिंग पर जल के साथ दूब और बिल्वपत्र चढ़ाएं। बीमारी अथवा शत्रुभय हो तो महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

■ **मीन-** श्रावण मास में कच्चे दूध में हल्दी मिलाकर शिवजी को अर्पित करें। तुलसी मंजरी के साथ बिल्वपत्र, पीले पुष्प, कनेर के पुष्प शिवलिंग पर चढ़ाएं। शिव पंचाक्षर मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें।

जीवन का प्रमुख पुरुषार्थ है धन अर्जन

धन अर्जन कितना करें? यह प्रश्न अक्सर चर्चा में रहता है। इस बारे में सभी के अपने-अपने मत हैं। कुछ लोग तो आवश्यकता से अधिक पैसा कमाने को अपराध तक सिद्ध करने में जुटे हैं। जबकि वास्तव में देखा जाए तो यह पुरुषार्थ है, जो निरंतर चलना चाहिए। आईये देखें धर्मशास्त्रों की नजर में धन अर्जन।

▸▸ प्रो. शिवरतन भूतड़ा, जोधपुर

प्राचीन भारतीय साहित्य में धन के महत्त्व का मार्मिक वर्णन हुआ है। निम्न श्लोक में वर्णित है कि धन के अभाव में सर्वगुण संपन्न व्यक्ति भी यश व सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता है-

"शूरः सुरूपः सुभगश्च वाग्मी, शस्त्राणि शास्त्राणि विदांकरोतु।
अर्थं विना नैव यशश्च मानं, प्राप्नोति मर्त्योऽत्र, मनुष्यलोके।।"

अर्थात चाहे मनुष्य वीर हो, सुंदर हो, वाक्पटु हो और शस्त्र विद्या तथा शास्त्र विद्या दोनों में निपुण हो, तो भी इस मानव जगत् में वह धन के बिना न यश प्राप्त कर सकता है और न मान ही।

चार पुरुषार्थों में शामिल

भारतीय धर्म शास्त्रों में मनुष्य जीवन के चार लक्ष्यों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उल्लेख हुआ है। इन्हें पुरुषार्थ की संज्ञा दी गई है। इनकी साधना से मनुष्य इस संसार और पर लोक में तर जाता है। इनमें अर्थ और काम को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। नैतिक तरीके से धन अर्जन और उसका वर्द्धन सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। इस कर्म को निष्ठा और समर्पण से करने वाला निश्चय ही कर्म योगी होता है। महान् संत राजर्षि भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतक ग्रंथ में धन के महत्त्व को भली भांति समझाया गया है। श्लोक सं. 41 में दर्शाया गया है, "जिसके पास धन है, वही पुरुष कुलीन है। वही पंडित है, वही विद्वान और गुणज्ञ है, वही वक्ता और वही दर्शनीय है।" अभिप्राय यह है कि सभी गुण स्वर्णरूपी धन के आश्रित हैं।

अधिक धन अर्जन के सतत हों प्रयास

विष्णु शर्मा रचित ग्रंथ पंचतंत्र में भी धन के महत्त्व और उसके वर्द्धन का बहुत अच्छा वर्णन हुआ है। पहली कहानी के प्रारंभ में वर्णित है, "यदि किसी व्यक्ति के पास अत्यधिक धन हो, तब भी उसे और अधिक धन अर्जित करने के सुनियोजित प्रयास करने चाहिए, क्योंकि यह ठीक ही कहा गया है कि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसे धन द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सके। "अतः हर बुद्धिमान् व्यक्ति को सदैव अपने धन को बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए। यदि किसी के पास धन है, तो उसका मित्र भी बहुत होंगे। उसके अपने रिश्तेदारों में भी सम्मान बढ़ेगा। इस बेरहम संसार में धनी व्यक्तियों के अजनबी भी रिश्तेदार बन जाते हैं, जबकि गरीब को अपने परिवार में ही तिरस्कृत होना पड़ता है। धनी व्यक्ति को लोग बहुत गुणवान, ज्ञानी और विद्वान की संज्ञा देने से भी नहीं चूकते। धन के कारण बूढ़ा धनी भी युवा नजर आता है और धन के अभाव में नवयुवक भी असमय बूढ़ा नजर आने लगता है।

जनहित में धन का सदुपयोग जरूरी

संपदा सृजन का कर्म तब ही श्रेयस्कर है, जब धन के कुछ हिस्से का उपयोग जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए किया जाए। विश्व के महानतम धनी बिल गेट्स और वारेन बफैट बड़ी उदारता से अपने धन के अधिकांश भाग का उपयोग चैरिटी फंड्स के माध्यम से असहायों को साधन सुलभ करवाने में कर रहे हैं। इंफोसिस के चेयरमैन नंदन नीलेकणी व उनकी धर्मपत्नी रोहिणी ने अपनी 11,062 करोड़ रुपए की संपत्ति के आधे भाग को दान में देने का निश्चय किया है। भारती एयरटेल के चेयरमैन सुनील मित्तल ने अपने परिवार की संपत्ति का 10 प्रतिशत हिस्सा यानी 7 हजार करोड़ रुपए विश्वविद्यालय स्थापित करने और सत्य भारती स्कूल के लिए दान में देने की घोषणा की है। अब्दुर रहीम खान ए खाना, जो रहीम के नाम से विख्यात हुए, सम्राट अकबर के अत्यधिक विश्वास पात्र और सर्वोच्च मनसबदार थे। उन्होंने अपनी संपत्ति का उपयोग दीन-दुखियों की सहायता के लिए जीवन पर्यंत किया। उनका निम्न दोहा धन के सदुपयोग की बहुत अच्छी शिक्षा देता है-

"तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पीयही न पान।
कह रहीम परकाज हित संपत्ति संचयी सुजान।।"

रिश्तों से लुप्त होती उनकी आत्मा

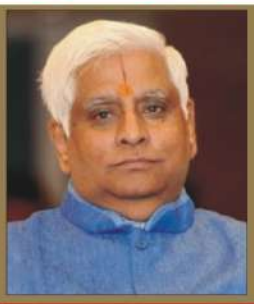

त्रिभुवन काबरा, वडोदरा

जिस तरह ऑक्सीजन के बिना जीवन संभव नहीं, वैसे ही प्रेम व अपनत्व के बिना भी असंभव ही है। यह सौभाग्य है कि हमें ये सब रिश्तों में निहित भावनाओं के रूप में सहज उपलब्ध होते रहे हैं। लेकिन बदलते समय ने रिश्तों को निष्प्राण सा कर दिया है क्योंकि रिश्ते तो बचे हैं, लेकिन उनकी 'आत्मा' प्रेम व अपनत्व नदारद हो रहे हैं।

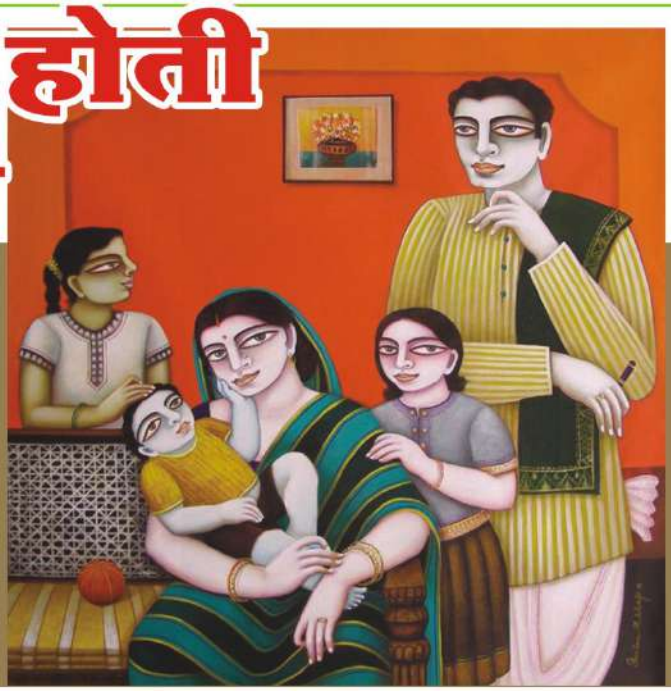

बदलते समय के साथ रिश्ते निभाने के तरीके बदल रहे हैं। अब रिश्ते दिमाग से सोच समझकर निभाए जाते हैं। मन व भावनाओं का स्थान बहुत कम रह गया है। जब कभी यह सवाल मन में उठता है कि रिश्तों के मायने क्यों बदल गए, तब लगता है कि शायद यह विरासत हम आने वाली पीढ़ी को ठीक से नहीं दे पाए। क्या अब रिश्ते सिर्फ एक सामाजिक बंधन रह गए हैं? क्या हम रिश्तों को जीना, उनकी भावनाओं को समझना भूल गए हैं? क्या आने वाली पीढ़ी के लिए यह शब्द विलुप्त हो जाएगा। कहां गए हमारे वो संस्कार जो रिश्तों की अहमियत को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे लेकर जाते थे? गुजरते समय के साथ जब कभी वो पुरानी बातें याद आती हैं, तो एक सुखद अहसास होता है कि शायद हमने अपने रिश्तों को जी भर के जिया है। तो कभी अनायास एक गहरी उदासी छा जाती है कि अब क्यों नहीं रह गया है, रिश्तों का महत्व?

कमजोर पड़ी रिश्तों की कड़ी

ऐसा लगता है जैसे लोहा समय के साथ जंग खाकर कमजोर हो जाता है, शायद हमारे रिश्तों के साथ भी वैसा ही कुछ हो गया है। रिश्तों की कड़ियां समय के साथ कमजोर हो गई हैं या कहें कि टूट गई हैं। कभी-कभी लगता है कि इस भीड़ में हर इंसान अकेला खड़ा है। रिश्ते सिर्फ मतलब के लिए रह गए हैं। हमने रिश्तों के नाम बदल दिए हैं, कभी जो चाचा-चाची हुआ करते थे, वे अब अंकल-आंटी हो गए हैं। दादा-दादी ग्रांड पा-ग्रांड मां बन गए हैं क्योंकि रिश्तों की बुनियाद बदल गई है। संयुक्त परिवारों की जगह न्यूक्लियर फैमिली ने ले ली है। हर छोटे-बड़े को प्राइवेसी चाहिए होती है। कभी जो बुजुर्ग घर की शान होते थे आज उनके लिए वृद्धाश्रम बनने लगे हैं। आजकल बच्चों को नानी-दादी जैसे रिश्तों के बारे में भी बताना पड़ता है। एक समय था जब बिना उनकी कहानियां सुने बच्चे सोते नहीं थे। अब उन कहानियों की जगह टीवी, मोबाइल, स्कूल वर्क या देररात की पार्टियों ने ले ली हैं।

'वह हंसी-ठिठोली गप्पें' सब बस यादगार

रिश्ते आज भी हैं मगर सिर्फ औपचारिक। हमारा दिमाग निर्धारित करता है कि कहां रिश्ता निभाना है तथा कहां उसको अनदेखा करना है। रिश्तों में मन एवं भावना का स्थान खत्म हो गया है। एक समय था जब हम इंतजार करते थे कि कब छुट्टियां होगी या कब कोई पारिवारिक उत्सव होगा, जिसमें सारे कुटुंब के लोग इकट्ठा होंगे, देर रात तक गप्पे चलेंगे। हंसी-ठिठोली के साथ गुड़-चना-मूंगफली का दौर चलेगा। कहां सोना है, यह सोचने की जरूरत ही नहीं होती थी क्योंकि मन से सोचते थे इसलिए सारा घर हमारा होता था। जहां जिसको जगह मिले, वहीं पर एक ही तकिये पर दो-दो सिर रखकर सो गए। बच्चों की किलकारियों से घर गूंजने लगता था। गर्मी की भरी दोपहरी में दादा, ताऊ, चाचा, भैया की नजर बचा कर पास के स्कूल में खेलने का मजा ही कुछ और था। फिर डांट या मार के डर से दादी के आंचल में छिप जाना आज भी याद आता है।

मेहमान अब 'जान से प्यारा' नहीं

पहले की तरह अब मेहमान 'जान से प्यारा नहीं रहा'। आज अगर एक भी रिश्तेदार घर पर आ जाता है, तो सबकी प्राइवेसी खत्म हो जाती है। आपसी संवाद की जगह टीवी या मोबाइल ने ले ली है। मेहमान के जाने पर सुकून की सांस ऐसे लेते हैं, लगता है जैसे बला छुटी। आजकल बच्चों की छुट्टियां समर कैंप या आने वाली परीक्षा की तैयारी में ही चली जाती है क्योंकि सबको अपने व बच्चों के कॅरियर की ज्यादा चिंता हो गई है। ऐसा नहीं कि अब अपनों से मिलने का दिल नहीं करता मगर हमारी प्राथमिकताएं बदल गई हैं। समाज में एक-दूसरे से बड़ा दिखने की होड़ में रिश्ते पीछे छूट गए हैं।

रूठने-मनाने का दौर खत्म

समय के साथ नाराज होने व मनाने के तरीके बदल गए हैं। एक समय था, जब किसी शादी ब्याह या तीज-त्योहार पर जमाई या ननदोई रूठ जाता था तो घर के सभी बड़े-बुजुर्ग उनकी मान मनुहार करने में जुट जाते थे तथा येन-केन प्रकारेण उनको मना ही लेते थे। उसके बाद उसकी चर्चा करके जो हंसी-ठिठोली होती थी, उसका आनंद कुछ और ही था। मगर अब तो रूठने का कार्यक्रम बहुत सोच-समझकर ही करना होता है कि कहीं मनाना तो दूर आपस की वार्ता ही बंद न हो जाए। क्योंकि रिश्तों की बुनियाद में यह तो कभी महसूस ही नहीं हुआ कि इसमें कितनी खुशी है? ना ही यह सिखाया गया कि रिश्तों का महत्व क्या है? इस समय में रिश्ते निभाना इस पर निर्भर करता है कि आने वाले समय में हमें किसकी कितनी जरूरत पड़ सकती है?

त्योहारों पर भी सीधा संपर्क नहीं

वह भी समय था जब त्योहार परिजनों व समाज के साथ मानते थे। त्योहार मनाने के लिए दूरदराज से भी अपने घरों को जाते थे तथा कई दिनों तक त्योहार का आनंद अपनों के बीच लेते थे। बहन-बेटियों व उनके ससुराल वालों का विशेष ध्यान रखते, घर पर बनी मिठाइयां पहुंचाते, दो रुपए मिलनी के दे कर गले लगाते। अड़ोस-पड़ोस व परिजनों के घर में जाने के लिए घंटी नहीं बजानी पड़ती थी। जो रिश्ते में नहीं भी होते उनको भी दादा, ताऊ, चाचा आदि कहकर संबोधित करते थे। आज हम विकसित हो गए हैं, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का जमाना है। दिमाग अपने मन पर हावी हो गया है। त्योहारों की शुभकामनाएं देने के लिए एक व्हाट्सएप या मैसेज ही काफी है। अगर कोई बहुत काम आने वाला व्यक्ति है, तो कॉल करके शुभकामनाओं का आदान-प्रदान कर लेते हैं।

अब रिश्ते दिल से नहीं दिमाग से

समय के साथ खाने व खिलाने का भी तरीका बदल गया है। आज सभी संसाधनों से सुसज्जित कीचन होने के बावजूद हम लोग खाना जोमेटो या स्वीग्गी जैसी वेबसाइड पर ढूंढते रहते हैं। मगर एक समय था जब मां अकेली रसोई में मिट्टी के चूल्हे में लकड़ियां फूंक-फूंककर पूरे घर का खाना बनाती थी मगर कभी माथे पर शिकन नहीं होती थी और न ही थकती थी क्योंकि रिश्ते मन से थे, दिमाग से नहीं। आज हम एक ही छत के नीचे रहते हुए भी एक दूसरे को अंदर से नहीं पहचान पाते हैं। हमें नहीं पता होता है कि कौन कितना मानसिक संताप में जी रहा है? हमने भावविहीन जिंदगी जीने की प्रवृत्ति बना ली है। आओ कोशिश करें फिर से रिश्तों को मन से जीने की, नहीं तो आने वाला कल इंसान को मशीन बना देगा, जिसमें मन व भावना का कोई पूर्जा नहीं होगा।

पर्यावरण के दोहे

▸▸ नवल डागा, जयपुर

बाँधी रक्षा वास्ते, राखी प्यारे हाथ। भैया रक्षा पेड़ की, करना मेरे साथ।।

तरुवर की रक्षा करें, ये देते वरदान। राखी के त्यौहार पर, भैया मेरी मान।।

मेरे संग में तरु की, लेना रक्षा भार। भैया राखी बाँधकर, पहनाना गलहार।।

पेड़ों की रक्षा करें, होगा ये उपहार। भाई-बहना प्रेम का, राखी है त्यौहार।।

मैंने बाँधी आपको, तरु के बाँधें आप। राखी रक्षा-पर्व है, हरता है संताप।।

पहले राखी पेड़ पर, बाँधेंगे इस बार। भैया मेरे आ गया, राखी का त्यौहार।।

बाँधी राखी हाथ में, भाई तरु के साथ, रक्षा मेरी-पेड़ की, करना दोनों हाथ।।

लाई राखी बाँधने, रोली अक्षत संग। भैया को बाँधी हरी, तरुवर के सतरंग।।

अब के राखी पेड़ के, बाँधी तेरे साथ। रही बाँधती हर बरस, राखी तेरे हाथ।।

पहली राखी पेड़ पर, बाँधेंगे उठ भोर। भैया, देखो राखियाँ, लाई नई नकोर।।

तेरा भैया हो यही, राखी पर कर्त्तव्य। रक्षा बहना-पेड़ की, भाई का मन्तव्य।।

पेड़ बचाने वास्ते, मिलकर करें निवेश। भेजे भाई-बहन ने, राखी पर संदेश।।

पेड़ों की रक्षा करें, होंगे आप समर्थ। रक्षा-बन्धन पर्व का, रक्षा करना अर्थ।।

करना रक्षा पेड़ की, अपनी रक्षा होय। रक्षाबन्धन पर्व पर, मैं समझाऊँ तोय।।

पेड़ सभी संसार में, सारे तात समान। इनके राखी बाँध कर, देंगे इनको मान।।

पावन रक्षा-पर्व पर, भैया यह मन धार। पेड़ों की रक्षा हमें, करनी है प्रणधार।।

बाँध रही मैं आपको, राखी का ये तार। मेरे संग में तरु को, करना होगा प्यार।।

बहना आने से लगे, मेघों की बौछार। पेड़ों से ही है सफल, राखी का संसार।।

बहन पेड़ पर बाँधना, राखी बारम्बार। हरी-भरी धरती रहे, महक उठे संसार।।

बहनें राखी बाँधकर, पहनाती गलहार। पेड़-पौध को पालना, मानेंगी उपहार।।

बहना राखी बाँधती, कहती रहती बात। भैया तरुवर रोपना, होगी वो सौग़ात।।

यदि रक्षा हो पेड़ की, तो रक्षित संसार। रक्षाबन्धन धर्म है, बहन कहे हर बार।।

पेड़ों से ही आ रही, हरियाली इस देश। राखी भाई-बहन को, देती ये सन्देश।।

लालचवश करना नहीं, हरे पेड़ पर वार। रक्षा-बन्धन पर हमें, दे भैया उपहार।।

पेड़ बचे हर हाल में, बचे तभी परिवेश। भैया राखी पर्व पर, होगी भेंट विशेष।।

मेरी रक्षा की सदा, खाता है सौगन्ध। रक्षा के इस पर्व पर, तरु-रक्षा का बन्ध।।

आज पेड़ को रोपना, होगी ये सौग़ात। राखी बाँधे बाद में, बहना कहती बात।।

पेड़ बचाने के लिए, खोजें नए विकल्प। रक्षाबन्धन मर्म का, भैया लो संकल्प।।

पेड़ रोपकर बहन को, दें राखी-उपहार। धरा हरी हो जायगी, होगा हर्ष अपार।।

कहती रक्षा-पर्व की, रंग-बिरंगी डोर। भैया पेड़ बचाइए, हरियाली चौ' ओर।।

खुश रहें... खुश रखें...

ईश्वर के नियम को समझने के लिए आध्यात्मिक समझ जरूरी है

संसार में रहते हुए हम लोग राष्ट्र, समाज तथा परिवार की व्यवस्था बनाते हैं और फिर स्वयं इस सिस्टम को तोड़ते भी हैं। इसी जोड़-तोड़ में जिंदगी बीत जाती है। जब अपने ही बनाएं संसार से परेशान हो जाते हैं तो भक्ति के मार्ग में उतार जाते हैं और भक्ति के इस संसार में हम अपनी इच्छा के अनुसार भगवान से मांग शुरू कर देते हैं। इस प्रकार हम ईश्वर की व्यवस्था में अपनी व्यवस्था का अतिक्रमण करते हैं। परमात्मा के साफ-सुथरे, हरे-भरे कृपा के क्षेत्र में हम अपनी निजी हित की मांगों की झुग्गी-झोपड़ी, ठेले, गुमठी, भवन अट्टालिकाओं के अतिक्रमण को बीच में ले आते हैं।

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

भगवान के विधान को लेकर हम कुछ भ्रम पाल लेते हैं। भगवान जितना नियंता है, उतना ही नियमबद्ध भी है। पृथ्वी का एक नियम है कि इसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है। जब कोई वस्तु ऊपर से नीचे गिरती है, तब पृथ्वी उसे खींचती है और इसी कारण से वह वस्तु पृथ्वी पर गिर जाती है। यह एक सामान्य सा नियम है, लेकिन हम अगर चल रहे हों तथा हमारी ही भूल से यदि ठोकर लग जाए और हम गिर जाएँ तो यहां हम यह नहीं कह सकते कि यह तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का नियम है, इसलिए गिर गए। हम अपनी ही भूल से गिरे हैं, पृथ्वी का नियम अपनी जगह है।

इस प्रकार भगवान ने सारी व्यवस्था कर रखी है। उन्होंने अपने कुछ नियम बना रखें हैं परंतु धर्म तथा संस्कृति की जो आचार संहिता है, उसका पालन हमें करना होगा। परमात्मा के नियम अपनी जगह हैं, उनको समझने के लिए एक आध्यात्मिक समझ होना जरुरी है। इसी समझ को कहीं-कहीं समाधि भी कहा गया। ऊहापोह और भ्रम के विचारों का वेग जब शांत हो जाए तब समझ या समाधि घटती है।

परमात्मा की व्यवस्था में जब जीने लगो तो समझ है और उसके अंग ही बन जाओ तो समाधि है। निर्विरोध और निर्विकल्प होकर ही ईश्वर के नियम का पालन किया जा सकता है। यह सीख परिवार प्रबंध में भी महत्वपूर्ण है।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "ऐसा क्यों?" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

खाना-खजाना

तिरंगी बर्फी

सामग्री - 500 ग्राम मावा (खोया), 250 ग्राम शक्कर, 100 ग्राम घी, कटे हुए बादाम, कटे हुए पिस्ता, कटे हुए काजू, दो चम्मच नारियल बूरा, 2 से 3 बूंद खाने वाला हरा रंग फूड ग्रेड, 2 से 3 बूंद खाने वाला केसरिया रंग फूड ग्रेड, दो चुटकी केसर, 2 से 3 चांदी वर्क की पत्ती

सजावट के लिए- केसर, नारियल बूरा और पिस्ता से सजाएं

विधि- एक कढ़ाई में घी गर्म करें, गर्म घी में बादाम, पिस्ता और काजू को भून लें। इसे अलग निकाल लें। फिर उसी कढ़ाई में मावा भूनें हल्का गुलाबी होने पर, मावे में शक्कर डालकर चलाएं, जब शक्कर पूरी तरह घुल जाए तो गैस बंद कर दें। फिर मावे को तीन हिस्सों में बांट लें। मावे के एक हिस्से में हरा रंग, एक हिस्सा बिना रंग का सफेद रखें, एक हिस्से में केसरिया रंग और थोड़ा केसर मिलाएं। अब एक थाली में घी लगाएं और थाली में सबसे पहले हरे रंग के मावे की परत बिछाएं। फिर सफेद मावा और सबसे ऊपर केसरिया रंग के मावे की परत बिछाएं। बाद में मावे पर ऊपर से बादाम और पिस्ता डालकर ठंडा होने के लिए रख दें। फिर चांदी का वर्क लगाकर मनचाहे आकार में तिरंगी बर्फी काटकर पेश करें।

पुनम राठी, नागपुर
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

आम बजट री महिमा

खम्मा घणी सा हुक्म हर साल री तरह इण बार भी बजट संसद में पेश हुयो... टीवी पर बजट भाषण रो नाम सुनते ही या बात दिमाग में आई कि बजट एक ऐड़ों बादल है जो आसमान सूं बरसे जरूर है पर जमीं पर आता आता सुख जावें ।

हुक्म म्हने लागे बजट ने आम बजट इण वास्ते भी केवता हुवेला कि फलों रो राजा **आम** री जावती सीज़न में बजट आवे जणे इण सीज़न रा अल्फांसो,हापुस आम सब खत्म हूँ जावे और दशहरा, लगड़ा, आम जिनी मार्केट में आम जनता उड़िक जोहवे ... क्योकि आम बजट रो असर नेताओं धनपतियों पर कोई नहीं पड़े वे पेट पेला ही भरले पर गरीब री नजर हर साल बजट पर रहवे।

हर साल आपा देखा संसद रे बाहर वित्तमंत्री मीडियाकर्मियों ने 'ब्रीफ' करण रे बाद 'ब्रीफकेस' ने संसद में लावे बाद में बजट री हर योजना ने **ब्रीफ** में समझावे ।

अक्सर आपा देखा हुक्म वित्तमंत्री बजट रो भाषण देवता इतो 'पाणी' पी जावे की बजट में 'पानी बचाओ योजना' पर लिखियोड़ी बचावण की योजना ने फेल कर देवे... कुछ वित्तमंत्री तो भाषण ने सरकार री तरह बोझिल होवण सूं बचावण वास्ते कविता और शेरों शायरी रो सहारो भी लेवे ताकि आम बजट रे भाषण री शर्मिंदगी सूं बच सके ।

इण बार वित्तमंत्री निर्मला जी सीतारमण बजट ब्रीफकेस में नही कपड़े में लपेट ने लाई ... हुक्म मोदी सरकार री या ही तो विशेषता है हमेशा **'प्रजेंटेशन'** कुछ हट ने ही करें ... अब हुक्म बजट सुणने समझण की कोशिश भी करी तो दो कोंग्रेसी बयान सामने आया एक कहयो 'बजट में कुछ नहीं है'। दुसरो केवे कि 'सिर्फ कोंग्रेसी नीतियों ने दोहरायों है'। आम बजट री या खास बात हुवे हुक्म कि आपा इण बजट ने आम लोगो री नजर सूं नहीं सिर्फ महंगा-सस्ता री नजर सूं समझ सका।

बजट में कुछ नहीं हुवे पेली बजट में गांधी- नेहरू परिवार रे नाम दो चार नई योजना शुरू कर देवता। इण बार गांधी-नेहरू निकाल **'अटल नवोन्मेष योजना'** **'अटल पेंशन योजना'** जेड़ा नाम सुनाई दे रिया है। हुक्म इण बार प्रतियोगी परीक्षा री तैयारी में युवाओं ने एक नंबर रो नयो सवाल मिल जाई ।

आज सरकार री भृष्ट नीतियों ने देखा तो महाभारत में भीष्म री बात याद आवे भीष्म केवता कि 'कर यूँ लगाणों चइजे ज्यों सूरज तलाब, नदियां समुद्र सुं पाणी लेवे और उठे बरसावे जठे ज़रूरत व्हे। देवण वाले ने महसूस नहीं व्हे अर पहुँचनो जठे पहुंच भी जावे'।

म्हे तो आपने बजटनामों देख ने या ही केवणों चाहूँ कि हुक्म बजट रो सामनो करणी सीखो इने साँप समझ ने मत डरो। घर रो बजट भी योजनाबद्ध होते हुवे फेल हूँ जावे यो तो देश रो बजट है इन्हें मेहमान समझ ने स्वीकार करो क्योंकि इन दुख ने लेने मर तो कोनी सका ....

दुनियां में आया तो दोस्तों जीवणों पड़ी
बजट अगर जहर भी है तो पिवणों पड़ी

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

मेरी बुराई, ज़रा सँभलकर करना,
तुम्हारे अपनों में, कुछ मेरे भी शामिल है,
मुद्दतों बाद आज फिर परेशान हुआ है ये दिल।
ना जाने किस हाल में होंगे मुझे भूलने वाले।।
चार दोस्त, दो साइकिलें खाली जेब और पूरा शहर,
जनाब हमारा एक खूबसूरत दौर ये भी था जिंदगी का
जो महसूस करते है वही बयां कर देते है अक्सर,
हमसे तो लफ्जों की दगाबाजीया भी नहीं होती है।
नजरों में उतर गई है कयामत की शोखियां...
दो चार दिन रहे थे हम किसी की निगाह में...
ये कब चाहा कि मैं मशहूर हो जाऊँ..
बस अपने आप को मंजूर हो जाऊँ..!
नसीहत कर रही है अक्कू कब से..
कि मैं दीवानगी से दूर हो जाऊँ..!
न बोलूँ सच तो कैसा आईना मैं..
जो बोलूँ सच तो चकना-चूर हो जाऊँ..!
है मेरे हाथ में जब हाथ तेरा..
अजब क्या है जो मैं मग़रूर हो जाऊँ..

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिये धन लाभ, खुशी, संतान सुख, साझेदारी में लाभ देगा। मन प्रसन्न, अपने प्रयास से कार्य पूरे कर लेंगे किंतु वाणी पर नियंत्रण रखें। शारीरिक कष्ट रहेगा। भाइयों से विवाद, व्यय अधिक होगा। जल्दबाजी में कार्य न करें। क्रोध के कारण हानि भी उठाना पड़ेगी। मनोविनोद के लिये सपरिवार यात्रा करेंगे। दाम्पत्य जीवन में वैचारिक मतान्तर बने रहेंगे। व्यापारिक उन्नति होगी। आय की तुलना में व्यय अधिक होगा। मित्रों से लाभ होगा।

वृषभ

इस माह नये संबंधों के कारण भविष्य के अवसर दिखेंगे। दूरदर्शिता काम आयेगी। नये कार्य की सोचेंगे। विद्यार्थी वर्ग अपने लक्ष्य की प्राप्ति करेंगे। शुभ कार्यों पर धन व्यय होगा। संतान की उन्नति से मन प्रसन्न होगा। शुभ समाचार यात्रा से लाभ होगा। माता-पिता को शारीरिक कष्ट, वाहन पर खर्च अधिक होगा। मित्रों से विवाद शत्रु से परेशानी होगी सतर्क रहें। पत्राचार से लाभ जीवन में कई उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। अपनो से लाभ किन्तु परायों से धोखा मिलेगा।

मिथुन

इस माह विदेश प्रवास के अवसर, मान सम्मान बढ़ेगा। अपनो का सहयोग, घर में शुभ कार्य करेंगे। पिता से लाभ, राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। सुखों में वृद्धि होगी। उन्नति के शुभ अवसर प्राप्त होंगे। विपरित योनी की ओर रुझान रहेगा किन्तु आलस्य को त्याग किसी पर भी एकदम विश्वास न करें। लॉटरी सट्टा एवं शौर्य में हानि उठना पड़ेगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। परिवार के विवादों से दूर रहे। कोई भी निर्णय लें सोच-समझकर लें। भागदौड़ अधिक होगी। संतान सुख प्राप्त होगा। कोई विशेष मनोकामना पूर्ण होगी।

कर्क

इस माह संतान की उन्नति व शिक्षा में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। सुख-सुविधा के साधन बढ़ेंगे। नये संपर्क का लाभ जीवन साथी का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। माता से लाभ जल्दबाजी एवं विवाद से दूर रहे। धन के मामले में सचेत रहें। नौकरी में ट्रांसफर के कारण परेशानी रहेगी। मित्रों से धोखा मिलेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। सरकारी कार्यों से लाभ होगा। घर में सुख, खुशी का माहौल रहेगा।

सिंह

यह माह आपके लिये सामान्य व्यतीत होगा। कार्य में विलम्ब, स्वास्थ्य खराब रहेगा। अपनो से असहयोग, नौकरी में परेशानी किन्तु संतान की उन्नति से खुशी होगी। व्यापार में लाभ, सम्मान, यश से मन प्रसन्न दैनिक कार्य में अनुकूलता एवं उन्नति पथ पर आगे बढ़ेंगे। रुके कार्य पूरे होंगे। साझेदारी से लाभ शत्रु परास्त होंगे। पिता से विवाद तथा जीवन साथी को कष्ट से परेशान होंगे। खर्च की अधिकता रहेगी सहेत के प्रति सावधान रहें।

कन्या

इस माह बिगड़े कार्य पूर्ण होंगे। मेहमान आने से वातावरण में खुशी मिलेगी। विद्यार्थियों के लिये समय अनुकूल है। मान-सम्मान बढ़ेगा। मित्रों के सहयोग से धन लाभ परिवार में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। सबका सहयोग प्राप्त होगा। जीवन साथी का पूरा साथ रहेगा। व्यर्थ के विवाद से बचे नौकरी में असुविधा व परेशानी उठना पड़ेगी। जोड़ों का दर्द रहेगा। बनते कार्य क्रोध के कारण बिगाड़ लेंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य करेंगे।

तुला

इस माह मान-सम्मान में वृद्धि उच्चधिकारियों से मुलाकात, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। संतान के कार्यों पर गर्व करेंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। आवास परिवर्तन की संभावना रहेगी। विद्यार्थियों के लिये समय अनुकूल है। वाहन बदलने की सोचेंगे। आय की तुलना में खर्च अधिक होगा। लॉटरी, सट्टा व शेयर्स में हानि होगी। परिवार में सुख-शांति का माहौल रहेगा। नये प्रेम संबंध बनेंगे। बिगड़े व अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। शत्रु परेशान करेंगे। चोटादि के योग, माता की चिंता रहेगी।

वृश्चिक

इस माह आपके यहां मांगलिक कार्य होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि, मन प्रसन्न, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भाग लेंगे। शुभ समाचार मिलेगा। भाइयों का सहयोग उत्तरदायित्व बढ़ेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। वाद-विवाद से दूर रहें वरना बनते कार्य बिगड़ जायेंगे। भाग दौड़ अधिक होगी। जीवन साथी से वैचारिक मतान्तर बने रहेंगे। लेन-देन सोच समझकर करें। मानसिक तनाव बढ़ेगा। कर्ज लेना पड़ेगा। नये कार्य प्रारंभ करेंगे। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

धनु

इस माह आपको सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी मांगलिक कार्य, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में भाग लेंगे। नई योजना पर कार्य करेंगे। बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। स्थानांतरण का भय, अपने सहयोग करेंगे। कार्य की गति अनुकूल रहेगी। रचनात्मक कार्यों में बाधा पहुंचेगी। माता को कष्ट शत्रु से परेशानी, हानि होगी। व्यर्थ के विवाद से मन परेशान रहेगा। यात्रा लाभ प्रद रहेगी। प्रेम में निराशा मिलेगी। क्रोध से बनते कार्य बिगाड़ लेंगे। जीवन साथी से अनबन रहेगी।

मकर

यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। न्यायालयीन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। लाभ होने से प्रसन्न होंगे। विशेष अभिलाषा पूर्ण होगी। अतिथि आने से व्यस्तता बढ़ेगी। पारिवारिक सुख में वृद्धि मन प्रसन्न भौतिक सुख-सुविधा, मकान में बढ़ोत्तरी होगी। रुके कार्य पूरे होंगे। नौकरी में परेशानियाँ बढ़ेगी। व्यापार स्थाई रहेगा। प्रेम में असफलता मिलेगी। वाद-विवाद से बचे। व्यय की अधिकता से मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य नरम-गरम बना रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। खुशी का माहौल रहेगा। समय अनुकूल है।

कुम्भ

इस माह आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। शुभ समाचार मिलेंगे। संतान के कार्यों से मन प्रसन्न होगा। नौकरी में पदोन्नति, नये अवसर मिलेंगे। मेहमानों के आने से प्रसन्न, अधिकारियों के सहयोग से काम बन जायेंगे। नये संपर्कों का लाभ होगा। वाहन क्रय-विक्रय करेंगे। पारिवारिक जीवन मधुर रहेगा। विपरित योनी की ओर अधिक रुझान बना रहेगा। क्रोध एवं विवाद से दूर रहें। व्यर्थ का खर्च होगा। शत्रु से परेशानी बनी रहेगी। शरीर से अस्वस्थ रहेंगे। लंबी यात्रा के अवसर बनेंगे। माता-पिता से विवाद होगा।

मीन

इस माह नये लोगों से भेंट, बौद्धिक कार्यों में लाभ, अधिकारियों का सहयोग, व्यापार में सुधार होगा। उन्नति के अवसर, आय बढ़ेगी। न्यायालयीन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। दूरदर्शिता एवं त्वरित निर्णय लेंगे। मकान खरीदेंगे। जीवन साथी से वैचारिक मतान्तर रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। व्यस्तता अधिक रहेगी। झूठा आरोप लगेगा। संतान के कार्य पूरे होंगे। सरकार से धन व मान सम्मान मिल सकता है। दिनचर्या यथावत रहेगी।

श्रद्धांजलि

श्रीमती चांदबाई सोनी

भीलवाड़ा. आरसी व्यास कॉलोनी निवासी बालमुकुंद, पवनकुमार सोनी की माता श्रीमती चांदबाई सोनी धर्मपत्नी श्री श्यामलाल सोनी का देवलोक गमन गत 27 जून को हो गया है। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्री गेंदीलाल मालू

ग्वालियर. माहेश्वरी मित्र मंडल ग्वालियर के मार्गदर्शक एवं बिड़ला नगर माहेश्वरी समाज के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गेंदीलाल मालू का स्वर्गवास गत 29 जून को हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती कैलाशबाई मंडोवरा

बूंदी. समाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती कैलाशबाई मंडोवरा का गत 7 जुलाई को हृदयाघात से देहावसान हो गया। उनके पुत्र पूर्व पार्षद मनोज मंडोवरा, जगदीश मंडोवरा व भगवान मंडोवरा ने उनके नेत्रदान करवाकर परोपकार का संदेश दिया। महासभा के पूर्व कार्यकारी मंडल सदस्य संजय लाठी ने बताया कि श्रद्धांजलि सभा में श्री महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. व शाइन इंडिया फाउंडेशन, कोटा की ओर से नेत्रदानी के परिजनों को सम्मान पत्र प्रदान किया गया।

श्रीमती गंगादेवी माहेश्वरी

सनावद. माहेश्वरी महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती गंगादेवी माहेश्वरी का 87 वर्ष की अवस्था में गत दिनों निधन हो गया। आप समाजसेवी श्याम माहेश्वरी (महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य), ओम माहेश्वरी और अनिल माहेश्वरी की माता थीं। उनकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए।

नारी शक्ति यज्ञ

आभार

सामिधा

"एक शक्ति यज्ञ"
उज्जवल भविष्य के लिए

इस आयोजन में पधारे सभी अतिथिगण
सभी सहयोगीगण
महिला संगठन के सभी पदाधिकारी
एवं सभी सम्माननीय सदस्यगण,
जिनकी उपस्थिति से यह आयोजन
गरिमापूर्ण सम्पन्न हुआ

कल्पना गगड़ानी
अध्यक्ष

आशा माहेश्वरी
सचिव

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

किरण लढ़ा
अध्यक्ष

श्यामा भांगड़िया
सचिव

दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

अब फिर आएंगे रिश्ते आपके द्वार

'श्री माहेश्वरी मेलापक'

विवाह योग्य युवक-युवतियों की अन्तर्राष्ट्रीय डायरेक्ट्री

जिसमें मिलेंगे आपको आपके अनुरुप
प्रोफेशनल व हाईटेक बॉयोडेटा
वर्ष 2019 के अंक के लिए पंजीयन प्रारंभ
बेटियों के पंजीयन निःशुल्क

श्री माहेश्वरी मेलापक

बायोडॉटा आज ही मेल करें -
srimaheshwarimelapak@gmail.com

94248-44161

श्री माहेश्वरी मेलापक ९०, विद्या नगर, उज्जैन (म.प्र.)

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल
स्थापना : १९२९

CELEBRATING 90 YEARS
1929 - 2019

Applications are invited for

MVPM's Maheshwari Scholar - 2019

A Tribute to Academic Excellence

The Award - Honouring the Best of the Best

- A Gold Medal worth Rs 50,000 to Maheshwari Scholars and a certificate of merit.
- A Gold Medal worth Rs. 25,000 to Promising Maheshwari Scholars and a certificate of merit.

Who is eligible?

- **Maheshwari students who have completed or are likely to complete their course between 1st October 2018 & 30th September 2019 from following disciplines:**
  - BE / B. Tech / B. Arch / ME / M.Tech / M.Arch / MCA
  - BDS / MBBS / MDS / MD / MS / M.Ch / DM
  - PGDM / MBA
  - CA / ICWA / CS / CFA
  - Ph.D (any discipline)
- Exceptional students with outstanding academic records from other disciplines may also be considered by the management.
- **Maheshwari** Candidates who have qualified for Civil Services (UPSC) examinations & have been selected for appointment, can also apply.

Awardee Selection Process - Encapsulate the Glorious Triumphs

- The scholars are supposed to have consistently outstanding academic credentials & are selected through a rigorous selection process carried out by an eminent jury.

How to apply?

- Download the Application Form from Scholar Website www.maheshwarischolar.org & send a hard as well as soft copy to MVPM office **latest by 30th November 2019.**

Glimpses of Our Past Awardee

Ph.Ds : **USA** (Georgia Institute of Technology, Massachusetts University, Missouri University of Science & Technology, Stanford University), **France** (INSEAD)	15
Civil Services : IPS, IRS	05
Management : IIM-Ahmedabad, IIM-Bengaluru, XLRI-Jamshedpur, IIM-Indore	09
Medicine : DM, M.Ch, MD, MS, MBBS	18
Humanities : Cambridge University, London School of Economics & Political Science, New York University	03
Engineering : IITs, BITS-Pilani, IIIT-Hyderabad, COEP, Georgia Institute of Technology, Massachusetts University, Washington University	21
Finance : CA, CS (All India Rankers)	13

Above Institutes are given for reference only. Students with good track record from all reputed Institutes are encouraged to apply.

Address for Correspondence
1099/A, Model Colony, Pune 411016, India. **Tel. :** 020 2567 1090 / 91 **E-mail:** scholar@mvpm.org **Web:** www.maheshwarischolar.org

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 August 2019

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com